नित्यक्रियापद्धति

प्रथमभाग

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरून् वैष्णवांश्च
श्रीरूपं साग्रजातं सहगणरघुनाथान्वितं तं सजीवम्।
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्यदेवं
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगणललितान् श्रीविशाखान्वितांश्च॥

❁ स्वप्नविलासः ❁

प्रिय स्वप्ने दृष्टा सरिदिनसुतेवात्र पुलिनं
यथा वृन्दारण्ये नटनपटवस्तत्र वहवः।
मृदंगाद्यं वाद्यं विविधमिह कश्चिद्द्विजमणिः
सविद्युद्गौरांगो क्षिपति जगतीं प्रेमजलधौ॥१॥

(१)—नदी कालिन्दी सी तट सपन में देखत रही।
तहां बृन्दारण्य निरत चतुराई बहुत ही।
मृदंगादी बाजें, कोउ तडित-गोरे द्विजमणी,-
डुबाये हैं देते जगत निज प्रेमाब्धि सरणी॥

कदाचित्कृष्णेति प्रलपति रुदन्कर्हिचिदसौ
क्व राधे हा हेति स्वसिति पतति प्रोज्झति धृतिं।
नटत्युल्लासेन क्वचिदपि गणैःस्वैर्प्रणयिभि
स्तृणादिब्रह्मान्तं जगदतितरां रोदयति सः॥२॥

(२—कबौं हा, कृष्णेति विलपत करैं रोदन महा,
कहाँ राधे? हा! हा! कह गिरत छांड़े धृति रहा।
कबौं नाचैं प्रेमी परिजन लिये रंग रस में,
तृणादि ब्रह्मालौं जगतहिं रुवावैं विरह मे॥

ततो बुद्धिर्भ्रान्ता मम समजनि प्रेदय किमहो
भवेत्सोऽयं कान्तः किमयमहमेवास्मि न परः।
अहं चेत् क प्रेयान्मम स किल चेत् कहमिति मे
भ्रमो भूयो भूयानभवदथ निद्रां गतवतां ॥३॥

(३)—भयो मेरी बुद्धि भ्रम निरख ये कौतुक कहा,
अहो, ये हैं प्यारे, स्वयमहिं किधौं हौं पर-कहां?
यदी हौं तो, प्रेमी हरि कहां- वे यदि अहीं,
कहां हौं मैं ऐसें भ्रमनि परि पुनि निद्रित रही॥

प्रिये दृष्ट्वा तास्ताः कुतुकिनि मया दर्शितचरी
रमेशाद्या मूर्त्तिर्न खलु भवती विस्मयमगात्।
कथं विप्रो विस्मापयतुमशकत्त्वां तव कथं
तथा भ्रान्तिर्धत्ते सहि भवति को हन्त किमिदम् ॥

(४)—हरी बोले प्यारी कुतुकिनि लखीं आपु कितनी
रमेशादी मूर्ती मम, नहिं भई विस्मित घनी।
किधौं ऐसे विप्रै निरखि मन विस्मै सकत है,
तथा भ्रान्ती आई वह यह नहीं को यह अहै? ॥

इति प्रोच्य प्रेष्ठां क्षणमथ परामृश्य रमणो
रसज्ञाकूतज्ञं व्यनुददय तं कौस्तुभमणिं।

तथा दीप्तीं तेने सपदि स यथा दृष्टमिति तद्
विलासानां लक्ष्म स्थिरचरगणैः सर्वमभवत् ॥५॥

(५)—तवै अन्तर्यामी हरि कछु हँसे सोच करनी,
कहै यों प्यारे नै समुदित करी कौस्तुभ मनी।
भयी ऐसी कान्ती सपन मँह लीला जस घटी,
विलासौं की सोभा थिरचर विसै पूर्ण प्रघटी॥

विभाव्याथ प्रोचे प्रियतम मया ज्ञातमखिलं
तवाकूतं यच्चं स्मितमतनुथास्तत्वमसि माम्।
स्फुट यज्ञावादी यदभिमतिरत्राप्यहमिति
स्फुरन्ती मे तस्मादहमपि स एवेत्यनुमिमे ॥६॥

(६)—तवै राधा बोलीं मन गुनि हरे प्रीतम अहो,
अवै जानी-मंद स्मित कियौ "गौर" तुमहो।
करी ना जो वार्ता प्रगट मम आभास लखिकैं,
लसै मेरी कान्ती अब सहज लीन्ही निरखिकैं॥

यदप्यस्माकीनं रतिपदमिदं कौस्तुभमणिं
प्रदीप्यात्रैवादीदृशदखिलजीवानपि भवान्।
स्वशक्त्याविर्भूय स्वमखिलविलासं प्रतिजनं
निगद्य प्रेमाब्धौ पुनरपि तदा धास्यसि जगत् ॥७॥

(७)—हमारी जो प्यारी रति पद अहै कौस्तुभ मनी,
अनौखी दीसी में निपट प्रगटे जीव धरनी।
स्वयं शक्ती धारी अवतरि रसोत्कंठि जन में,
अनौखे, प्रेमाब्धी लहर लहरावौ भुवन में॥

श्रुतिविदा

यदुक्तं गर्गेण व्रजपतिसमक्षं

भवेत्पीतो वर्णः क्वचिदपि तवैतन्नहि मृषा ।

अतः स्वप्नः सत्यो मम च न तदा भ्रान्तिरभव

त्त्वमेवासौ साक्षादिह यदनुभूतोऽसि तदतम् ॥८॥

(८)--कही जो है वानी गरग मुनि ने गोप पति सों,
''कवौं ये ही पीरे बरन प्रगटैं शान्त मति सौं''
अतः साँचौ स्वप्नौ मम मन भयौ है भ्रम नहीं
तुम्हीं हौ ये साक्षात् सकल अनुभूती मम सही ॥

पिवेद्यस्य स्वप्नामृतमिदमहो चित्तमधुपः

स सन्देहस्वप्नात्त्वरितमिह जागर्ति सुमतिः

अवाप्तश्चैतन्यं प्रणयजलधौ खेलति यतो

भृशं धत्ते तस्मिन्नतुलकरुणां कुञ्जनृपतौ ॥९॥

(९)--पियै कोई प्रेमी मन मधुप प्रेमामृत यहै.
मनों से संदेह स्वपन तजि जगै मति लहै ।
वहै श्री चैतन्य-प्रणय जलधी की लहर में,
कृपा पावै कुंजेश्वर-विमल राधाधु वर में ॥

इति श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ती विरचित

स्वप्नविलासः समाप्तः

अनुवादक हरिकृष्ण कमलेश

श्रीराधामाधवो जयति ।

श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्राय नमोनमः ।

श्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभु की
बारहखड़ी महिमा

कका-कलियुग आयो जान के नवद्वीप निजधाम ।
प्रगटे धरि गौरांग वपु सुन्दर श्री घनश्याम ॥ १ ॥
खखा-खान पान और विषयप्रिय देख सकल संसार ।
करुणासिंधु महाप्रभू कीनौ भक्ति प्रचार ॥ २
गगा-गौड़ देश पावन कियौ धरि गौरांग स्वरूप ।
उद्धारे हरि ने पतित परे हते भव कूप ॥ ३ ॥
घघा-घर २ कीर्तन कृष्ण को करि २ पावन कीन ।
बाल वृद्ध वनिता सबहि करे प्रेम रस लीन । ४ ॥
नना-नाहक जन्म उमाउ मति करि लै हरिसों नेह ।
बार बार नहिं बावरे पावैगो नर देह ॥ ५ ॥
चचा-चरण भजौ चैतन्य के जो सुख चाहौ चित्त ।
रसिकन के जीवन वुही प्राण बरोबर वित्त ॥ ६ ॥
छछा-छाँड़ि सकल दुर्वासना भजि लीजै चैतन्य ।
ज्ञान योग सब भोग तजि कीजै भक्ति अनन्य ॥ ७ ॥
जजा-जो हरि बृन्दा विपिन में नाचे गोपिन सङ्ग ।
सोई अब सन्यास धरि सिखवत हैं सत्सङ्ग ॥ ८ ॥
झझा-झाँझ मृदङ्ग बजावहीं भक्त यूथ चहुँ ओर ।
'हरे कृष्ण गोविंद' कहि निर्तत गौर किशोर ॥ ९ ॥
ञञा-नित नवीन यह माधुरी मगन रहो मन मोर ।
पड़त रहे इन कान में गौर नाम कौ शोर ॥१०॥

टटा-टूक टूक की गूदड़ी गौर चरण अनुराग।
बड़े भाग्य तें पाइयें बिषयन सों बैराग ॥११॥
ठठा-ठाकुर नाहिन दूसरौ श्री चैतन्य समान।
जो निज भक्तन देत हैं प्रेम भक्ति को दान ॥१२॥
डडा-डारि भार संसार को धरि सन्यासी भेष।
उद्धारौ हरिनाम तैं सब बङ्गालो देश ॥१३॥
ढढा-ढाइ दिये नाना कुमति करि हरिनाम प्रहार।
नवद्वीप निज धाम में कीनो नित्य बिहार ॥१४॥
नना-निंदक पापी पतित अति दुष्टन के सिरमौर।
ते गौरांग प्रताप ते भये और से और ॥१५॥
तता-तारे पतित अनेक प्रभु को करि सके बखान।
कठिन कुलिश पाषान सों भये प्रेम रस खान ॥१६॥
थथा-थोरे कौं मानत बहुत माथे लेत चढ़ाय।
ऐसे हरि कों बाबरे क्यों न भजे चितलाइ ॥१७॥
ददा-दास होहु चैतन्य के लेउ गौर यह नाम।
तो निश्चय कर पाइये अन्त समय निज धाम ॥१८॥
धधा-धीरज धर मन बाबरे काहे कूं अकुलाय।
मोसे कितने पतित प्रभु दीने पार लगाय ॥१९॥
नना-नास किये नाना कुमति प्रगट करी रस रीत।
एसे हरि की बावरे क्यों न करै परतीत ॥२०॥
पपा-प्रगट न होते जो कहूं गौर चन्द्र भगवान।
तो कलियुग के जनन कौं क्यों होतो कल्याण ॥२१॥
फफा-फार्यो जिन हरिणाकशिपु रावण डार्यो मार।
कंस पछार्यो छिनक में सोई शची कुमार ॥२२॥
बबा-बढ्यो चहुँदिश प्रेम प्रभु किये अनाथ सनाथ।
जबते प्रघटे गौर हरि भक्त बृन्द ले साथ ॥२३॥

भभा-भाल तिलक माला गले नैन प्रेम जलपूर।
करुणासिंधु महा प्रभू मेरी जीवन मूर ॥२४॥
ममा-मारि मारि जेले असुर कृष्ण किये उद्धार।
भक्ति दान दे गौर हरि ते सब कीये पार ॥२५॥
यया-जन्म लियौ नदिया नगर जगन्नाथ द्विज गेह।
भक्तन ते गौरांग प्रभु कीनौ अधिक सनेह ॥२६॥
ररा-रूप सनातन आदि लै हरि के भक्त अनंत।
जिन वृन्दावन माधुरी प्रगट करी रसवन्त ॥२७॥
लला-लाजत जाकौ बदन लखि कोटि शरद के चंद।
करुणासिन्धु महा प्रभो काटो सब दुख द्वन्द ॥२८॥
ववा-वह बांकी चितवन बसी झाँकी परम रसाल।
राह चलत हूँ जिन करी ते हू भये निहाल ॥२९॥
शशा-शची तनय बिन कौन जग ऐसौ परम दयाल।
शरण लेत ही देत हैं प्रेम भक्ति ततकाल ॥३०॥
षषा-षड् भुज धरि दर्शन दियो जगन्नाथ में नाथ।
धनुषबाण वंशी लई दण्ड कमण्डलु हाथ ॥३१॥
ससा-साधुन की लै मंडली करि कीर्तन तिंह बीच।
उद्धारौ हरि ने पतित काजी सौ अति नीच ॥३२॥
हहा-हरी हरी हरि को यही घरी घरी नित खेल।
हरी करी पाषण्ड ते जरी भक्ति की बैल ॥३३॥
प्रेम भरी हरिने करी कृपादृष्टि की कोर।
हरी खरी बारा खड़ी 'रस निधि' "नंदकिशोर" ३४॥
लीला यह चैतन्य की गावैगो जो कोइ।
रूप प्रेम रस माधुरी हृदय प्रकाशित होइ ॥३५॥
इति श्री जयदेव वंशावतंस श्रीनन्दकिशोर चन्द्र गोस्वामि
प्रभुकृत बारहखड़ी समाप्तम्।

❀ श्रीकृष्ण अष्टोत्तरशत नाम माला ❀

—:❀०❀०❀:—

जय गोविन्द गोपाल जय जयति गदा धर नाथ।
कृष्णचन्द्र की जै कृपा करुणामय गुण-गाथ॥
जय गोविन्द गोपाल जय वनमाली व्रजचन्द।
श्री राधा के प्राण धन देव मुरारि मुकुन्द॥
गोविंद गुण गाये नहीं किये न हरि के काम।
दिन दिन मानस को जनम वीत गयो वेकाम॥
मिथ्या काजन में दिवस रैन बिताई सोय।
भजे न राधा कृष्ण पद पछि तापे कहा होय॥
कृष्ण भजन हित जीव तू आयौ या संसार।
जनम बितायौ वृक्ष सम मिथ्या माया धार॥
फल रूपो कन्या सुवन डारन सों टपकाय।
काल रूप जग में बसै पंछी सम दरसाय॥
कृष्णचन्द्र लीयो जनम मात देवकी गोद।
सुमन वृष्टि देवन करी मथुरा छयो प्रमोद॥
राखि चले वसुदेव जी नन्दराय के गेह।
गोकुल में श्री लालजू बाढ़े सहित सनेह॥
राख्यौ बाबा नन्द ने नन्द—नन्दन वर नाम।
जसुदा राख्यौ मुदित मन जदु-वाञ्छा-धन नाम॥
नाम धरयौ उपनन्दजू सुन्दर श्री गोपाल।
धरयौ नाम व्रज बालकन ठाकुर व्रज गोपाल॥
सुबल सखा राख्यौ हरषि ठाकुर कान्हां नाम।
श्री दामा राख्यौ सुखद गोपन राजा नाम॥
व्रज गोपीगण मिल धरयौ नवनी चोरा नाम।
धरयौ विनोदिनि राधिका कालो-सोहना नाम॥

कुब्जा अलबेली धरयो पतित पावन हरि नाम।
वंशीधर-मोहन धरयौ चन्द्रावलि अभिराम॥
अन्त न पायो शेष तव नाम अनन्त बखान।
कृष्ण नाम मुनि गर्ग जू धरयो ध्यान में जान॥
वनकी हिरनीगन धरयौ वनमाली सुललाम।
राख्यौ श्री गजराजने श्री मधुसूदन नाम॥
भक्त अजामिल ने धरयौ नारायण सुख धाम।
देव चक्र पाणी धरयौ मुनि अगस्त ने नाम॥
धरयौ पुरन्दर ने सुभग श्री गोविन्द विचार।
दीन बन्धु यह द्रौपदी लियौ हिये में धार॥
विप्र सुदामा ने धरयौ दारिद-भंजन नाम।
व्रज वासिन राख्यौ हरषि व्रज-जीवन, सुख धाम॥
दर्प-दलन अर्जुन सखा धरयौ हरी को नाम।
गरुड़ देव राख्यौ मुदित पशुपति पूरण काम॥
नाम युधिष्ठिर नै धरयौ यदुवर देव ललाम।
दीनन को ठाकुर कह्यौ भक्त विदुर सुखधाम॥
बासुकि राख्यौ हरषि हिय नाम क्षिति-स्थिति देव।
ध्रुव बालक ध्रुव-सारथी नाम धरयो लखिभेव॥
भक्त-प्राण-धन कहि लियौ नारद मुनि हिय धार।
लक्ष्मी नारायण कह्यौ भीष्म देव निरधार॥
देवी सतभामा धरयौ सत्य-सारथी नाम।
जाम्बवती योधापती राख्यौ नाम ललाम॥
विश्वामित्र मुनि नै कह्यौ जग जीवन सुविचार।
गौतम—ऋषि पत्नी धरयौ नाम पाषाण-उधार॥
जग—हितकारी यह धरयौ भृगु मुनि सांचौ नाम।
पंच मुखन गायौ मुदित त्रिपुरारी श्रीराम॥

दानी बलि-राजा धरयौ कुञ्ज-केलि सुख सार।
धरयौ नाम प्रह्लादजी श्री नरसिंह मुरारि॥
दैत्य-दलन दारिद-हरन देव द्वारका वीर।
द्रुपद सुता की लाज हित कियौ चीर प्राचीर॥
चिन्मय सत्य स्वरूप सो राजत श्री गोलोक।
रमा-रमण वैकुण्ठ पति श्री वैकुंठ विशोक॥
वासुदेव, प्रद्युम्न, बल चतुर्व्यूह अनिरुद्ध॥
पुण्य-प्रभा पूरण-पुरुष प्रघटे रूप विशुद्ध॥
बामन वपु धरि बलि छल्यौ थंभ नरहरी रूप।
मत्स्य कूर्म बाराह वपु धारे अमित अनूप।
क्षीरोदक शायी हरी अरु गर्भोद विहारि।
कारण सागर शक्तिमय मायामय संसारि॥
गोपवेष धरि हरि करत लीला ललित ललाम।
कुंज-मंजु जमुना पुलिन श्री बृन्दावन धाम॥
यह लीला कह लाल को शेष न पायौ अन्त।
धाम धाम धायौ सुजस छायौ दिव्य दिगन्त॥
बाल विनाशिनि पूतना दयी मातु गति लाल।
ऐसौ देव न दूसरौ देख्यौ दीन—दयाल॥
तीन बरस के बाल वपु दीन शकट उलराय।
तृणावर्त केशी बका धेनुक अघ विनसाय॥
ब्रह्मा मन मोहन कियो हरे बच्छ गोपाल।
गिरि गोवर्धन धार किय यमलार्जुन उद्धार॥
कालिय बिष धर की विषम फैलत फन फुंकार।
ताण्डव पण्डित करत तहँ निर्भय-निरत अपार॥
यमुना कूल कदम्ब बन मधुर मुरलिया गाय।
चोरत गोपीगन वसन रास रसिक हरिराय॥

दर्प हरत देवेन्द्र को कुब्जा मन-बस लाय।
करत कंस चाणूर वध श्री अक्रूर सहाय॥
नव-नीरद-छवि धर मधुर-गोप वेष परमेश।
मोर मुकुट वन माल धरि हरि विहरत व्रज देश॥
पीत-वसन श्रीवत्स उर कर-धर वेणु—रसाल।
गो गोपी गोपाल गण राजत मदन गोपाल॥
मदन मोहन विहरत विमल बृन्दा विपिन मँझार।
राजत मधुपुर में सुघर श्री यदुराज कुमार॥
सतभामा के प्राणपति रुक्मिणि रमण सुधीर।
काल प्रवल शिशुपाल के, पिता प्रद्युम्न वीर॥
धन्य द्वारका की प्रजा जिन सर्वस पितु मात।
भक्त वछल त्रिभुवन धनी अखिल लोक के नाथ॥
दन्तवक्र-अरि शाल्व उर-सालन श्री यदुराय।
महिषी-मोहन प्रेम धन साधुन सदा सहाय॥
विदुर सरलता पै बिके बने पार्थ के मीत।
धरा भार हारन धरम थापन नीत पुनीत॥
भीषम के आराध्य प्रभु त्रिभुवन विभु सुरनाथ।
मुनि जन गति दाता सदय, योगि ध्येय पद पाथ॥
राधापति रसमय रसिक नागर नवल अनूप।
कुसुमित कुंज बिहारि हरि जलधर श्यामल-रूप॥
दामोदर श्रीधर मधुर श्रीपति शालग्राम।
तारक ब्रह्म सनातन पूर्ण पुरुष घनश्याम॥
कृपा-कल्पतरु कमल-दल-लोचन श्रीहृषिकेश।
पतित-पावन गुरु ज्ञान गुण दाता सत उपदेश॥
चक्रपाणि, चिन्ता मणि चारु-चतुर्भुज-धारि।
दीनबन्धु यदु कुल तिलक, देवकि-सुवन मुरारि॥

कृष्ण नाम, लीला, चरित. महिमा, रूप अनन्त।
व्यास देव नारद सरिस मुनिहुँ न पायौ अन्त॥
भजहु नाम, चिन्तन मनन कीजै नामहिं सार।
कृष्ण नाम कौ अन्त ना, महिमा अमित अपार॥
सुवरन के सत भार अरु कोटिन कन्या दान।
सत गोदानहुँ होय ना कृष्ण नाम सम जान॥
जोय नाम सोइ कृष्ण है निष्ठा करि भज देख।
सङ्ग विराजै नाम के श्री हरि निहचैं लेख॥
पतित पावन हरि नाम कौ संकीर्तन सुनि कान।
श्रवण परत हरि नाम के पाप विमोचन जान॥
कृष्ण नाम जप जीव तू और मृषा जग काज।
भागन कौ मारग नहीं पिछु-लाग्यो जमराज॥
कृष्ण नाम, हरिनाम यह मधुर सुधा रसखान।
कृष्ण-भजन रत भक्त जो सोही चतुर सुजान॥
ब्रह्मादिक पाये नहीं देव थके धरि ध्यान।
ता हरि के बस करन कौं 'भजन' उपाय महान॥
तीखे नखन विदारते हिरणकशिपु कौ वक्ष।
अपने जन प्रहलाद की करी नरहरी रक्ष॥
छलन हेत बलिराज कौं वामन वपु हरि कीन।
दीन द्रौपदी लाज हित भये चीर लवलीन॥
अष्टोत्तर शत नाम नित पाठ करै जो कोय।
राधा कृष्ण पद पद्म की भक्ति उदै हिय होय॥
नन्द नँदन पूरन करैं भक्तन की अभिलाष।
जिन कंस मथुरा हन्यौ रावण लंक विनाश॥
हन्यौ बकासुर अघ कियौ भञ्जन कालिय मान।
नाम संकीर्तन कहत है द्विज हरि जग हित जान॥

अनुवादक "हरिकृष्ण कमलेश"

योगपीठ

श्री गोविन्द पदारविन्द सीस सिर नाऊँ।
श्री वृन्दावन विपिन मौलि वैभव कछु पाऊँ॥
कालिन्दी जहँ नदी नील निर्मल जल भ्राजै।
परम तत्व वेदान्त वेद्य इव रूप विराजै॥
रक्त-पीत-सित-असित लसित अम्बुजवन सोभा।
टोल टोल मद लोल भ्रमत मधुकर मधु लोभा॥
सारस अरु कलहंस कोक कोलाहल कारी।
अगनित लक्षण पक्षि जात कहि नहि मति हारी॥
पुलिन पवित्र विचित्र रचित नाना मनि मोती।
लज्जित ह्वै शशि सूर निरखि निसि वासर जोती॥
कंचन कलित गिलाइ लाइ बाँधे मनि कूलन।
तीर तीर चतुर सुचारु नाना द्रुम मूलन॥
नव नग शोभा विविध भाति नव पल्लव पत्रा।
रङ्ग रङ्ग के फूल मनहुँ विधि निर्मित चित्रा॥
कल कलधौत लता प्रतान तिनसौं लपटाने।
वर पराग के पुंज कुंज परत न पहिचाने॥
कहुँ कपूर पराग कहुँ कुंकुम के पंका;
कहुँ फटिक स्थल विमल मनहुँ अकलंक मयंका॥
कहुँ अमृत जल भरे विपुल पद्माकर ओड़े।
मरकत धसी किरन मानौ दुर्वांकुर बोड़े॥
इहि विधि चिंतामनिन भूमि संतत तहं सोहै।
षट रितु सेवत नित्त कहत उपमा को कोहै॥
जहँ केकी कुल निर्तत तहँ पिक पंचम गावत।
परत भृंग उपाङ्ग सबद उघटत पारावत॥

कीर प्रशंसा करत भरत निर्झर मृदङ्ग धुनि ।
रीझ रीझ सिर धुनत वृक्ष संगीत रीति सुनि ॥
थिरचर मन उल्लास विलास विविध तहँ दरसै ।
मन्द पवन वस परसि लता कुसुमांजलि वरसै ॥
नित्यानन्द कदम्ब केलि वृन्दावन सोभा ।
कोटि कोटि सुरराज रङ्क ह्वै लागत लोभा ॥
कल्पद्रुमन की छांह माँह मनि मंडप भारी ।
जगमग जगमग जोति होति सोभा सुखकारी ॥
ता मंडप महँ योगपीठ पङ्कज रुचि लागि ।
ताके मन में उदय होत जो कोउ बड़ भागि ॥
ताके पत्र विचित्र सहस्र मध्य किंजल्कै ।
पद्मराग की भांति अग्र मुक्ता मणि झलकै ॥
कनक वरन कर्निका कील वज्रन की सोहै ।
मन्त्र दशाक्षर रूप कहन महिमाको को है ॥
वनिता जन गन कोटि कोटि संतत ता माहीं ।
उपमाको रति रमा उमा रम्भादिक नाहीं ॥
वरन वरन अम्बर सुरङ्ग कंचुकि तन गाढी ।
मञ्जन अंजन तिलक हार सोभा सुठि वाढी ॥
अङ्ग अङ्ग सोभा समूह श्रेणी रुचि वाढी ।
मनहुँ माधुरी सिंधु हू ते अवहीं मथि काढी ॥
सुन्दर नव युवराज विराजत तिनहि मँझारी ।
रूप अनूपम कथन काज सुरसुति पचिहारी ॥
नील जलद तन स्याम धाम अभिराम पीत पट ।
सिखि सिखंड सेखर ललाट रहीं छुटि अलकनट ॥
विविध सुदेस सुन्दर सुरङ्ग कुंकुम तमाल दल ।
ललित लोल डोलत कपोल विंवित मनिकुंडल ॥

भ्रुकुटि भङ्ग लघु लघु तरङ्ग लोचन सुको [illegible]द ।
चपल चारु चितवनि चिताइ गत होत मदनमद ॥
शुक नासा मुक्ता प्रकाश उपमा मन मेरे ।
मनहुँ असुर गुरु आय अङ्क बैठ्यो विधु केरे ॥
अधर मधुर अरुणिमा जोर वंधुक नहि पावै ।
विद्रुम विंव जवा प्रसून ऊनत्ता जनावै ॥
मुक्ता हीर अनार बुंद दंतन पर वारौं ।
कंवु कंठ कौस्तुभ मयूख रुचि कहत न पारौं ॥
गज सुंडाकृति वाहुदंड केयूर रहे वन ।
मधि हीरा पट कौन कौन मनि कहै और गनि ॥
पहुँचनि पहुँची वर जराय मुद्रिका रही फवि ।
करपल्लव नख जोति जात नक्षत्र पंक्ति दवि ॥
कुंद दाम वनदाम दाम गुंजा मनिकी उर ।
तार हार विस्तार चारु सुभ ढ़रत हिये पर ॥
स्तन दक्षिण श्रीवत्स वाम सोहै श्रीरेखा ।
मधि चौकी की चमक चाहि गृह थके असेषा ॥
त्रिवलि वलित रोमावलि नाभि आवर्त्त समाना ।
चलदल दल आकार उदर घटना मन माना ।
चित्रित अङ्ग पटीर कटी तट घटी सुहाई ।
मंद पवन वस थरहराति प्रमुदा मधि आई ॥
मनि किंकिनि गुण तड़ित दाम सम वनी नितंवन ।
उरु जानु जङ्घा सुगुल्फ सोभा अवलम्वन ॥
नूपुर रव झन झननकार गुरु सिक्ष्य हंसकुल ।
वार वार अभ्यास करत हारे न लही तुल ॥
जल कमल स्थल कमल जीति श्री वस करि राखी ।
कविवर वचन प्रमाण मानि बोलत है साखी ॥

मुरलीधर वर अधर धरी मुरली अति नीकी।
नादामृत बरसाय हरत सुधि बुधि सबही की॥
वाम भाग सौभाग सीम श्रीराधा रमनिमनि।
ताके नव नव प्रीति राग रहि पिय तन मनसनि॥
अहिकुल अलिकुल वरहिकुल केश वेश लखि लाज।
रहे रसामहि कमलमहि निरजन बन महँ भाजि॥
वदन सदन आनन्द चंद चारुता लजानी।
नैंन मैन सरपैन भौंह धनुही जनु तानी॥
मृगमद तिलक ललाट पट ताटङ्क श्रवण वनि।
खुलि खुटिलाभु लमुली अलक झलमलत महामनि॥
नासा मोती अधर भासता सित थरहरई।
दसन दाडिमी बीज मंजुता बोल मुखरई॥
चिबुक चारु रुचि रुचिर चकित प्रीतम छबि जो है।
स्यामबिंदु सुखकन्द नन्दनन्दन मन मोहै॥
नील सार सोभा अपार वेनी वनी भारी।
गौर गात गाती सुजात मोहित रतनारी॥
कंठ श्री मुक्तान माल चौंकी चमकती।
भुज मृणाल नव लाल वलित वलयनकी पंक्ती॥
मनि मुद्रिक केयूर कमल करपल्लव राते।
नखर सिखर माणिक्य स्याम अन्तर अरुझाते॥
रसना रसद निनाद वाद मनमथ सौं ठान्यौ।
रंभा खंभ समान जङ्घ सुन्दर मन मान्यौ॥
चरन कञ्ज मञ्जीर हंस कूजित सम बाजे।
नख मानिक मद जीति राग तल अधिक विराजै॥
यह विधि युगल किशोर जोर संतत तँह सोभै।
भाव सहित भावना करत कहि को नहि लोभै॥

जो इहि विधि निसि द्योस चलत बैठे अरु ठाढ़े।
करहि विचार विकार और तौवत मन बाढ़े॥
स्यानानंद मकरन्द सार जिनके मन माते।
भव दव दहन समूह तिनहि लागत नहिं ताते॥
श्रीवृन्दावन योगपीठ गोविन्द निवासा।
तहाँ श्रीगदाधर चरन सरन सेवा की आसा॥
इति श्री गदाधरभट्टजी कृत योगपीठ
वर्णन सम्पूर्णम्॥

श्रीगुरुवन्दना

आश्रय लै वन्दौ विमल गुरुवर के पद कञ्ज।
भाई, जासौं मिलत है कृष्ण प्रेम धन मञ्जु॥
जीव उधारन कारनै नन्द नँदन हरि राय।
भुवन मांहि प्रगटत-सदा गुरु रूप धरि आय॥
महिमा में गुरु कृष्ण दोउ सदा एक करि जान।
गुरु आज्ञा हिय धरि सदा सत्य रूप करि मान॥
सत्य ज्ञान करि गुरु वचन मांहि जासु विश्वास।
निहचै ताको होय है वृन्दा विपिन निवास॥
जाके प्रति गुरु देव जू होत रहै पर सन्न।
ताको चित्त न विघ्नसों होत कवौं अवसन्न॥
कृष्ण रोष जो करत तो राखत गुरु स टेक।
गुरु रूसै तो कृष्ण हूँ रखि न सकैं छनु एक॥
गुरू पिता, माता गुरू गुरु पालक पति मान।
गुरू बिना संसार मधि नहीं और गति जान॥
मानुस करि गुरुदेव कौं कबहुँ न मनमें जान।
श्रीगुरु कैं निन्दा वचन श्रवण माँहि नहि आन॥

गुरु निंदक जन को कहीं मुख न देखिये भूल ।
गुरु निंदा जहां होत तहां कबहुँ न जैये भूल ॥
हीन कर्म गुरु को कवौं देखि परै जो कोय ।
नहीं अवज्ञा कीजिये जान बूझि मन सोय ॥
श्रीगुरु के पद पद्म में जाकी निष्ठा भक्ति ।
तारन हित सब जगत कौं सो राखै बड़ शक्ति ॥
ऐसे गुरु पद कमल कौं नित कीजै परनाम ।
जासौं छूटैंगे सकल जगत जंत्रणा—काम ॥
श्री गुरु के पद पद्म दृढ करि प्रणवै जोय ।
सदा सीस धरि चरन में नित उठि वन्दौ सोय ॥
श्री गुरु के पद कमल की कृपा राखि हिय आस ।
श्री गुरु पद की बन्दना कहत सनातन दास ॥
इति श्रीसनातनगोस्वामीजी कृत वङ्गभाषा-
गुरुवन्दना की उलथा ।

श्री श्री गुरुदेवाष्टकम्

संसारदावानललीढ़लोकत्राणाय कारुण्य-घनाघनत्वम् ।
प्राप्तस्य कल्याणगुणार्णवस्य वन्दे गुरोः श्री चरणारविन्दम् ॥१
महाप्रभोः-कीर्त्तन-नृत्य-गीत-वादित्र माद्यन्मनसो रसेन ।
रोमांच-कम्पाश्रु तरङ्गभाजो वन्दे गुरोः श्री चरणारविन्दम् ॥२
श्रीविग्रहाराधन नित्यनानाशृंगारतन्मन्दिरमार्जनादौ ।
युक्तस्य भक्तांश्च नियुञ्जतोऽपि वन्दे गुरोः श्री चरणारविन्दम् ॥३
चतुर्विध श्री भगवत्प्रसाद स्वाद्वन्नतृप्तान् हरिभक्तसंघान ।
कृत्वैव तृप्ति भजतः सदैव वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥४

श्रीराधिकामाधवयोरपार माधुर्य्य लीला गुण रूप नाम्नां ।
प्रतिक्षण स्वादनलोलुपस्य वन्दे गुरोः श्री चरणारविन्दम् ॥५
निकुञ्जयुनो रतिकेलिसिद्धयै या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया ।
तत्रातिदाक्ष्यादतिवल्लभस्य वन्दे गुरोः श्री चरणारविन्दम् ॥६
साक्षाद्धरित्वेन समस्त शास्त्रै रुक्तस्तथाभाव्यत एव सद्भिः ।
किन्तु प्रभो र्यः प्रिय एव तस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥७
यस्य प्रसादाद् भगवत्प्रसादो यस्याप्रसादान्न गतिः कुतोऽपि ।
ध्यायंस्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसन्ध्यं वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ॥८
श्रीमद्गुरोरष्टकमेतदुच्चै र्ब्राह्मे मुहूर्त्ते पठति प्रयत्नात् ।
यस्तेन वृन्दावननाथसाक्षात् सेवैव लभ्या जनुषोऽन्त एव ॥९
इति श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्तीचरणविरचितं
श्री गुरुदेवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

------

* श्री श्री शचीतनयाष्टकम् *

उज्वल वरण गौरवरदेहं विलसति निरवधि भावविदेहम् ।
त्रिभुवन पावन कृपयालेशं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥
गदगद अन्तर भाव विकारं दुर्जन तर्जन नाद विशालं ।
भव भय- भञ्जन कारण करुणं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।
अरुणाम्बरधरचारु कपोलं इन्दुविनिन्दित नखचय रुचिरं ।
जल्पित निजगुण नाम विनोदं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्
विगलित नयन कमल जलधारं भूषण नवरस भाव विकारं ।
गति अतिमन्थर नृत्य विलासं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥
चञ्चलचारु चरणगति रुचिरं मञ्जीर रञ्जित पदयुगमधुरं ।
चन्द्रविनिन्दित शीतल वदनं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥
धृत कटिडोर कमण्डलु दण्डं दिव्य कलेवर मुण्डितमुण्डं ।
दुर्जनकल्मष खण्डनदण्डं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥

भूषण भूरज अलकावलितं कम्पित बिम्बाधर वर रुचिरं ।
मलयज विरचित उज्वल तिलकं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥
निन्दित अरुण कमल दल लोचनं आजानुलम्बित श्रीभुजयुगलं ।
कलेवर कैशोर नर्त्तकवेशं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ॥
इति श्री सार्व्वभौमभट्टाचार्य्य विरचितं
श्रीशचीतनयाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्री श्री चैतन्याष्टकम्

सदोपास्यः श्रीमान् धृतमनुजकायैः प्रणयितां
बहद्भिर्गीर्व्वाणै गिरिश परमेष्ठि प्रभृतिभिः ।
स्वभक्तेभ्यः शुद्धां निजभजनमुद्रामुपदिशन्
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशो र्यास्यति पदम् ॥ १ ॥
सुरेशानां दुर्ग गतिरतिशयेनोपनिषदां
मुनीनां सर्वस्वं प्रणत पटलीनां मधुरिमा ।
विनिर्य्यासः प्रेम्नो निखिल पशुपालाम्बुजदृशां
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशो र्यास्यति पदम् ॥ २ ॥
स्वरूपं बिभ्राणो जगदतुलमद्वैतदयितः
प्रपन्न श्री वासो जनित परमानन्द गरिमा ।
हरिर्दीनोद्धारी गजपतिकृपोत्सेकतरलः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ३ ॥
रसोद्दामा कामार्व्बुद मधुर धामोज्वलतनु-
र्यतीनामुत्तंस स्तरणिकर विद्योति वसनः ।
हिरण्यानां लक्ष्मीभरमभिभवन्नांगिकरुचा
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशो र्यास्यति पदम् ॥ ४ ॥
हरेकृष्णेत्युच्चैः स्फुरितरसनो नामगणना-
कृत ग्रंथिश्रेणी सुभगकटिसूत्रोज्वलकरः ।

विशालाक्षो दीर्घागलयुगलखेलाञ्चितभुजः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ५ ॥
पयोराशेस्तीरे स्फुरदुपवनालींकलनया
मुहुर्वृन्दारण्य स्मरण जनित प्रेमविवशः ।
क्वचित्कृष्णावृत्तिप्रचलरसनो भक्तिरसिकः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ६ ॥
रथारूढस्यारादधिपदवि नीलाचलपते
रदभ्रप्रेमोर्म्मि स्फुरित नटनोल्लास विवशः ।
सहर्षं गायद्भिः परिवृततनुर्वैष्णवजनैः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ७ ॥
भुवं सिञ्चन्नश्रु श्रुतिभिरभितः सान्द्रपुलकैः
परीतांगो नीपस्तवक नव किञ्जल्कजयिभिः ।
घनस्वेद-स्तोम-स्तिमित तनुरुत्कीर्तनसुखी
स चैतन्यः कि मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥ ८ ॥
अधीते गौरांग स्मरणपदवींमङ्गलतरं
कृती यो विश्रम्भ स्फुरदमलधीरष्टकमिदम् ।
परानन्दे सद्यस्तदमलपदाम्भोजयुगले
परिस्फारा तस्य स्फुरतु नितरां प्रेमलहरी ॥ ९ ॥
इति श्रीमद्रूपगोस्वामि विरचितं श्री शचीतनयाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री श्रीगौरांगस्तवकल्पतरुः ॥

गतिं दृष्ट्वा यस्य प्रमदगजवर्य्येऽखिलजना
मुखञ्च श्रीचन्द्रोपरि दधति थुत्कारनिवहम् ।
स्वकान्त्या यः स्वर्णाचलमधरयच्चैधु च वच
स्तरंगैगौंरांगो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ १ ॥

नवविविधरत्नैरिव ब्रज
अलंकृत्याऽमानं वचनकम्पाश्रुपुलकैः ।
द्विवर्णत्व स्तम्भस्फुट शितिगिरिपतेर्निर्भरमुदे
हसन् स्विद्यन् नृत्यन् उदयन्मां मदयति ॥ २
पुरः श्रीगौरांगो हृदय वारिभिरलं
रसोल्लासैस्तिर्य्यग्गातिभिरभितो
दृशोः सिञ्चल्लोकाऽरुणजलयन्त्रत्वमितयोः ।
मुदा दन्तैर्दष्ट्वा मधुरमधरं कम्पचलितै
र्नटन् श्रीगौरांगो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ ३
क्वचिन्मिश्रावासे व्रजपतिसुतस्योरुविरहात्
श्लथच्छ्रीसन्धित्वादधदधिकदैर्घ्यं भुजपदोः ।
लुठन् भूमौ काक्का विकलविकलं गद्गदवचा
रुदन् श्रीगौरांगो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ ४
अनुद्घाट्य द्वारत्रयमुरु च भित्तित्रयमहो
विलंघ्योच्चैः कालिंगिकसुरभिमध्ये निपतितः ।
तनूद्यत्संकोचात् कमठ इव कृष्णोरुविरहाद-
विराजन् गौरांगो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ ५ ॥
स्वकीयस्य प्राणार्बुदसदृशगोष्ठस्य विरहात्
प्रलापानुन्मादात् सततमतिकुर्व्वन् विकलधीः ।
दधद्भित्तौ शश्वद्वदनविधुघर्षेण रुधिरं
क्षतोत्थं गौरांगो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ ६ ॥
क मे कान्तः कृष्णस्त्वरितमिह तं लोकय सखे
त्वमेवेति द्वाराधिपमभिदधन्नुन्मद इव ।
द्रुतं गच्छ द्रष्टुं प्रियमिति तदुक्तेन धृततद्
भुजान्तो गौरांगो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ ७ ॥
समीपे नीलाद्रेश्चटकगिरिराजस्य कलना—
दये गोष्ठे गोवर्द्धनगिरिपतिं लोकितुमितः ।

व्रजन्नस्मीत्युक्त्वा प्रमद इव धावन्नवधृतो
गणैः स्वैर्गौरांगो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ ८ ॥
अलं दोलाखेला महसि वरतन्मण्डपतले
स्वरूपेण स्वेनापरनिजगणेनापि मिलितः ।
स्वयं कुर्व्वन्नाम्नामतिमधुरगानं मुररिपोः
सरङ्गो गौरांगो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ ९ ॥
दयां यो गोविन्दे गरुड़ इव लक्ष्मीपतिरलं
पुरीदेवे भक्तिं य इव गुरुवर्य्ये यदुवरः ।
स्वरूपे यः स्नेहं गिरिधर इव श्रीलसुबले
विधत्ते गौरांगो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ १० ॥
महासम्पदावादपि पतितमुद्धृत्य कृपया
स्वरूपे यः स्वीये कुजनमपि मां न्यस्य मुदितः ।
उरो गुंजाहारं प्रियमपि च गोवर्द्धनशिलां
ददौ मे गौरांगो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ ११ ॥
इति श्रीगौरांगोद्धर्तविविधसद्भावकुसुम
प्रभाभ्राजत्पद्यावलिललितशाखं सुरतरुं ।
मुहुर्योऽतिश्रद्धौषधिवर–वलत्पाठसलिलै
रलं सिञ्चेद् विन्देत् सरसगुरुतल्लोकनफलम् ॥ १२ ॥

इति श्रीमद्रघुनाथदासगोस्वामि विरचितः
श्रीगौरांग स्तवकल्पतरुः समाप्तः ॥

श्री श्री नवद्वीपचन्द्राष्टकम्

कनक रुचिर गौरः सर्व्व चित्तैकचौरः
प्रकृतिमधुरदेहः पूर्णलावण्यगेहः ।
कलित ललितरूपः लुब्धकन्दर्पभूपः
स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ १ ॥

बहुलचिकुरबन्धः स्निग्धमुग्धप्रबन्धः
प्रसरपुरपुरन्ध्रीचित्तसन्धानमन्त्री ।
विहित विविधवेशद्योतिताशेषदेशः
स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ २ ॥
विकशितशतपत्रद्योतिविस्फारनेत्रः
प्रिय मृदुल पवित्र स्निग्धदृक् प्रेमपात्रः ।
अति मधुरचरित्रः प्रोल्लसच्चारुगात्रः-
स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ ३ ॥
मलयजकरवीरश्च्छिद्विलासातिधीरः
सुविमलसितवस्त्रः प्रान्तवस्त्रानुरक्तः ।
रभसमयबिहारः पूर्णलीलावतारः
स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ ४ ॥
सकलरसविदग्धः सर्वभावप्रशुद्धः
सकलसुखविनोदः ख्यातनृत्यप्रमोदः ।
सकलसुखदनामा धन्यतारुण्य धामा
स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीषचन्द्रः ॥ ५ ॥
अविरतगलदस्रः प्रेमधारासहस्रः
स्नापित सकलदेशः ख्यातनामोपदेशः ।
भुवनविदितसर्वप्राणिनिस्तारगर्व्वः
स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ ६ ॥
घन पुलककदम्बः स्थूलमुक्तासमाम्भ
स्नपिततरहृदोरः प्रेमहुंकारघोरः ।
सदय मधुरमूर्ति-र्बिश्वबिख्यातकीर्त्तिः
स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ ७ ॥
अखिल भुवनभर्त्ता दुर्गतित्राणकर्त्ता
कलिकलुषनिहन्ता दीनदुःखैकशान्ता ।

निरवधि निज गाथा कीर्त्तनानन्द दाता
स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ ८ ॥
सुरमुनिगणबन्धुः प्रेमभक्त्येकसिन्धुः
प्रकट सुरभिनन्द श्रीलपादारविन्दः ।
नटनमधुरमन्दः सुप्रगाढ प्रबन्धः
स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ ९ ॥
सकलनिगमसारः प्रेमपूर्णावतारः
प्रचुरगुणगभीरः सर्व्वसन्धान धीरः ।
अधमपतित बन्धुः पूर्णकारुण्यसिन्धुः
स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ १० ॥
मधुरिमनि मनोज्ञस्ताण्डवाद्यन्तविज्ञ
स्तरुणिमणि विचित्रः प्रेमनिस्तारपात्रः ।
महिमनि निजनाम ग्राहिसम्पूर्णकामः
स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ ११ ॥
श्रीगौरांगनटेन्द्रस्य स्तुतिमेतामभीष्टदां ।
यः पठेत् परमप्रीतः स प्रेमसुखभाग् भवेत् ॥ १२ ॥
इति श्री रघुनन्दन ठक्कुर विरचितं श्री श्री नवद्वीप
चन्द्राष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री श्रीनित्यानन्दाष्टकम् ॥

शरच्चन्द्रभ्रान्ति स्फुरदमलकान्ति गजगतिं
हरिप्रेमोन्मत्तं धृतपरमसत्वं स्मितमुखं ।
सदाघूर्णन्नेत्रं करकलितबेत्रं कलिभिदं
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ १ ॥
रसानामागारं स्वजनगणसर्व्वस्वमतुलं
तदीयैक प्राणप्रतिमवसुधा जान्हवापतिं ।

सदा प्रेमोन्मादं परमविदितं मन्दमनसां
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ २ ॥
शची सूनु प्रेष्ठं निखिलजगदिष्टं सुखमयं
कलौ मज्जजीवोद्धरण करुणोद्दाम करुणं ।
हरेराख्यानाद्वा भवजलधि गर्व्वोन्नति हरं
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ३ ॥
अये भ्रातर्नृणां कलिकलुषिणां किन्नु भविता
तथा प्रायश्चित्तं रचय यदनायासत इमे ।
व्रजन्ति त्वामित्थं सह भगवता मन्त्रयति यो
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ४ ॥
यथेष्टं रे भ्रातः ! कुरु हरि हरि ध्वानमनिशं
ततो वः संसाराम्बुधितरणदायो मयि लगेत् ।
इदं वाहुस्फोटैरटति रटयन् यः प्रतिगृहं
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ५ ॥
वलात्संसाराम्भोनिधि हरणकुम्भोद्भवमहो
सतां श्रेयः सिन्धुन्नतिकुमुदबन्धुं समुदितं ।
खलश्रेणी स्फुर्ज्जत्तिमिरहर सूर्य्य प्रभमहं
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ६ ॥
नटन्तं गायन्तं हरिमनुवदन्तं पथि पथि
व्रजन्तं पश्यन्तं स्वमपि नदयन्तं जनगणम् ।
प्रकुर्व्वन्तं सन्तं सकरुणदृगन्त प्रकलनाद्
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ७ ॥
सुबिभ्राणं भ्रातुः करसरसिजं कोमलतरं
मिथो वक्त्रालोकोच्छलित परमानन्द हृदयम् ।
भ्रमन्तं माधुर्य्यैरहह मदयन्तं पुरजनान्
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ८ ॥

रसानामाधारं रसिकवर सद्वैष्णवधनं
रसागारं सारं पतिततततितारं स्मरणतः ।
परं नित्यानन्दाष्टकमिदमपूर्व्वं पठति य
स्तदंघ्रिद्वन्द्वाब्जं स्फुरतु नितरां तस्य हृदये ॥
इति श्रीमद्वृन्दावनदासठक्कुरविरचितं
श्री श्रीनित्यानंदाष्टकं सम्पूर्णम् ।

※ श्री श्री मदद्वैताष्टकम् ※

गंगातीरे तत्पयोभिस्तुलस्याः पत्रैः पुष्पैः प्रेमहुंकारघोषैः ।
प्राकट्यार्थं गौरमाराधयद्यः श्रीलाद्वैताचार्य्यमेतं प्रपद्ये ॥१
यद्धुंकारैः प्रेमसिन्धोर्विकारैराकृष्टः सन् गौरगोलोकनाथः ।
आविर्भूतः श्रीनवद्वीप मध्ये श्रीलाद्वैताचार्य्यमेतं प्रपद्ये ॥२
ब्रह्मादीनां दुर्लभ प्रेमपूरै रादीनां यः प्लावयामास लोकं ।
आविर्भाव्य श्रीलचैतन्यचन्द्रं श्रीलाद्वैताचार्य्यमेतं प्रपद्ये ॥३
श्रीचैतन्यः सर्वशक्ति प्रपूर्णो यस्यैवाज्ञा मात्रतोऽन्तदधेऽपि ।
दुर्विज्ञेयं यस्य कारुण्य कृत्यं श्रीलाद्वैताचार्य्यमेतं प्रपद्ये ॥४
सृष्टिस्थित्यन्तं विधातुं प्रवृत्ताःयस्यांशांशा ब्रह्मविष्णवश्वराख्याः
येनाभिन्नास्तं महाविष्णुरूपं श्रीलाद्वैताचार्य्यमेतं प्रपद्ये ॥५
कस्मिंश्चिद्यःश्रूयते चाश्रयत्वाच्छम्भोरित्थं शाम्भवं नाम धाम
सर्वाराध्यं भक्तिमात्रैकसाध्यं श्रीलाद्वैताचार्य्यमेतं प्रपद्ये ॥६
सीता नाम्नी प्रेयसी प्रेमपूर्णा पुत्रो यस्याप्यच्युतानन्दनामा ।
श्रीचैतन्यप्रेमपूर प्रपूर्णः श्रीलाद्वैताचार्य्यमेतं प्रपद्ये ॥७
नित्यानन्दाद्वैततोऽद्वैतनामा भक्त्याख्यानाद् यः सदाचार्य्यनामा
शश्वच्चेतःसञ्चरद्गौरधामा श्रीलाद्वैताचार्य्यमेतं प्रपद्ये ॥८

प्रातः प्रीतः प्रत्यहं संपठेद्यः सीतानाथस्याष्टकं शुद्ध बुद्धिः
सोऽयं सम्यक् तस्य पादारविन्दे विन्दन् भक्तिं तत्प्रियत्वं प्रया
इति श्रीसार्व्वभौमभट्टाचार्य्य विरचितं
श्री श्रीमदद्वैताष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्री श्रीगदाधरपण्डिताष्टकम्

सद्भक्तियोगलासिनं सदा व्रजे विहारिणं
हरिप्रियागणाग्रगं शचीसुतप्रियेश्वरम् ।
स राध कृष्णसेवनप्रकाशकं महाशयं
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ॥ १ ॥
नवोज्वलादिभावना विधान कर्म्मपारगं
विचित्र गौरभक्तिसिन्धु रङ्गभङ्ग लासिनम् ।
सुरागमार्गदर्शकं व्रजादिवासदायकं ।
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुं ॥ २ ॥
शचीसुतांघ्रिसार भक्तवृन्द वन्द्य गौरवं
गौरभावचित्तपद्म मध्य कृष्णसुवल्लभम् ।
मुकुन्दगौररूपिणं स्वभावधर्म्मदायकम्
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुं ॥ ३ ॥
निकुञ्जसेवनादिक प्रकाशनैक कारणं
सदा सखीरतिप्रदं महारसस्वरूपकम् ।
सदाश्रितांघ्रि पुण्डरीकदं सदा गुरुं वरं
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुं ॥ ४ ॥
महाप्रभोर्म्महारस प्रकाशनाकुरं प्रियं
सदा महारसांकुर प्रकाशनादि वासनम् ।
महाप्रभोर्व्रजांगनादि भावमोदकारकं
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुं ॥ ५ ॥

द्विजेन्द्रवृन्दवन्द्य पादयुग्म भक्तिवर्द्धकं
निजेषु राधिकात्मता वपुः प्रकाशनाग्रहम् ।
अशेषभक्तिशास्त्र शिक्षयोज्वलामृतप्रदं
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुं ॥ ६ ॥
मुदा निजप्रियादिकस्वपादपद्मसीधुभि
र्महारसार्णवामृत प्रदेष्टगौरभक्तिदम् ।
सदाष्टसात्विकान्वितं निजेष्टभक्तिदायकं
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुं ॥ ७ ॥
मदीयरीतिरागरङ्ग भङ्गदिग्धमानसो ।
नरोऽपि याति तूर्णमेव नार्य्यभावभाजनं ।
तमुज्वलाक्तचित्तमेतु चित्तमत्त षट्पदो
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुं ॥ ८ ॥
महारसामृतप्रदं सदा गदाधराष्टकं
पठेत्तु यः सुभक्तितो व्रजांगनागणोत्सवम् ।
शचीतनूज पादपद्मभक्तिरत्नयोग्यतां
लभेत राधिका गदाधरांघ्रिपद्मसेवया ॥ ९ ॥
इति श्रीलरूपगोस्वामिविरचितं
श्रीश्रीगदाधरपण्डिताष्टकं
समाप्तम् ॥

श्री श्री वासाष्टकम्

आश्रयामि श्री श्रीवासं तमाद्यं पण्डितं मुदा ।
शुक्लाम्बरधरं गौरं गौरभक्तिप्रदायकम् ॥ १ ॥
श्रीगौरस्य नवद्वीपलीलाकीर्त्तनसम्पदि ।
यः प्रधानतया ख्यातः स श्रीवासो गतिर्म्मम ॥ २ ॥

पुत्रशोकोऽपि नास्पृशत् ।
श्रीगौरकीर्त्तनानन्दे पुत्रशोकोऽपि नास्पृशत् ।
यं श्रीवासं भक्तराजं तं नमामि पुनः पुनः ॥ ३ ॥
आदौ वासस्तु श्रीहट्टे भागीरथ्यास्तटे ततः ।
कुमारहट्टे यस्यासीत् स मे गौरगतिर्गतिः ॥ ४ ॥
श्रीरामः श्रीपतिश्चैव श्रीनिधिश्चेति सत्तमाः ।
श्रीवासभ्रातरो ज्ञेयाः श्रीवासं नौमि तद्वरं ॥ ५ ॥
पुरा नारदरूपेण हरिनामसुधाक्षरैः ।
यो जगत् प्लावयामास स श्रीवासोऽधुना गतिः ॥ ६ ॥
यत्पत्नी मालिनीदेवी श्रीगौरांगमतोषयत् ।
स्वहस्त पक्क भक्ताद्यैः स श्रीवासो गतिर्म्मम ॥ ७ ॥
पतिवद्गौरांगगतिर्मालिनी गौड़विश्रुता ।
तत्पादपद्मसविधे प्रणतिर्म्मे सहस्रशः ॥ ८ ॥
श्रीचैतन्यप्रियतमं वन्दे श्रीवासपण्डितं ।
यत्कारुण्य कटाक्षेण श्रीगौरांगे रतिर्भवेत् ॥ ९ ॥

इति श्रीवासाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

---[❀]---

श्री श्रीषड् गोस्वाम्यष्टकम्

कृष्णोत्कीर्तनगाननर्त्तनपरौ प्रेमामृताम्भोनिधी
धीरौ धीरजनप्रियौ प्रियकरौ निर्म्मत्सरौ पूजितौ ।
श्रीचैतन्यकृपाभरौ भुवि भुवो भारावहन्तारकौ
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ॥ १ ॥
नानाशास्त्रविचारणैकनिपुणौ सद्धर्म्मसंस्थापकौ
लोकानां हितकारिणौ त्रिभुवने मान्यौ शरण्याकरौ ।
राधाकृष्णपदारविन्दभजनानन्देन मत्तालिकौ
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ॥ २ ॥

श्रीगौरांगगुणानुवर्णनविधौ श्रद्धा-समृद्धयन्वितौ
पापोत्तापनिकृन्तनौ तनुभृतां गोविन्दगानामृतैः ।
आनन्दाम्बुधिवर्द्धनैकनिपुणौ कैवल्यनिस्तारकौ
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ॥ ३ ॥
त्यक्त्वा तूर्णमशेषमण्डलपतिश्रेणीं सदा तुच्छवत्
भूत्वा दीनगणेशकौ करुणया कौपीनकन्थाश्रितौ ।
गोपीभावरसामृताब्धिलहरी कल्लोलमग्नौ मुहु
र्वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ॥ ४ ॥
कूजत्कोकिल हंस सारसगणाकीर्णे मयूराकुले
नानारत्ननिबद्धमूलविटप श्रीयुक्तवृन्दावने ।
राधाकृष्णमहर्निशं प्रभजतौ जीवार्थदौ यौ मुदा
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव गोपालकौ ॥ ५ ॥
संख्यापूर्व्वक नाम गाननतिभिः कालावसानीकृतौ
निद्राहारविहारकादिविजितौ चात्यन्तदीनौ च यौ,
राधाकृष्णगुणस्मृते र्मधुरिमानन्देन सम्मोहितौ
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ॥ ६ ॥
राधाकुण्डतटे कलिन्दतनयातीरे च वंशीवटे
प्रेमोन्मादवशादशेषदशया ग्रस्तौ प्रमत्तौ सदा ।
गायन्तौ च कदा हरेर्गुणवरं भावाभिभूतौ मुदा
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ॥ ७ ॥
हे राधे व्रजदेविके च ललिते हे नन्दसूनो कुतः
श्री गोवर्द्धनकल्पपादपतले कालिन्दिवन्ये कुतः ।
घोषन्ताविति सर्वतो व्रजपुरे खेदैर्महाविह्वलौ
वन्दे रूपसनातनौ रघुयुगौ श्रीजीवगोपालकौ ॥ ८ ॥

इति श्रीलश्रीनिवासाचार्य्यं प्रभु विरचितं
श्रीषड्गोस्वामिगुणलेशसूचकाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री श्रीनवद्वीपाष्टकम् ॥

श्रीगौडदेशे सुरदीर्घिकायास्तीरेऽतिरम्ये पुरुपुण्यमय्याः ।
लसन्तमानन्दभरेण नित्यं तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥१
यस्मै परव्योम वदन्ति केचित् केचिच्च गोलोक इतीरयन्ति ।
वदन्ति वृन्दावनमेव तज्ज्ञास्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥२
यः सर्वदिक्षु स्फुरितैः सुशीतैर्नानाद्रुमैः सूपवनैः परीतः ।
श्रीगौरमध्याह्नविहारपात्रै स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥३
श्रीस्वर्णदी यत्र विहारभूमिः सुवर्णसोपाननिबद्धतीरा ।
व्याप्तोर्म्मिभिर्गौरवगाहरूपै स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥४
महान्त्यनन्तानि गृहानि यत्र स्फुरन्ति हैमानि मनोहराणि ।
प्रत्यालयं यं श्रयते सदा श्री स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥५
विद्या-दया-क्षान्ति मुखैः समस्तैःसद्भिर्गुणै र्यत्र जनाःप्रपन्नाः ।
संस्तूयमाना ऋषिदेवसिद्धैस्तं श्रीनवद्वीप महं स्मरामि ॥६
यस्यान्तरे मिश्र पुरन्दरस्य स्वानन्दसाम्यैकपदं निवासः ।
श्रीगौरजन्मादिकलीलयाढ्यस्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥७
गौरो भ्रमन यत्र हरिः स्वभक्तैः संकीर्त्तन प्रेमभरेण सर्व्वम् ।
निमज्जयत्युल्लसदुन्मदाब्धौ तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥८
एतन्नवद्वीपविचिन्तनाढ्यं पद्याष्टकं प्रीतमनाः पठेद्यः ।
श्रीमच्छचीनन्दनपादपद्मे सुदुर्लभं प्रेम समाप्नुयात् सः ॥

॥ इति श्री श्री नवद्वीपाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री श्रीशिक्षाष्टकम् ॥

चेतो दर्पणमार्ज्जनं भवमहादावाग्निनिर्व्वापनं
श्रेयः कैरव चन्द्रिकावितरणं विद्यावधूजीवनम् ।

आनन्दाम्बुधिवर्द्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्व्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसंकीर्त्तनं ॥ १ ॥
नाम्नामकारि बहुधा निजसर्व्वशक्ति
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः ।
एतादृशी तव कृपा भगवन्! ममापि
दुर्द्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः ॥ २ ॥
तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना ।
अमानिना मानदेन कीर्त्तनीयः सदा हरिः ॥ ३ ॥
न धनं न जनं न सुन्दरीं कवितां वा जगदीश कामये ।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद्भक्तिरहैतुकी त्वयि ॥ ४ ॥
अयि नन्दतनूज! किंकरं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ ।
कृपया तव पादपङ्कजस्थितधूलीसदृशं विचिन्तय ॥ ५ ॥
नयनं गलदश्रुधारया वदनं गद्गदरुद्धया गिरा ।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नाम ग्रहणे भविष्यति ॥ ६ ॥
युगायितं निमिषेण चक्षुषा प्रावृषायितं ।
शून्यायितं जगत्सर्व्वं गोविन्दविरहेण मे ॥ ७ ॥
आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टुमामदर्शनान्मर्म्महतां करोतु वा
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः ।
इति श्री कृष्णचैतन्यमहाप्रभोर्मुखाब्जविगलितं
श्री श्रीशिक्षाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्री श्री जगन्नाथाष्टकम्

कदाचित् कालिन्दीतटविपिन सङ्गीततरलो
मुदाभीरीनारीवदनकमलास्वादमधुपः ।
रमाशम्भु ब्रह्मामरपतिगणेशार्च्चितपदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ १ ॥

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरकटाक्षं विदधते ।
सदा श्रीमद्वृन्दावनवसतिलीलापरिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ३ ॥
महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहजबलभद्रेण बलिना ।
सुभद्रामध्यस्थः सकलसुरसेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ २ ॥
कृपापारावारः सजलजलदश्रेणिरुचिरो
रमावाणीरामः स्फुरदमलपङ्केरुहमुखः ।
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखागीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ४ ॥
रथारूढो गच्छन् पथि मिलितभूदेवपटलैः
स्तुतिप्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः ।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसदयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ५ ॥
परं ब्रह्मापीडः कुवलयदलोत्फुल्लनयनो
निवासी नीलाद्रौ निहितचरणोऽनन्तशिरसि ।
रसानन्दी राधा सरसवपुरालिङ्गनसुखो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ६ ॥
न वै याचे राज्यं न च कनकमाणिक्यविभवं
न याचेऽहं रम्यां सकलजनकाम्यां वरवधूम् ।
सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ७ ॥
हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते !
हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते !

अहो दीनेऽनाथे निहितचरणो निश्चितमिदं
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ८ ॥
जगन्नाथाष्टकं पुण्यं यः पठेत् प्रयतः शुचिः ।
सर्व्वपापविशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति ॥ ९ ॥
इति श्री गौरचन्द्रविनीत श्रीभोजदेवकृत
श्रीजगन्नाथाष्टकं सम्पूर्णम् ।

श्री व्रजराजसुताष्टकम्

नवनीरद निन्दितकान्तिधरं रससागरनागरभूपवरं ।
शुभवङ्किमचारु शिखण्डशिखं भज कृष्णनिधिं व्रजराजसुतं ॥१
भ्रुविशङ्कितवङ्किमशक्रधनुं मुखचन्द्रविनिन्दितकोटिविधुं ।
मृदुमन्दसुहास्यसुभाष्ययुतं भज कृष्णनिधिं व्रजराजसुतं ॥२
सुविकम्पदनङ्गसदङ्गधरं व्रजवासिमनोहरवेशकरं ।
भृशलाञ्छितनीलसरोजदृशं भज कृष्णनिधिं व्रजराजसुतं ॥३
अलकावलिमण्डितभालतटं श्रुतिदोलितमाकरकुण्डलकं ।
कटिवेष्टितपीतपटं सुधटं भज कृष्णनिधिं व्रजराजसुतं ॥४॥
कलनूपुरराजितचारुपदं मणिरञ्जितगञ्जितभृङ्गमदं ।
ध्वजवज्रझषाङ्कितपादयुगं भज कृष्णनिधिं व्रजराजसुतं ॥५॥
भृशचन्दनचर्चितचारुतनुं मणिकौस्तुभगर्हितभानु तनुं ।
व्रजबालशिरोमणिरूपधृतं भज कृष्णनिधिं व्रजराजसुतं ॥७॥
सुरवृन्दसुवन्द्य मुकुन्दहरिं सुरनाथशिरोमणि सर्व्वगुरुं ।
गिरिधारि मुरारि पुरारिपरं भज कृष्णनिधिं व्रजराजसुतं ।६॥
वृषभानुसुतावरकेलिपरं रसराजशिरोमणिवेशधरं ।
जगदीश्वरमीश्वरमीड्यवरं भज कृष्णनिधिं व्रजराजसुतं ॥८
इति श्रीव्रजराजसुताष्टक
सम्पूर्णम् ॥

श्री श्री कुंजविहार्य्यष्टकम्

इन्द्रनीलमणिमञ्जुलवर्णः फुल्लनीपकुसुमाञ्चितकर्णः ।
कृष्णलाभिरकिशोररसि हारी सुन्दरो जयति कुंजविहारी ॥
राधिकावदनचन्द्रचकोरः सर्व्ववल्लववधूधृतिचौरः ।
चर्च्चरीचतुरताञ्चितचारी चारुतो जयति कुंजविहारी ॥
सर्वतः प्रथितकौलिकपर्व्व ध्वंसनेन हृत वासवगर्व्वः ।
गोष्ठरक्षणकृते गिरिधारी लीलया जयति कुंजविहारी ॥३
रागमण्डल विभूषितवंशी विभ्रमेण मदनोत्सवशंसी ।
स्तूयमान चरितः शुकसारी श्रेणिभिर्जयति कुंजविहारी ॥४
शातकुम्भरुचिहारिदुकूलः केकिचन्द्रकविराजित चूलः ।
नव्ययौवनलसद्व्रजनारी रञ्जनो जयति कुंजबिहारी ॥५॥
स्थासकीकृतसुगन्धिपटीरः स्वर्णकाञ्चिपरिशोभिकटीरः ।
राधिकोन्नत पयोधरधारी कुञ्जरो जयति कुञ्जविहारी ॥६॥
गैरधातुतिलकोज्वलभालः केलिचञ्चलितचम्पकमालः ।
अद्रिकन्दरगृहेष्वभिसारी सुभ्रुवां जयति कुंजविहारी ॥७॥
विभ्रमोच्चलदृगञ्चलनृत्य क्षिप्तगोपललनाखिलकृत्यः ।
प्रेममत्त वृषभानुकुमारी नागरो जयति कुञ्जविहारी ॥८॥
अष्टकं मधुरकुंजविहारि क्रीड़या पठति यः किल हारि ।
स प्रयाति विलसत् परभागं तस्य पादकमलार्च्चनरागम् ॥९॥
इति श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितं श्रीकुञ्जविहार्य्यष्टकं समाप्तम् ।

हरिकुसुमस्तवकं

गतिगञ्जितमत्ततरद्विरदं रदनिन्दितसुन्दरकुन्दमदं ।
मदनार्बुदरूपमदघ्नरुचिं रुचिरस्मितमञ्जरीमञ्जुमुखम् ॥१
मुखरीकृतवेणुहृतप्रमदं मदवल्गितलोचनतामरसं ।
रसपूरविकासककेलिपरं परमार्थपरायणलोकगतिम् ॥२

गतिमण्डितयामुनतीरभुवं भुवनेश्वरवन्दितचारुपदम् ।
पदकोज्वलकोमलकंठरुचं रचकान्तविशेषक वल्गुतरम् ॥३॥
तरलप्रचलाकपरीतशिखं शिखरीन्द्रधृतिप्रतिपन्नभुजम् ।
भुजंगेन्द्रफणांगणरंगधरं धरकन्दरखेलनलुब्धहृदम् ॥४॥
हृदयालुसुहृद्गणदत्तमहं महनीयकथाकुलधूतकलिम् ।
कलिताखिलदुर्जयवाहुवलं बलवल्लवशावकसंनिहितम् ॥५॥
हितसाधुसमीहित कल्पतरुं तरुणीगणनूतनपुष्पशरम् ।
शरणागत रक्षणदक्षतमं तमसाधुकुलोत्पलचण्डकरम् ॥६॥
करपद्ममिलत्कुसुमस्तवकं वकदानवमत्तकरीन्द्रहरिम् ।
हरिणीगणहारकवेणुकलं कलकंठरवोज्वलकंठरणम् ॥७॥
रणखण्डितदुर्जनपुण्यजनं जनमंगलकीर्त्तिलताप्रभवम् ।
भवसागरकुम्भजनामगुणं गुणसंगविवर्जित भक्तगणम् ॥८॥
गणनातिगदिव्यगुणोल्लसितं सितरश्मि सहोदरवक्त्रवरम् ।
वरदृप्त वृषासुर दावघनं घनविभ्रमवेश विहारमयम् ॥९॥
मयपुत्रतमः क्षयपूर्णविधुं विधुरीकृतदानवराजकुलम् ।
... ... कुलनन्दनमत्र नमामि हरिम् ॥१०॥
उरसि परिस्फुरदिन्दिरमिन्दिन्दिरमन्दिरस्रजोल्लसितम् ।
हरिमंगनातिमंगलमंगलसच्चन्दनं वन्दे ॥११॥

इति श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितं
हरिकुसुमस्तवकं ।

॥ श्री श्रीमद्गौरचन्द्रविरचितं प्रेमामृतरसायनस्तोत्रम् ॥

नमो व्रजराजकुमाराय ।
एकदा कृष्णविरहध्यायन्ती प्रियसंगमम् ।
मनोवाष्पनिरासार्थं जल्पतीह मुहुर्मुहुः ॥

गोविन्दो गोकुलोत्सवः ।
कृष्णः कृष्णेन्दुरानन्दो ...
गोपालो गोपगोपेशो वल्लवेन्द्रो व्रजेश्वरः ॥
प्रत्यहं नूतनतरस्तरुणानन्दविग्रहः ।
आनन्दैकसुखस्वामी सन्तोषाक्षयकोषभूः ॥
आभीरिकानवानन्दः परमानन्दकन्दलः ।
वृन्दावनकलानाथो व्रजानन्दनवांकुरः ॥
नयनानन्दकुसुमो व्रजभाग्यफलोदयः ।
अतिनिर्मलसुखदो मोहनो मधुरद्युतिः ॥
सुधानिर्यासनिचयः सुन्दरः श्यामलाकृतिः ।
नवयौवनसम्पन्नः श्याममाधुर्यरसाकरः ॥
इन्द्रनीलमणिस्वच्छो दलिताञ्जनचिक्कणः ।
इन्दीवरसुखस्पर्शो नीरदस्निग्धसुन्दरः ॥
कर्पूरागुरुकस्तूरीकुंकुमाक्तांगधूसरः ।
सुकुञ्चितकचन्यस्तोल्लसच्चारुशिखण्डकः ॥
मत्तालिविलसत्पारिजातपुष्पावतंसकः ।
आननेन्दुजितानन्तपूर्णशारदचन्द्रमाः ॥
श्रीमल्ललाटपाटीरतिलकालकरञ्जितः ।
लोलोन्नतभ्रूविलासो मदालसविलोचनः ॥
आकर्णरक्तसौन्दर्यलहरीदृष्टिमन्थरः ।
घूर्णायमाननयनः साचीक्षणविचक्षणः ॥
अपांगेंगितसौभाग्यतरलीकृतचेतनः ।
ईषन्मुद्रितलोलाक्षः सुनासापुटसुन्दरः ॥
गण्डप्रान्तोल्लसत्स्वर्णमकराकृतिकुण्डलः ।
प्रसन्नानन्दवदनो जगदाह्लादकारकः ॥
सुस्मेरामृतसौन्दर्यप्रकाशीकृतदिङ्मुखः ।
सिन्दुरारुणसुस्निग्धमाणिक्यदशनच्छदः ॥

पीयूषाधिकमाध्वीकसूक्तिश्रुतिरसायनः ।
त्रिभंगललितस्तिर्यग्ग्रीवस्त्रैलोक्यमोहनः ॥
कुञ्चिताधरसंसक्तकूजद्वेणुविनोदकः ।
कंकणांगदकेयूरमुद्रिकादिलसद्भुजः ॥
स्वर्णसूत्रसुविन्यस्तकौस्तुभामुक्तकन्धरः ।
मुक्ताहारोल्लसद्वक्षाः स्फुरच्छ्रीवत्सलाञ्छनः ॥
आपीनहृदयो नीपमालावान् बन्धुरोदरः ।
संवीतपीतवसनो रसनाविलसत्कटिः ॥
अन्तरीणघटीबन्धः प्रमदान्दोलिताञ्चलः ।
अरविन्दपदद्वन्द्वक्वणत्कारितनूपुरः ॥
पल्लवारुणमाधुर्य्यसुकुमारपदाम्बुजः ।
नखचन्द्रजिताशेषदर्पनेन्दुमणिप्रभः ॥
ध्वजवज्राङ्कुशाम्भोजराजच्चरणपल्लवः ।
त्रैलोक्याद्भुतसौन्दर्यपरीपाकमनोहरः ॥
साक्षात्केलिकलामूर्त्तिः परिहासरसार्णवः ।
यमुनोपवनश्रेणीविलासी व्रजनागरः ॥
गोपांगनाङ्गनासक्तो वृन्दारण्यपुरन्दरः ।
आभीरनागरीप्राणनायकः कामशेखरः ॥
यमुनानाविको गोपीपारावारकृतोद्यमः ।
राधावरोधनरतः कदम्बवनमन्दिरः ॥
व्रजयोषित्सदाहृदयो गोपीलोचनतारकः ।
जीवनानन्दरसिकः पूर्णानन्दकुतूहलः ॥
गोपीकाकुचकस्तूरीपंकिलकेलिलालसः ।
अलक्षितकुटीरस्थो राधासर्वस्वसम्पुटः ।
वल्लवीवदनाम्भोजमधुमत्तमधुव्रतः ।
निगूढरसवैदग्ध्यचित्ताह्लादकलानिधिः ॥

कालिन्दीपुलिनानन्दी क्रीड़ाताण्डवपण्डितः ।
आभीरिकाजनानंगरंगभूमिसुधाकरः ॥
विदग्धगोपवनिताचित्ताकूतविनोदकः ।
नवोपायनपाणिस्थगोपनारीगणावृतः ॥
वाञ्छाकल्पतरुः कामकलारसशिरोमणिः ।
कोटिकन्दर्पलावण्यः कोटीन्दुजलितद्युतिः ।
जगत्त्रयमनोमोहकरो मन्मथमन्मथः ।
गोपसीमन्तिनीशश्वद्भावापेक्षापरायणः ॥
नवीनमधुरस्नेह प्रेयसी प्रेम सञ्चयः ।
गोपीमनोरथाक्रान्तनाट्यलीलाविशारदः ॥
प्रत्यंगरभसावेशः प्रमदाप्राणवल्लभः ।
रासोल्लास मदोन्मत्तो राधिकारतिलम्पटः ॥
हेलालीलारतिश्रान्तिस्वेदांकुरचिताननः ।
गोपीकांकालसः श्रीमान्मलयानिलसेवितः ॥
इत्येवं प्राणनाथस्य प्रेमामृतरसायनम् ।
यः पठेच्छ्रावयेद्वापि स प्रेम्नि प्रमिलेद्ध्रुवम् ॥
इति श्रीमद्गौरचन्द्रविरचितं प्रेमामृतरसायनं स्तोत्रम् ।

श्रीमुकुन्दमुक्तावली

नवजलधरवर्णं चम्पकोद्भासिकर्णम्
विकसितनलिनास्यं विस्फुरन्मन्दहास्यम् ।
कनकरुचिदुकूलं चारुवर्हावचूलं
कमपि निखिलसारं नौमि गोपीकुमारम् ॥१॥
मुखजितशरदिन्दुः केलिलावण्यसिन्धुः
करविनिहितकन्दुर्वल्लवीप्राणबन्धुः ।

वपुरपसृतरेणुः कक्षनिःक्षिप्तवेणु
र्वचनवशगधेनुः पातु मां नन्दसूनुः ॥ २ ॥
ध्वस्तदुष्टशंखचूड वल्लवीकुलोपगूढ़
भक्तमानसाधिरूढ़ नीलकंठपिच्छचूड ।
कंठलम्बिमञ्जुगुञ्ज केलिलब्धरम्यकुञ्ज
कर्णवर्तिफुल्लकुन्द पाहि देव मां मुकुन्द ॥ ३ ॥
यज्ञभङ्गरुष्टशक्रनुन्नघोरमेघचक्र
वृष्टिपूरखिन्नगोपवीक्षणोपजातकोप ! ।
क्षिप्तसव्यहस्तपद्मधारितोच्चशैलसद्म
गुप्तगोष्ठ रक्ष रक्ष मां तथाद्य पङ्कजाक्ष ॥ ४ ॥
मुक्ताहारं दधदुडुचक्राकारं सारं गोपीमनसि मनोजारोपि ।
कोपी कंसे खलनिकुरम्बोत्तंसे वंशे रंगी दिशतु रतिं नः शार्ङ्गी ॥
नीलोद्दामा जलधरमालाश्यामा क्षामाः कामादभिरचयन्तीरामाः
सा मामव्यादखिलमुनीनां स्तव्यागव्यापूर्तिः प्रभुरघशत्रोर्मूर्तिः॥
पर्ववर्तुल शर्वरीपतिगर्वरीतिहराननं
नन्दनन्दनमिन्दिराकृतवन्दनं धृतचन्दनम् ।
सुन्दरीरतिमन्दिरीकृतकन्दरं धृतमन्दरं
कुण्डलद्युतिमण्डलप्लुतकंधरं भज सुन्दरम् ॥ ७ ॥
गोकुलांगनमंगलं कृतपूतना भवमोचनं
कुन्दसुन्दरदन्तमम्बुजवृन्दवन्दितलोचनम् ।
सौरभाकरफुल्लपुष्करविस्फुरत्करपल्लवं
दैवत व्रज दुर्लभं भज वल्लवीकुलवल्लभम् ॥ ८ ॥
तुण्डकान्तिदण्डितोरुपाण्डुरांशुमण्डलं
गण्डपालिताण्डवालिशालिरत्नकुण्डलम् ।
फुल्लपुण्डरीकखण्डक्लृप्तमाल्यमण्डनं
चण्डबाहुदण्डमत्र नौमि कंसखण्डनम् ॥ ९ ॥

उत्तरङ्गदङ्गरागसंगमातिपिङ्गल
स्तुङ्गशृंगसङ्गिपाणिरङ्गनातिमंगलः ।
दिग्विलासमल्लिहासिकीर्त्तिवल्लिपल्लव
स्त्वां स पातु फुल्लचारुचिल्लिरद्य बल्लवः ॥१८॥
इन्द्रनिवारं व्रजपतिवारं निर्धुतवारं हृतघनवारम् ।
रक्षितगोत्रं प्रीणितगोत्रं त्वां धृतगोत्रं नौमि सगोत्रम् ॥११॥
कंसमहीपतिहृततशूलं सन्तत सेवितयामुनकूलम् ।
वन्दे सुन्दर चन्द्रकचूलं त्वामहमखिलचराचरमूलम् ॥१२॥
मलयजरुचिरस्तनुजितमुदिरः पालितविवुधस्तोषितवसुधः ।
मामतिरसिकः केलिभिरधिकः सितसुभगरदः कृपयतु वरदः ॥
उररीकृतमुरलीरुतभङ्गं नवजलधरकिरणोल्लसदङ्गम् ।
युवतिहृदयधृतमदनतरङ्गं प्रणमत यामुनतटकुतरङ्गम् ॥
नवाम्भोदनीलं जगत्तोषिशीलं मुखासंगिवंशं शिखण्डावतंसम्
करालम्बिवेत्रं वराम्भोजनेत्रं धृतस्फीतगुञ्जं भजे लब्धकुंजम्॥
हृतक्षोणिभारं कृतक्लेशहारं जगद्गीतसारं महारत्नहारम् ।
मृदुश्यामकेशं लसद्वन्यवेशं कृपाभिनिदेशं भजे वल्लवेशम् ॥
उल्लसद्वल्लवीवाससां तस्करस्तेजसा निर्जितप्रस्फुरद्भास्करः ।
पीनदोः स्तम्भभोरुल्लसच्चन्दनः पातुवः सर्वतो देवकीनन्दनः ॥
संसृतेस्तारकं तं गवां चारकं वेणुना मण्डितं क्रीड़ने पण्डितं ।
धातुभिर्वेषिणं दानवद्वेषिणं चिन्तय स्वामिनं वल्लवीकामिनम् ॥१८
उपात्तकवलं परागशवलं मदेकशरणं सरोजचरणं ।
अरिष्टदलनं विकृष्टललनं नमामि समहं सदैव तमहम् ॥
विहारसदनं मनोज्ञरदनं प्रणीतमदनं शशांकबदनम् ।
उरस्थ कमलं यशोभिरमलं करात्तकमलं भजस्व तमलम् ॥२०॥
दुष्टध्वांसः कर्णिकारवतंसः खेलद्वंशीपञ्चमध्वानशंसी ।
गोपीचेतः केलिभङ्गीनिकेतः पातु स्वैरी हन्त वः कंसवैरी ॥

वृन्दाटव्यां केलिमानन्दनव्यां कुर्व्वंन्नारीचित्तकन्दर्पधारी ।
नर्म्मोद्गारी मां दकूलापहारी नीपारूढ़ः पातु वर्हावचूडः ॥२२
रुचिरनखे रचय सखे वलितरतिं भजनततिम् ।
त्वमविरतिस्त्वरितगतिर्नतशरणे हरिचरणे ॥२३॥
रुचिरपटः पुलिननटः पशुपपतिगुणवसतिः ।
स मम शुचिर्जलदरुचिर्मनसि परिस्फुरतु हरिः ॥२४॥
केलिविहितयमलार्जुनभञ्जन
सुललितचरितनिखिलजनरञ्जन ।
लोचननर्त्तकजितचलखञ्जन
मां परिपालय कालियगञ्जन ! ॥२५॥
भुवनविसृत्वरमहिमाडम्बर
विरचित निखिल खलोत्करसम्वर ।
वितर यशोदातनय वरं वर
मभिलषितं मे धृतपीताम्बर ॥२६॥
चिकुरकरम्बित चारुशिखण्डं
भालविनिर्जित वरशशिखण्डम् ।
रदरुचिनिर्धुतमुद्रितकुन्दं
कुरुत बुधा हृदि सपदि मुकुन्दम् ॥२७॥
यः परिरक्षितसुरभीलक्षस्तदपि च सुरभीमर्दनदक्षः ।
मुरलीवादनखुरलीशाली स दिशतु कुशलं तव वनमाली ॥
रमितनिखिलडिम्भे वेणुपीतोष्ठविम्बे
हतखलनिकुरम्बे वल्लवीदत्तचुम्बे ।
भवतु महितनन्दे तत्र वः केलिकन्दे
जगदविरलतुन्दे भक्तिरुर्वी मुकुन्दे ॥२८॥
पशुपयुवतिगोष्ठीचुम्बितश्रीमदोष्ठी
स्मरतरलितदृष्टिर्निर्म्मितानन्दवृष्टिः ।

नवजलधरधामा पातु वः कृष्णनामा
भुवनमधुरवेषा मालिनी मूर्तिरेषा ॥३०॥
इति श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचिता
मुकुन्दमुक्तावली समाप्ता

॥ अथ श्रीराधिकाष्टकम् ॥

रसवलितमृगाक्षी मौलिमाणिक्यलक्ष्मीः
प्रमुदितमुरवैरि प्रेमवापीमराली ।
व्रजवरवृषभाणोः पुण्यगीर्व्वाणवल्ली
स्नपयति निजदास्ये राधिका मां कदानु ॥१॥
स्फुरदरुणदुकूलद्योतितोद्यन्नितम्ब
स्थलमभिवरकाञ्ची लास्यमुल्लासयन्ती ।
कुचकलस विलासस्फीतमुक्तासरश्रीः
स्नपयति निजदास्ये राधिका मां कदानु ॥२॥
सरसिजवरगर्भाखर्व्वकान्तिः समुद्यत्
तरुणिमघनसाराश्लिष्टकैशोरसीधुः ।
दरविकशित हासस्यन्दिविम्बाधराग्रा
स्नपयति निजदास्ये राधिका मां कदानु ॥३॥
व्रजकुलमहिलानां प्राणभूताखिलानां
पशुपपतिगृहिण्याः कृष्णवत्प्रेमपात्रम् ।
सुललितललितान्तः स्नेहफुल्लान्तरात्मा
स्नपयति निजदास्ये राधिका मां कदानु ॥४॥
निरवधि सविशाखा शाखियूथ प्रसूनैः
स्रजमिह रचयन्ती वैजयन्तीं वनान्ते ।
अघविजयवरोरः प्रेयसी श्रेयसी सा
स्नपयति निजदास्ये राधिका मां कदानु ॥५॥

प्रकटितनिजवासं स्निग्धवेणुप्रणादै
द्रुतगति हरिमारात् प्राप्य कुञ्जे स्मिताक्षी ।
श्रवणकुहरकण्डूं तन्वती नम्रवक्त्रा
स्नपयति निजदास्ये राधिका मां कदानु ॥ ७ ॥
अमलकमलराजि स्पर्शिवातप्रशीते
निज सरसि निदाघे सायमुल्लासिनीयम् ।
परिजनगणयुक्ता क्रीडयन्ती बकारिं
स्नपयति निजदास्ये राधिका मां कदानु ॥ ८ ॥
अति चटुलतरं तं काननान्तर्म्मिलन्तं
व्रजनृपतिकुमारं वीक्ष्य शङ्काकुलाक्षी,
मधुर मृदुवचोभिः संस्तुता नेत्रभंग्या
स्नपयति निजदास्ये राधिका मां कदानु ॥ ६ ॥
पठति विमलचेता मृष्टराधाष्टकं यः
परिहृत निखिलाशासन्ततिः कातरः सन् ।
पशुपपतिकुमारः काममामोदितस्तं
निजजन गणमध्ये राधिकायास्तनोति ॥ ६ ॥
इति श्रीमद्रघुनाथगोस्वामि विरचितं
श्री राधिकाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

—[❀]—

॥ श्री राधिकाष्टकम् ॥

कुंकुमाक्त-काञ्चनाब्जगर्व्वहारि गौरभा
पीतनाञ्चिताब्जगन्धकीर्त्तिनिन्दिसौरभा
बल्लवेशसूनु सर्व्व वाञ्छितार्थसाधिका
महात्म पादपद्म दास्यदास्तु राधिका ॥ १ ॥
कौरविन्द कान्ति निन्दि चित्र पट्ट शाटिका
कृष्ण मत्त भृंग केलि फुल्ल पुष्पवाटिका

कृष्णनित्यसंगमार्थ पद्मबन्धुराधिका
महामात्म पादपद्म दास्यदास्तु राधिका ॥ २ ॥
सौकुमार्य्यसृष्टपल्लवालिकीर्त्तिनिग्रहा
चन्द्र चन्दनोत्पलेन्दु सेव्यशीतविग्रहा ।
स्वाभिमर्ष वल्लवीश कामताप बाधिका
महामात्मपादपद्म दास्यदास्तु राधिका ॥ ३ ॥
विश्वबन्ध्य यौवताभिवन्दिताभि या रमा
रूप नव्य यौवनादि सम्पदा न यत्समा ।
शील हार्द लीलया च सा यतोऽस्ति नाधिका
महामात्म पादपद्म दास्यदास्तु राधिका ॥ ४ ॥
रास लास्य गीत नर्म्म सत्कलालिपण्डिता
प्रेमरम्य रूपवेशसद्गुणालिमण्डिता
विश्वनव्यगोप योषिदालितोऽपि याधिका
महामात्म पादपद्म दास्यदास्तु राधिका ॥ ५ ॥
नित्यनव्य रूप केलि कृष्ण भाव सम्पदा
कृष्ण रागबन्ध गोप यौवतेषु कम्पदा ।
कृष्ण रूप वेश केलि लग्न सत्समाधिका
महामात्म पादपद्म दास्यदाऽस्तु राधिका ॥ ६ ॥
स्वेद कम्प कण्टकाश्रु गद्गदादिसञ्चिता
मर्ष हर्ष वामतादि भाव भूषणाञ्चिता ।
कृष्ण नेत्र तोषि रत्न मण्डनालि याधिका
महामात्म पादपद्म दास्यदास्तु राधिका ॥ ७ ॥
या क्षणार्द्धकृष्णविप्रयोगसन्ततोदिता-
नेक दैन्य चापलादि भाववृन्द मोदिता
यत्न लब्ध कृष्ण संग निर्गताखिलाधिका
महामात्म पादपद्म दास्यदास्तु राधिका ॥ ८ ॥

अष्टकेन यस्त्वनेन नौति कृष्णवल्लभां
दर्शनेऽपि शैलजादियोषितालि दुर्लभाम् ।
कृष्णसंगनन्दितात्मदास्यसीधुभाजनं
तत्करोति नन्दितालि सञ्चयाशुभाजनम् ॥ ६ ॥

इति श्री कविराजकृष्णदासगोस्वामि
विरचितं श्रीराधिकाष्टकं
सम्पूर्णम् ॥

श्री चाटुपुष्पाञ्जलिः ॥

नवगोरोचनागौरीं प्रवरेन्दीवराम्बरां ।
मणिस्तवकविद्योति वेणीव्यालांगनाफणाम् ॥ १ ॥
उपमान घटामानप्रहारिमुखमण्डलां ।
नवेन्दुनिन्दिभालोद्यत्कस्तुरीतिलकश्रियम् ॥ २ ॥
भ्रूजितानङ्गकोदण्डां लोलनीलालकावलिं ।
कज्ज्वलोज्ज्वलताराजच्चकोरीचारुलोचनाम् ॥ ३ ॥
तिलपुष्पाभनासाग्रविराजद्वरमौक्तिकां ।
अधरोद्धूतबन्धूकां कुन्दालीबन्धुरद्विजाम् ॥ ४ ॥
सरत्नस्वर्णराजीवकर्णिकाकृतकर्णिकां ।
कस्तूरीबिन्दुचिबुकां रत्नग्रैवेयकोज्ज्वलाम् ॥ ५ ॥
दिव्यांगदपरिष्वंगलसद्भुजमृणालिकां ।
वलारिरत्नवलय कलालम्बकलाबिकाम् ॥ ६ ॥
रत्नांगुरीयकोल्लासि वरांगुलीकराम्बुजां ।
मनोहरमहाहार विहारि कुचकुड्मलाम् ॥ ७ ॥
रोमालिभुजगीमूर्द्धरत्नाभतरलाञ्चितां ।
वलित्रयीलतावद्ध क्षीणभंगुरमध्यमाम् ॥ ८ ॥

मणिसारसनाधार विस्फारश्रोणिरोधसं ।
मणिसारसनाधार विस्फारश्रोणिरोधसं ।

हेमरम्भामदारम्भस्तम्भनोरुयुगाकृतिम् ॥ ९ ॥

जानुद्युतिजितक्षुल्लपीतरत्नसमुद्गकां ।
शरच्छ्रीरजनीराज्य मञ्जीरविरणत्पदाम् ॥१०॥

राकेन्दु कोटि सौन्दर्य्य जैत्रपादनखद्युतिं ।
अष्टाभिः सात्विकैर्भावैराकुलीकृतविग्रहाम् ॥११॥

मुकुन्दाङ्गकृतापाङ्गामनङ्गोर्म्मितरङ्गितां ।
त्वामारब्धप्रियानन्दां वन्दे वृन्दावनेश्वरि ! ॥१२॥

अयि प्रोद्यन्महाभावमाधुरीविह्वलान्तरे !
अशेषनायिकावस्था प्राकट्याद्भुतचेष्टिते ! ॥१३॥

सर्व्वमाधुर्य्यविञ्छोली निर्म्मञ्छितपदाम्बुजे !
इन्दिरामृग्यसौन्दर्य्य स्फुरदंघ्रिनखाञ्चले ! ॥१४॥

गोकुलेन्दुमुखीवृन्दसीमन्तोत्तंसमञ्जरि ! ।
ललितादिसखीयूथ जीवातुस्मितकोरके ! ॥१५॥

चटुलापांगमाधुर्य्य बिन्दून्मादितमाधवे ! ।
तातपाद यशः स्तोम कैरवानन्दचन्द्रिके ! ॥१६॥

अपारकरुणापूर पूरितान्तर्मनोह्रदे ! ।
प्रसीदास्मिन् जने देवि ! निजदास्यस्पृहाजुषि ॥

कच्चित् त्वं चाटुपटुना तेन गोष्ठेन्द्रसूनुना ।
प्रार्थ्यमान चलापांग प्रसादाद्द्रक्ष्यसे मया ॥१८॥

त्वां साधुमाधवीपुष्पैर्माधवेन कलाविदा ।
प्रसाध्यमानां स्विद्यन्तीं वीजयिष्याम्यहं कदा ॥१९॥

केलिविस्रंसिनो वक्रकेशबृन्दस्य सुन्दरि !
संस्काराय कदा देवि ! जनमेतं निदेक्ष्यसि ॥२०॥

कदा बिम्बोष्ठि ! ताम्बूलं मया तव मुखाम्बुजे ।
अर्प्यमानं व्रजाधीशसूनुराच्छिद्य भोक्ष्यते ॥२१॥

व्रजराजकुमारवल्लभाकुलसीमन्तमणि ! प्रसीद मे ।
परिवारगणस्य ते यथा पदवी मे न दवीयसी भवेत ॥२२॥

करुणां मुहुरर्थये परां तव वृन्दावनचक्रवर्त्तिनि !
अपि केशिरिपोर्यया भवेत्स चाटुप्रार्थनभाजनं जनः ॥२३॥

इमं वृन्दावनेश्वर्य्याः जनो यः पठति स्तवं ।
चाटु पुष्पाञ्जलि नाम स स्यादस्याः कृपास्पदम् ॥२४॥

इति श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितः
चाटुपुष्पाञ्जलिः समाप्तः ॥

श्री राधास्तोत्रम्

किं तत् गुह्यतरं ब्रह्मन् यं चिन्त्यमखिलेश्वरैः ।
तन्मे ब्रूहि सुतत्त्वज्ञ योगेशमपि वत्सल ॥

श्रीब्रह्मोवाच ।

शृणु गुह्यतमं तात नारायणमुखाच्छ्रुतम् ।
सर्वदा पूजिता देवी राधा वृन्दावने वने ॥

राधा विश्लेषतः कृष्णो ह्येकदा प्रेमविह्वलः ।
राधामन्त्रं जपन् ध्यायन् राधां सर्व्वत्र पश्यति ॥

ओं अस्य श्रीराधास्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि रनुष्टुप् छन्दः श्रीराधा देवता क्लीं वीजं ह्रीं शक्तिः श्रीराधाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

गृहे राधा वने राधा पृष्ठे राधा पुरः स्थिता ।
यत्र तत्र स्थिता राधा राधैवाराध्यते मया ॥

जिह्वा राधा श्रुतौ राधा नेत्रे राधा हृदि स्थिता ।
सर्व्वांगव्यापिनी राधा राधैवाराध्यते मया ॥

पूजा राधा जपे राधा राधिका भोजने गतौ ।
रात्रौ राधा दिवा राधा राधैवाराध्यते मया ॥

माधुर्य्ये मधुरा राधा महत्वे राधिका गुरुः ।
सौन्दर्य्ये सुन्दरी राधा राधैवाराध्यते मया ॥
राधारससुधासिन्धु राधा सौभाग्यमञ्जरी ।
राधा व्रजांगनामुख्या राधैवाराध्यते मया ॥
राधा पद्मानना पद्मा पद्मोद्भवसमुद्भवा ।
पद्मविस्वार्चिता मुख्या राधैवाराध्यते मया ॥
राधा कृष्णात्मिका नित्यं कृष्णो राधात्मिको ध्रुवम् ।
वृन्दावनेश्वरी राधा राधैवाराध्यते मया ॥
जिह्वाग्रे राधिकानाम नेत्राग्रे राधिकातनुः ।
कर्णाग्रे राधिकाकीर्त्तिर्मनोग्रे राधिकामनुः ॥
कृष्णेन सुपीतं स्तोत्रं श्री राधाप्रीतये परम् ।
यः पठेत् प्रयतो नित्यं राधाकृष्णप्रियो भवेत् ॥

इति श्री ब्र० पु० राधास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्री राधिकायाः
प्रेमाम्भोजमरन्दाख्यस्तवराजः ॥

महाभावोज्वलचिन्ता रत्नोद्भावितविग्रहां ।
सखीप्रणयसद्गन्धवरोद्वर्त्तन सुप्रभाम् ॥ १ ॥
कारुण्यामृतवीचिभिस्तारुण्यामृतधारया ।
लावण्यामृतवन्याभिः स्नपितां ग्लपितेन्दिराम् ॥ २ ॥
ह्री पट्टवस्त्रगुप्तांगीं सौन्दर्य्यघुसृणाञ्चितां ।
श्यामलोज्वलकस्तूरी विचित्रितकलेवराम् ॥ ३ ॥
कम्पाश्रु पुलकस्तम्भ स्वेद गद्गदरक्तता ।
उन्मादो जाड्यमित्येतै रत्नैर्नवभिरुत्तमैः ॥ ४ ॥
क्लृप्तालंकृतिसंश्लिष्टां गुणालीं पुष्पमालिनीम् ।
धीराधीरात्व सद्वासपटवासैः परिष्कृताम् ॥ ५ ॥

प्रच्छन्नमानधम्मिल्लां सौभाग्यतिलकोज्वलां ।
कृष्णनाम यशः श्रावावतंसोल्लासिकर्णिकाम् ॥ ६ ॥
रागताम्बूलरक्तोष्ठीं प्रेमकौटिल्यकज्जलां ।
नर्म्मभाषितनिःस्यन्दस्मितकर्पूरवासिताम् ॥ ७ ॥
सौरभान्तः पुरे गर्व्वपर्य्यंकोपरि लीलया ।
निविष्टं प्रेमवैचित्त्य विचलत्तरलाञ्चिताम् ॥ ८ ॥
प्रणयक्रोधसच्चोलीबन्धगुप्तीकृतस्तनां ।
सपत्नी-वक्त्र हृच्छोषि यशः श्रीकच्छपीवराम् ॥ ९ ॥
मध्यतान्मसखीस्कन्ध लीलान्यस्तकराम्बुजां ।
श्यामां श्याम स्मरामोदमधूली परिवेशिकाम् ॥१०॥
त्वां नत्वा याचते धृत्वा तृणं दन्तैरयं जनः ।
स्वदास्यामृतसेकेन जीवयामूं सुदुःखितम् ॥
न मुञ्चेच्छरणायातमपि दुष्टं दयामयः ।
अतो गान्धर्व्विके ! हाहा मुञ्चैनं नैव तादृशम् ॥१२॥
प्रेमाम्भोजमरन्दाख्यं स्तवराजमिमं जनः ।
श्री राधिका कृपाहेतुं पठंस्तद्दास्यमाप्नुयात् ॥१३॥

इति श्रीमद्रघुनाथगोस्वामि विरचितःश्रीराधिकायाः
प्रेमाम्भोजमरन्दाख्य स्तवराजः
समाप्तः

अथ प्रेमाम्भोजमरन्दाख्यस्तवराजस्य भाषा

महाभाव सोई जु है चिंतामणि गणराज ।
पूरण ईछा कृष्ण की करैं यही जिहि काज ॥
महाभाव चिन्तामणि सु राधाको जु स्वरूप ।
ललितादिक सहचरी तिहि कायव्यूह जु रूप ॥

कृष्ण नेह राधाजु प्रति उबटन अंग सुवास।
प्रति सुगन्ध तातें जु वपु-उज्वल किरण प्रकास॥
कारुण्यामृत धार कौं स्नान प्रथम किय आहि।
तारुण्यामृत नदी कौ स्नान द्वितीय निज ताहि॥
लावण्यामृत पूर मधि ताऊ पर सुस्नान।
निज लज्या स्यामहि करण पट सारी परिधान॥
औ अनुराग जु कृष्ण कौ अरुण वसन विवि सोइ।
प्रणयमान उर कंचुकी आछादन है जोइ॥
सौन्दर्य्य सुकुकुंम सखी प्रणय सु चन्दन आहि।
स्मित शोभा व कर्पूर त्रय अंग विलेपन ताहि॥
उज्वलरस श्रीकृष्ण कौ मृगमद भर है सोय।
सवै विचित्रित अंग तिहि तिही सु मृगमद होय॥
वाम्य मान प्रच्छन्न है केशपास विन्यास।
धीराधीरात्महि जु गुण वहै अंग पटवास॥
रागहि वीरा रंग करि अधर मधुर अति लाल।
प्रेम कुटिलता नेत्र युग अंजन परम रसाल॥
सुदीप्त सात्विक भाव हर्षादि संचारी येई

सब भाव अंग सवै भूषण उजास है

किलकिंचितादि भाव विंशति भूषित सदा

गुण गण फूल माला अंगनि प्रकास है।

अलक तिलक चारु उज्वल सौभाग्य प्रेम

वैचित्य रत्न तरल हिये छविरास है

मध्यावय र्थित सोई सखी स्कन्ध करन्यास

कृष्णलीला मनोवृत्ति आली आस पास है

सौरभ निवास निज अंगनि सौभाग्य गर्व

पलका विराजि सदा चाहै कृष्ण संग है

कृष्ण नाम गुण जस तेई श्रवणावतंस

कृष्ण नाम गुण यश वचन तरंग है।

कृष्ण कौ करावै स्याम रस मधु पान सदा

पूर्ण करै कृष्ण के जु सवै काम रंग है

कृष्ण कौ विशुद्ध प्रेम रतन तिहिं आकार

है अनुप गुण गण पूर्ण सब अंग है॥

इति श्रीसुवलश्याम विरचिता चैतन्यचरितामृते स्थिता
प्रेमाम्भोजमरन्दाख्यस्तवराजस्य भाषा

युगलपरिहारस्तोत्रम्

हे सौन्दर्य्य निदान रूपगरिमन् माधुर्य्यलीलानट?
हे आश्चर्य्यविशेषवेशधरहे हे वंशिभूषविभो!
हे वृन्दाटवीभूविलासिनि! लसत्केलिकलाकौमुदी
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर॥१॥
हे हे कृष्ण व्रजेन्द्रनन्दनविभो हे राधिके श्रीमति!
हे श्रीमल्ललितादिसख्यसुखिते! हे श्यामलाप्रेमदे!
हे लीलाकलनात्तलालसलसद् भंगीत्रय प्रेयसि
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर॥२॥
हे पीताम्बरशोभनाब्जकर हे हे नीलचित्राम्बरे!
हे वंशीवटकेलिकौतुकपटो हे कुञ्जगेहेश्वरि!
हे श्रीरासविलास लम्पट गुरो! हे सुन्दरि प्रीतिदे!
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हरं॥३॥
हे जाम्बुनदनिन्दिसुन्दरतनो हे हे घनश्यामल?
हे हे पंकजपत्रनेत्रयुगले हे खञ्जनी लोचन।
हे चूड़ावेणिवद्धचामरकचे हे हारिणि स्वामिनि!
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर॥४॥

हे हे शारदपूर्णचन्द्रवदने हे हे सुरम्यानन ।
हे हे शारदपूर्णचन्द्रवदने ! हे चित्रलेखाञ्चिते ।
हे श्रीवत्सांकितचारुचित्रहृदये ! हे चित्रलेखाञ्चिते ।
हे बिम्बाधरचारुचित्रचिबुके ! भ्रूभंगरम्यालिके
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ ५ ॥
हे हे भानुसुतायशोमतिसुतौ रामानुजश्यामल !
हे नाथ व्रजचन्द्रगोकुलपते हे नागरीनागर !
हे सर्व्वस्व विलासिनीरतिपरे हे केशवामोदिनि !
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ ६ ॥
हे गान्धर्व्वे नटवरवपु र्मन्मथानन्दसिन्धो
हे वैदग्धाधिकमधुरिमाधार हे प्राणनाथ !
हे रामा परमे परात्परपरारम्भे सदोल्लासिनि !
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ ७ ॥
कारुण्यामृतचन्द्र सुन्दरवधुलावण्यलीलानट
हे गोपीगणनाथ गोत्रधर हे गोविन्द गोपाल हे !
हे गौरीगुरु गौरवाखिलगुरो गोपांगनावेष्टिते
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ ८ ॥
हे हे कृपालुचरित व्रजकल्पवृक्ष !
कारुण्यलेशकृत कातरलोकरक्ष ॥
हे कृष्ण हे रमण हे भुवनैकनाथ
हा हा कदातिकरुणा भवतोर्भवेन्मे ॥
इति श्रीमन्महाप्रभु मुखोद्गीर्ण
श्रीयुगलपरिहारस्तोत्रम् ॥

श्री वृन्दावनाष्टकम्

मुकुन्दमुरलीरव श्रवणफुल्लहृद्वल्लरी
कदम्बककरम्बित प्रतिकदम्बकुञ्जान्तरा ।

कलिन्दगिरिनन्दिनी कमल कन्दलान्दोलिना
सुगन्धिरनिलेन मे शरणमस्तु वृन्दाटवी ॥ १ ॥
विकुंठपुर संश्रयाद्विपिनतोऽपि निःश्रेयसा
त्सहस्रगुणितां श्रियं प्रदुहती रसश्रेयसीम् ।
चतुर्मुखमुखैरपि स्पृहिततार्णदेहोद्भवा
जगद्गुरुभिरग्रिमैः शरणमस्तु वृन्दाटवी ॥ २ ॥
अनारत विकस्वरव्रतति पुञ्ज पुष्पावली
विसारिवर सौरभोद्गमरमाचमत्कारिणी ।
अमन्दमकरन्दभृद्विटपिवृन्दवन्दीकृत
द्विरेफकुलवन्दिता शरणमस्तु वृन्दाटवी ॥ ३ ॥
क्षणद्युतिघनश्रियोर्व्रजनवीनयूनोः पदैः
सुवल्गुभिरलंकृता ललितलक्ष्मलक्ष्मीभरैः ।
तयोर्नखरमण्डली शिखरकेलिचर्य्योचिते
र्वृता किशलयांकुरैः शरणमस्तु वृन्दाटवी ॥ ४ ॥
व्रजेन्द्र सखनन्दिनीशुभतराधिकारक्रिया
प्रभावजसुखोत्सव स्फुरितजङ्गम स्थावरा ।
प्रलम्बदमनानुज ध्वनितवंशिकाकाकली
रसज्ञमृगमण्डला शरणमस्तु वृन्दाटवी ॥ ५ ॥
अमन्दमुदिराव्वुर्दाभ्यधिक माधुरी मेदुर
व्रजेन्द्रसुतवीक्षणोन्नटितनीलकण्ठोत्करा ।
दिनेशसुहृदात्मजाकृतनिजाभिमानोल्लस
ल्लताखग.मृगांगना शरणमस्तु वृन्दाटवी ॥ ६ ॥
अगण्य गुननागरी गणगरिष्ठ गान्धर्व्विका
मनोजरणचातुरीपिशुनकुंजपुञ्जोज्वला ।
जगत्रयकलागुरो र्ललितलास्य वल्गत्पद
प्रयोगविधि साक्षिणी शरणमस्तु वृन्दाटवी ॥ ७ ॥

वरिष्ठ हरिदासता पदसमृद्धगोवर्द्धना
मधूद्वह वधूचमत्कृतिनिवासरासस्थला ।
अगूढ़गहनश्रियो मधुरिमव्रजेनोज्वला
व्रजस्य सहजेन मे शरणमस्तु वृन्दाटवी ॥ ८ ॥
इदं निखिलनिष्कुटावलिवरिष्ठवृन्दाटवी
गुणस्मरणकारि यः पठति सुष्ठु पद्याष्टकं ।
वसन्व्यसनमुक्तधीरनिशमत्र सद्वासनः
स पीतवसने वशी रतिमवाप्य विक्रीड़ति ॥ ९ ॥
इति श्रीमद्रूपगोस्वामिभिर्विरचितं
श्री वृन्दावनाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्री यमुनाष्टकम् ॥

भ्रातुरन्तकस्य पत्तनेऽभिपत्तिहारिणी
प्रेक्षयाति पापिनोऽपि पापसिन्धुतारिणी ।
नीरमाधुरीभिरप्यशेषचित्तवन्दिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ १ ॥
हारिवारिधारयाभिमण्डितोरुखाण्डवा
पुण्डरीकमण्डलोद्यदण्डजालिताण्डवा ।
स्नानकामपामरोग्रपापसम्पदन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ २ ॥
शीकराभिमृष्टजन्तुदुर्विपाकमर्द्दिनी
नन्दनन्दनान्तरङ्गभक्तिपूरवर्द्धिनी ।
तीरसंगमाभिलाषिमङ्गलानुबन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ३ ॥
द्वीपचक्रवाकजुष्टसप्तसिन्धुभेदिनी
श्रीमुकुन्दनिर्म्मितोरुदिव्यकेलिवेदिनी ।

कान्तिकन्दलीभिरिन्द्रनीलवृन्दनिन्दिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ४ ॥
माथुरेण मण्डलेन चारुणाभिमण्डिता
प्रेमनद्धवैष्णवाध्ववर्द्धनाय पण्डिता ।
ऊर्म्मिदोर्विलासपद्मनाभपादवन्दिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ५ ॥
रम्यतीररम्भमाणगोकदम्बभूषिता
दिव्यगन्धभाक्कदम्बपुष्पराजिरूषिता ।
नन्दसूनुभक्तसंघ संगमाभिनन्दिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ६ ॥
फुल्लपक्षमल्लिकाक्षहंसलक्षकूजिता
भक्तिविद्धदेवसिद्ध किन्नरालिपूजिता ।
तीरगन्धवाहगन्ध जन्मबन्धरन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ७ ॥
चिद्विलासवारिपूर भूर्भुवः स्वरापिणी
कीर्त्तितापि दुर्म्मदोरुपापमर्म्मतापिनी ।
वल्लवेन्द्रनन्दनांगरागभङ्गगन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी ॥ ८ ॥
तुष्टबुद्धिरष्टकेन निर्म्मलोरुचेष्टितां
त्वामनेन भानुपुत्रि ! सर्वदेववेष्टितां ।
यः स्तवीति वर्द्धयस्व सर्व्वपापमोचने
भक्तिपूरमस्य देवि ! पुण्डरीकलोचने ॥ ९ ॥
इति श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचितं
यमुनाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्री श्रीगोवर्द्धनवासप्रार्थनादशकम्

निजपतिभुजदण्डच्छत्रभावं प्रपद्य
प्रतिहतमदधृष्टोद्दण्डदेवेन्द्रगर्व्व !।
अतुलपृथुलशैलश्रेणिभूप प्रियं मे
निजनिकटनिवासं देहि गोवर्द्धन त्वम् ॥ १ ॥

प्रमदमदनलीलाः कन्दरे कन्दरे ते
रचयति नवयूनोर्द्वन्द्वमस्मिन्नमन्दं ।
इति किल कलनार्थं लग्नकस्तत् द्वयोर्मे
निर्जनिकटनिवासं देहि गोवर्द्धन त्वम् ॥ २ ॥

अनुपममणिवेदी रत्नसिंहासनोर्व्वी
रुहझरदरसानुद्रोणि संघेषु रङ्गैः ।
सहबलसखिभिः संखेलयन् स्वप्रियं मे
निजनिकटनिवासं देहि गोवर्द्धन त्वम् ॥ ३ ॥

रसनिधिनवयूनोः साक्षिणी दानकेले
र्द्युति परिमलविद्धां श्यामवेदीं प्रकाश्य ।
रसिकवरकुलानां मोदमास्फालयन्मे
निजनिकटनिवासं देहि गोवर्द्धन त्वम् ॥ ४ ॥

स्थलजलतलशस्यै भूरुहच्छायया च
प्रदिपदमनुकालं हन्त संवर्द्धयन् गाः ।
त्रिजगति निजगोत्रं सार्थकं ख्यापयन्मे
निजनिकटनिवासं देहि गोवर्द्धन त्वम् ॥ ५ ॥

सुरपतिकृतदीर्घद्रोहतो गोष्ठरक्षां
तव नव गृहरूपस्यान्तरे कुर्व्वतैव ।
अघ-बकरिपुणोच्चैः दत्तमान द्रुतं मे
निर्जनकट निवासं देहि गोवर्द्धन त्वम् ॥ ७ ॥

हरिदयितमपूर्व्वं राधिकाकुण्डमात्म
प्रियसखमिह कण्ठे नर्म्मणालिंग्य गुप्तः ।
नवयुवयुगखेलास्तत्र पश्यन्रहो मे
निर्जनिकट निवासं देहि गोवर्द्धन त्वम् ॥७॥

गिरिनृप हरिदास श्रेणी वर्य्येति नामा-
मृतमिदमुदितं श्रीराधिकावक्त्रचन्द्रात् ।
व्रजनवतिलकत्वे कॢप्तवेदैः स्फुटं मे
निर्जनिकटनिवास देहि गोवर्द्धन त्वम् ॥८॥

निजजनयुत राधाकृष्णमैत्रीरसाक्त
व्रजनरपशुपक्षि व्रातसौख्यैकदातः ।
अगणित करुणत्वान्माधुरी कृत्यतान्तं
निजनिकट निवासं देहि गोवर्द्धन त्वम् ॥६॥

निरुपधिकरुणेन श्रीशचीनन्दनेन
त्वयि कपटिशठोऽपि त्वत्प्रियेणार्पितोऽस्मि ।
इति खलु मम योग्यायोग्यतां तामगृन्हन्
निज्जनिकट निवासं देहि गोवर्द्धन त्वम् ॥१०॥

रसददशकमस्य श्रीलगोवर्द्धनस्य
क्षितिधरकुलभर्त्तुर्यः प्रयत्नादधीते ।
स सपदि सुखदेऽस्मिन् वासमासाद्य साक्षा
च्छुभदयुगलसेवारत्नमाप्नोति तूर्णम् ॥११॥

इति श्रीमद्रघुनाथगोस्वामिविरचितं
श्रीगोवर्द्धनवासप्रार्थनादशकम

श्रीराधाकुण्डाष्टकम् ॥

वृषभदनुजनाशान्नर्म्मधर्म्मोक्तिरंगै
र्निखिलनिजसखीभिर्यत्स्वहस्तेन पूर्णम् ।

प्रकटितमपि वृन्दारण्यराज्ञ्या प्रमोदै
स्तदतिसुरभिराधाकुण्डमेवाश्रयो मे ॥१॥
व्रजभुवि मुरशत्रोः प्रेयसीनां निकामैः
रसुलभमपि तूर्णं प्रेम कल्पद्रुमं तम् ।
जनयति हृदि भूमौ स्नातुरुच्चैः प्रियं य
स्तदतिसुरभिराधाकुण्डमेवाश्रयो मे ॥२॥
अघरिपुरपि यत्नादत्रदेव्याप्रसाद
प्रकरकृतकटाक्षप्राप्तिकामः प्रकामं ।
अनुसरति यदुच्चैः स्नानमेवानुबन्धै
स्तदतिसुरभिराधाकुण्डमेवाश्रयो मे ॥३॥
व्रजभुवनसुधांशोः प्रेमभूमिर्निकामं
व्रजमधुरकिशोरीमौलिरत्नप्रियेव
परिचितमपि नाम्ना यच्च तेनैव तस्या
स्तदतिसुरभिराधाकुण्डमेवाश्रयो मे ॥४॥
अपि जन इह कश्चित् यस्य सेवाप्रसादैः
प्रणय सुरलता स्यात्तस्य गोष्ठेन्द्रसूनोः ।
सपदि किल मदीशादास्य पुष्प प्रशस्या
स्तदति सुरभिराधाकुण्डमेवाश्रयो मे ॥५॥
तटमधुरनिकुञ्जाः क्लृप्तनामान उच्चै-
र्निज परिजनवर्गैं संविभज्याश्रितास्तैः ।
मधुकररुतरम्या यस्य राजन्ति काम्या
स्तदतिसुरभिराधाकुण्डमेवाश्रयो मे ॥६॥
तटभुवि वर वेद्यां यस्य निर्मातिहृद्यां
मधुरमधुरवार्त्तां गोष्ठचन्द्रस्य भंग्या ।
प्रथयति मिथ ईशा प्राणसख्यालिभिः सा
तदतिसुरभिराधाकुण्डमेवाश्रयो मे ॥७॥

अनुदिनमतिरंगैः प्रेममत्तालिसंघै
र्वररसरसिजगन्धै र्हारि वारि प्रपूर्णे ।
विहरत इह यस्मिन् दम्पती तौ प्रमत्तौ
तदति सुरभिराधाकुण्डमेवाश्रयो मे ॥ ८ ॥
अविकलमतिदेव्याश्चारुकुण्डाष्टकं यः
परिपठति तदीयोल्लासि दास्यार्पितात्मा ।
अचिरमिह शरीरे दर्शयत्येव तस्मै
मधुरिपुरतिमोदैः श्लिष्यमाणां प्रियां ताम् ॥९॥

इति श्रीराधाकुण्डाष्टकम्

श्री उपदेशामृतम्

वाचो वेगं मनसः क्रोधवेगं
जिह्वावेगमुदरोपस्थवेगम् ।
एतान् वेगान् यो विसहेत वीरः
सर्व्वामपीमां पृथिवीं स शिष्यात् ॥ १ ॥
अत्याहारः प्रयासश्च प्रजल्पोऽनियमाग्रहः ।
जनसङ्गश्च लौल्यश्च षड्भिर्भक्तिर्विनश्यति ॥ २ ॥
उत्साहान्निश्चयाद्धैर्यात्तत्तत्कर्म्म प्रवर्त्तनात् ।
संगत्यागात् सतो वृत्तेः षड्भिर्भक्तिः प्रसीदति ॥ ३ ॥
ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति ।
भुंक्ते भोजयते चैव षड् विधं प्रीतिलक्षणम् ॥ ४ ॥
कृष्णेति यस्य गिरि तं मनसाद्रियेत
दीक्षास्ति चेत् प्रणतिभिश्च भजन्तमीशम् ।
शुश्रूषया भजनविज्ञमनन्यमन्य
निन्दादिशून्यहृदमीप्सितसंगलब्ध्या ॥ ५ ॥

दृष्टैः स्वभावजनितैर्वपुषस्तु दोषै
र्न प्रकृतत्वमिह भक्तजनस्य पश्येत् ।
गङ्गाम्भसां न खलु बुद्बुदफेनपङ्कै
र्ब्रह्मद्रवत्वमपगच्छति नीरधर्म्मैः ॥ ६ ॥
स्यात् कृष्ण नाम चरितादि सिताप्यविद्या
पित्तोपतप्तरसनस्य न रोचिका नु ।
किन्त्वादरादनुदिनं खलु सैव जुष्टा
स्वाद्वी क्रमाद्भवति तद्गदमूलहन्त्री ॥ ७ ॥
तन्नामरूप चरितादिषु कीर्त्तनानु
स्मृत्योः क्रमेण रसना मनसी नियोज्य ।
तिष्ठन्व्रजे तदनुरागिजनानुगामी
कालं नयेन्निखिलमित्युपदेशसारः ॥ ८ ॥
वैकुण्ठाज्जनिता वरा मधुपुरी तत्रापि रासोत्सवाद्
वृन्दारण्यमुदारपाणिरमणात्तत्रापि गोवर्द्धनः ।
राधाकुण्डमिहापि गोकुलपतेः प्रेमामृताप्लावनात्
कुर्य्यादस्य विराजितो गिरितटे सेवां बिवेकी न कः ॥ ९ ॥
कर्म्मिभ्यः परितो हरेः प्रियतमा ख्याति ययुर्ज्ञानिन
स्तेभ्यो ज्ञानविमुक्त भक्तिपरमाः प्रेमैकनिष्ठा यतः ।
तेभ्यस्ताः पशुपालपङ्कजदृशस्ताभ्योऽपि सा राधिका
प्रेष्ठा तद्वदीयं तदीयसरसी तां नाश्रयेत् कः कृती ॥१०॥
कृष्णस्योच्चैः प्रणयवसतिः प्रेयसीभ्योऽपि राधा
कुण्डञ्चास्या मुनिभिरभितस्तादृगेव व्यधायि ।
यत्प्रेष्ठैरप्यलमसुलभं किं पुनर्भक्तिभाजां
प्रेमेदं तत्र सकृदपि सरः स्नातुराविष्करोति ॥११॥
इति श्रीमद्रूपगोस्वामिपादेनोक्तं श्रीउपदेशामृतं ॥

भक्तिलता का वर्णन

भ्रमत भ्रमत ब्रह्माण्ड मधि जीव भाग्य युत कोय ।
भक्तिलता बीजहि लहै गुरु हरि कृपा जु सोय ॥
बोवे ताही बीज कौं ह्वै करि माली जोय ।
श्रवन कीरतन नीर करि सींचे ताही सोय ॥
उपजि लता बाढ़े जगत अंडभेदि सब जाय ।
ब्रह्मलोक विरजा लङ्घि फिरि वैकुण्ठहि जाय ॥
तब तिहि पर गोलोक पुनि वृन्दावन मधि जाइ ।
कृष्ण चरण युग कल्पतरु तिन पर सो लपटाय ॥
फलै प्रेमफल फैलि सो तिंह सुरतरु के तीर ।
ह्यां माली सींचे सदा श्रवण कीरतन नीर ॥
जो हरिजन अपराध पुनि उठे मत्त मातङ्ग ।
खोदि तोरि डारे लतहि सूक जाइ तिहि अंग ॥
यातें माली जतन करि करै बारि चहुँधाहि ।
ज्यौं अपराध मतङ्ग कौ होय उठन ही नाहि ॥
जौ ताकौ अँग और हू उपशाखा उपजाहि ।
मुक्ति भुक्ति की चाह लगि है तिन संख्या नाहि ॥
छल छिद्र जु पापाचरण जीव विहंसनि आहि ।
लाभ प्रतिष्ठादिक जु श्री उपशाखा गण जाहि ॥
सींचे जलकौं पान करि उपसाखा बढ़ि जांहि ।
थकित मूलसाखा जु ह्वै बढ़िवै पावै नांहि ॥
करिये उपसाखा प्रथम छेदन की जु उपाय ।
बढ़ि जु मूल साखा तबै श्रीवृन्दावन जाय ॥
परै प्रेम फल पक्क करि माली स्वादहि ताहि ।
माली लता अवलंब करि पावै सुरतरु आहि ॥

तहां कल्पतरु की करैं सेवन नित प्रति सोय ।
करैं जु सुख सौं प्रेम फल आस्वादन सब जोय ॥
इति श्रीसुबलश्यामविरचितश्रीचैतन्यचरितामृतस्थित
भक्तिलता वर्णन

इति नित्य पाठ के विषय

अथ नित्य स्मरण पद्धतिः

साधक ब्रह्ममुहूर्त्त में उठ कर "गौर गौर" इ
दिक तथा "कृष्ण कृष्ण" इत्यादिक का कीर्त्तन करें ।

गौर गौर गौर गौर गौर गौर गौर हे !
गौर गौर गौर गौर गौर गौर गौर हे !
गौर गौर गौर गौर गौर गौर रक्ष माम् ।
गौर गौर गौर गौर गौर गौर पाहि माम् ॥ १ ॥

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे !
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे !
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण पाहि माम् ।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण रक्ष माम् ॥ २ ॥

अनन्तरं पृथिवीं प्रार्थयेद् यथा—
समुद्रमेखले देवि ! पर्व्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ ३ ॥

अनन्तर बाहिर जाकर हाथ और पांव धोकर द
करें । पश्चात् रात्रि के पहिरे वस्त्र परित्याग कर शुद्ध
पहिरे और आगे लिखे विधान से आचमन पूर्वक प

थान तथा पवित्र आसन पर पूर्व्वाभिमुख होकर बैठें ।
कर आचमन कर निजाभीष्ट मन्त्र का स्मरण करें ।
दनन्तर अपने मस्तक में श्रीगुरुचरण कमलों का ध्यान
करता हुआ वक्ष्यमान श्लोकों का पाठ करें ।

जयति जननिवासो देवकीजन्मवादो
यदुवरपरिषत्स्वैर्दोर्भिरस्यन्नधर्म्मम् ।
स्थिरचरवृजिनघ्नः सुस्मितश्रीमुखेन
व्रजपुरवनितानां वर्द्धयन्कामदेवम् ॥४॥
विदग्धगोपालविलासिनीनां
सम्भोगचिन्हाङ्कितसर्वगात्रम् ।
पवित्रमाम्नायगिरामगम्यं
ब्रह्म प्रपद्ये नवनीत चौरम् ॥

इत्यादिक अपने अपने सम्प्रदाय तथा भावानुयायी श्लोक
समूह का पाठ करें ।

अनन्तर गुरुदेव का स्मरण—
कृपामरन्दान्वितपादपंकजं श्वेताम्बरं गौररुचिं सनातनम् ।
शन्दं सुमाल्याभरणं गुणालयं स्मरामि सद्भक्तिमयं गुरुं हरिम् ॥

अनन्तर गुरुवर्ग का ध्यान करें—
आजानुलम्बितभुजं प्रफुल्लकमलेक्षणम् ।
वराभयं करं शान्तं करुणामृतवारिधिम् ॥
श्रीनामांकितसर्व्वांगं हरिमन्दिरभालकम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेद् गुरुं सर्व्वार्थसिद्धिदम् ॥

श्रीगुरु प्रणाम

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

श्रीपरमगुरु प्रणाम

पादाब्जमहसा महाकुमतिमोहविध्वंसकम्
व्रजप्रणयसुश्रियं प्रणततापसंहारकम् ।
व्रजेन्द्रतनयप्रियं मधुरमूर्तिमाल्हादकं
नमामि परमं गुरुं भवसमुद्रसन्तारकम् ॥

श्रीपरात्परगुरू प्रणाम

राधा व्रजेन्द्रात्मजभावमूर्त्तये वृन्दावन प्रेम सुखामरद्रुवे।
कारुण्यवारांनिधये महात्मने परात्परस्मै गुरवे नमोऽस्तुते।

परमेष्ठि गुरु प्रणाम

महामहिमवन्दितं सकलसत्वभद्राकरं
व्रजेन्द्र सुतसेवन प्रणयसीधु विश्वम्भरम् ।
कृपामयकलेवरं रसविलासभूषाधरं
नमामि परमेष्ठिनं गुरुमहं सदा शंकरम् ॥

अनन्तर प्रार्थना-

त्रायस्व भो जगन्नाथ ! गुरो ! संसारवन्हिना ।
दग्धं मां कालदष्टंच त्वामहं शरणं गतः ॥
हे श्रीगुरो ! ज्ञानद दीनबन्धो ! स्वानन्ददातः करुणैकसिन्धो !
वृन्दावनासीन ! हितावतार ! प्रसीद राधाप्रणयप्रचार ! ॥

वृन्दावन में श्रीगुरुरूपा सखी ध्यान-

कृपा मरन्द सम्पूर्णां शुद्धस्वर्णा.सद्रुचिम् ।
क्षीणमध्यां पृथुश्रोणीं कस्तूरीतिलकान्विताम् ॥
तुंगस्थनीं विधुमुखीं रत्नाभरणभूषिताम् ।
शोणान्तरीयचित्रेन्दु ज्योत्स्नाम्बरविधारिणीम् ॥
हारन्मणिचितस्वर्णचूड़िकां मधुरस्मिताम् ।
सीमन्तोपरिसद्रत्नामलकालिलसन्मुखीम् ॥

किशोरीं गोपिकां रम्यां राधिकाप्रीतिभूषणाम् ।
सुन्दरीं सुकुमारांगीं गुरुं ध्यायेत्प्रयत्नतः ॥

श्रीगुरुरूपा सखी प्रणाम-

गुरुरूपां सखीं वन्दे प्रेमानन्दकलेवराम् ।
गोपिकां राधिकाश्यामप्रेमदां करुणामयीम् ॥

श्रीगुरुरूपा सखी प्रार्थना-

त्वं गोपिका वृषरवेस्तनयान्तिकेऽसि
सेवाधिकारिणि गुरो ! निजपादपद्मे
दास्यं प्रदाय कुरु मां व्रजकानेन श्री-
राधांघ्रिसेवनरसे सुखिनीं सुखाब्धौ ॥

तन्निकटे नवद्वीपस्थ आत्मध्यान ।-

दिव्य श्रीहरिमन्दिराढ्यमलिकं कण्ठं सुमालान्वितं
वक्षः श्रीहरिनामवर्णसुभगं श्रीखण्डलिप्तं ततः ।
शुभ्रश्लक्ष्णनवाम्बरं विमलतां नित्यं वहन्तीं तनुं
ध्यायेत् श्रीगुरुपादपद्मनिकटे सेवोत्सुकामात्मनः ॥

तन्निकटे व्रजस्थ आत्मध्यान ।-

श्रीगुरोश्चरणाम्भोज कृपासिक्तकलेवराम् ।
किशोरीं गोपवनितां नानालंकारभूषिताम् ॥
पृथु तुंगकुचद्वन्द्वां चतुः षष्ठिकलान्विताम् ।
रक्तचित्रान्तरीयामावृत शुक्लोत्तरीयकाम् ॥
स्वर्णचित्रारुणप्रान्त मुक्तादाम सुकाञ्चलीम् ।
चन्दनागुरुकाश्मीर चर्चितांगीं मधुस्मिताम् ॥
सेवोपायन निर्म्माणकुशलां सेवनोत्सुकाम् ।
विनयादिगुणोपेतां श्रीराधाकरुणार्थिनीम् ।
राधाकृष्णसुखामोदमात्रचेष्टां सुपद्मिनीम् ।
निगूढ़भावां गोविन्दे मदनानन्दमोहिनीम् ॥

नानारस कलालाप शालिनीं दिव्यरूपिणीम् ।
संगीतरस संजात भावोल्लासभरान्विताम् ॥
तप्तकाञ्चन शुद्धाभां स्वसौख्यगन्धवर्जिताम् ।
दिवानिशं मनोमध्ये द्वयोः प्रेमभराकुलाम् ॥
एवमात्मनमनिशं भावयेद् भक्तिमाश्रितः ॥

श्रीनवद्वीप ध्यान–
स्वधुर्न्याश्चारुतीरे स्फुरितमतिवृहत्कूर्म्मपृष्ठाभगात्रं
रम्यारामावृतं सन्मणिकनकमहा सद्मसंघैः परीतम् ।
नित्यं प्रत्यालयोद्यत्प्रणयभरलसत् कृष्णसंकीर्त्तनाढ्यं
श्रीवृन्दाटव्यभिन्नं त्रिजगदनुपमं श्रीनवद्वीपमीड़े ॥

श्रीनवद्वीपयोगपीठध्यान–
ओं सिंहासनस्य मध्ये श्रीगौरकृष्णं स्मरेत्ततः ।
तद्दक्षिणे नित्यानन्दं प्रेमानन्दकलेवरम् ॥
वामे गदाधरं देवमानन्दशक्तिविग्रहम् ।
देवस्याग्रे कर्णिकायामद्वैतं विश्वपावनम् ॥
तद्दक्षिणे भक्तवर्य्यं श्रीवासं छत्रहस्तकम् ।
चतुर्दिक्षु महानन्दमयं भक्तगणं तथा ॥

प्रणाम–
नवीनश्रीभक्तिं नवकनकगौराकृतिपतिं
नवारण्यश्रेणीं नवसुरसरिद्वातवलितम् ।
नवीन श्रीराधाहरिरसमयोत्कीर्त्तनविधिं
नवद्वीपं वन्दे नवकरुणमाद्यं नवरुचिम् ॥

श्रीमन्महाप्रभु का ध्यान–
श्रीमन्मौक्तिकदामबद्धचिकुरं सुस्मेरचन्द्राननं
श्रीखण्डागुरुचारुचित्रवसनं स्रग्दिव्यभूषाञ्चितम् ।

नृत्यावेशरसानुमोदमधुरं कन्दर्पवेशोज्ज्वलं
चैतन्यं कनकद्युतिं निजजनैः संसेव्यमानं भजे ॥

प्रणाममन्त्र–
आनन्दलीलामयविग्रहाय हेमाभदिव्यच्छविसुन्दराय ।
तस्मै महाप्रेमरसप्रदाय चैतन्यचन्द्राय नमो नमस्ते ॥

प्रार्थना–
संसार दुःख जलधौ पतितस्य काम-
क्रोधादिनक्रमकरैः कवलीकृतस्य ।
दुर्वासना निगड़ितस्य निराश्रयस्य
चैतन्यचन्द्र ! मम देहि पदावलम्बम् ॥

श्री मन्नित्यानन्दप्रभु का ध्यान
विद्युद्दाममदाभिमर्द्दनरुचिं विस्तीर्णवक्षः स्थलं
प्रेमोद्घूर्णित लोचनाञ्चललसत्स्मराभिरम्याननं ।
नानाभूषणभूषितं सुमधुरं बिभ्रद्घनाभाम्बरं
सर्व्वानन्दकरं परं प्रवरनित्यानन्दचन्द्रं भजे ॥

प्रणाम–
नित्यानन्दमहं वन्दे कर्णे लम्बितकुण्डलं ।
चैतन्याग्रजरूपेण पवित्रीकृतभूतलम् ॥

यथावा–औदार्य्येण सुकामधेनु दिविषद्वृक्षेन्दुचिन्तामणि
वृन्दं ब्रह्मसुखञ्च सुन्दरतया कन्दर्पवृन्दं प्रभुम् ।
वात्सल्येन सुमातृधेनुनिचयं विस्पर्द्धिनं नन्दिनं
नित्यानन्दमहं नमामि सततं प्रेमाब्धिसंवर्द्धिनम् ॥

विज्ञापन–हाडायिपण्डित तनूज ! कृपासमुद्र
पद्मावतीतनय तीर्थपदारविन्द ।
त्वं प्रेमकल्पतरुरार्त्तिहरावतारो
मां पाहि पामरमनाथमनन्यबन्धुम् ॥

श्री अद्वैत प्रभु का ध्यान

सद्धकालिनिषेविताङ्घ्रिकमलं कुन्देन्दुशुक्लाम्बरं
शुद्धस्वर्णरुचिं सुबाहुयुगलं स्मेराननं सुन्दरम् ।
श्रीचैतन्यदृशं वराभयकरं प्रेमांगभूषान्वित
मद्वैतं सततं स्मरामि परमानन्दैक कन्दं प्रभुम् ॥

प्रणाम—येन श्रीहरिगीश्वरः प्रकटयाञ्चक्रे कलौ राधया
प्रेम्ना येन महेश्वरेण सकलं प्रेमाम्बुधौ प्लावितं ।
विश्वं विश्वविकासिकीर्त्तिमतुलं तं दीनवन्धुं प्रभु
मद्वैतं सततं नमामि हरिणाद्वैतं हि सर्व्वार्थदम् ॥

विज्ञापन--अद्वैत ते करुणया प्रणयावलोकैः
के वा भवन्नहि शचीतनयस्य दासाः ।
प्रेमाम्बुधौ च सहसा वत के न मग्ना
आशापि नो भवति मे वत किं ब्रवीमि ॥

श्रीगदाधरपण्डितगोस्वामी का ध्यान—

कारुण्यैक मरन्दपद्म चरणं चैतन्यचन्द्रद्युतिं
ताम्बुलार्पणभंगिदक्षिणकरं श्वेताम्बरं सुन्दरम् ।
प्रेमानन्दतनुं सुधास्मितमुखं श्रीगौरचन्द्रेक्षणं
ध्यायेच्छ्रीलगदाधरं द्विजवरं माधुर्य्यभूषोज्वलम् ॥

प्रणाम—गान्धर्व्विकास्वरूपाय गौरांगप्रेमसम्पदे !
गदाधराय मे नित्यं नमोऽस्तु हि कृपालवे ॥

विज्ञापन—

हे श्रीगदाधर दयासरितां पतिस्त्वं
प्रेम्णा वशीकृतशचीतनयो विभुश्च ।
पद्मावती तनय एव तथा वशस्ते
किं ते ब्रवीमि मयि मूढ़वरे कृपायै ॥

श्रीवासपण्डितजी का ध्यान

श्रीगौरांगकृपावासं गौरमूर्त्तिरसप्रदं ।
शुक्लाम्बर धरं पृथ्वीदेवं भक्तजनप्रियम् ॥
सकीर्त्तनरसावेशं सर्व्वसौभाग्यभूषितम् ।
स्मरामि भक्तराजं हि श्रीश्रीवासं हरिप्रियम् ॥

प्रणाम—

श्रीवासपण्डितं नौमि गौरांगप्रियपार्षदम् ।
यस्य कृपालवेनापि गौरांगे जायते रतिः ॥

विज्ञापन—

हे श्रीवासादय ! इह कृपामूर्त्तयो गौरचन्द्र
प्रेमाम्भोधेः सुरविटपिनः शान्तसौम्यस्वभावाः ।
दीनोद्धारे प्रव्रतनियमाः प्रेमदा यूयमेव
तस्मादङ्घ्रिं प्रपदरजसा पापिनं मां पुनीत ॥

गौरांगभक्तों का प्रणतिमन्त्र—

"श्रीगौरांगपरिकरगणेभ्यो नमः" ।

श्रीवैष्णवप्रणाम—

वाञ्छाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च ।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः ॥

श्रीगौरांगभक्तगण प्रणाम—

गौरभक्तगणान् वन्दे स्वानन्दरसविग्रहान् ।
नाममुद्रालसद्धस्तानाश्रिताश्रयवत्सलान् ।
नामसंकीर्त्तनाद्यैश्च कम्पाश्रुपुलकान्वितान् ।
चैतन्यचरणाम्भोज मकरन्दमधुव्रतान् ॥

श्री मद्वृन्दावनध्यान ।

श्रीमद्वृन्दावनं रम्यं यमुनायाः प्रदक्षिणम् ।
शुद्ध स्फटिक संस्थानं कल्पवृक्ष सुशोभितम् ॥

नानावर्णकुसुमानां रेणुभिः परिपूरितम् ।
ध्येयं बृन्दावनं नित्यं गोविन्दस्थानमव्ययम् ॥

सयोगपीठ श्री बृन्दावनध्यान–

ततो बृन्दावनं ध्यायेत् परमानन्दवर्द्धनम् ।
सर्व्वर्त्तुकुसुमोपेतं पतत्रिगणनादितम् ॥
भ्रमद् भ्रमरझङ्कारं मुखरीकृतदिङ्मुखम् ।
कालिन्दी जल कल्लोलसंगी मारुत सेवितम् ॥
नानापुष्पलताबद्ध वृक्षषण्डैश्च मण्डितम् ।
कमलोत्पलकल्हार धूलि धूसरितान्तरम् ॥
तन्मध्ये रत्नभूमिञ्च सूर्य्यायुतसमप्रभम् ।
तत्र कल्पतरूद्यानं नियतं रत्नवर्षिणम् ॥
माणिक्य शिखरालम्बि तन्मध्ये मणिमण्डपम् ।
नानारत्नगणैश्चित्रं सर्व्वतः सुविराजितम् ॥
नाना रत्नलसच्चित्रं वितानैरुपशोभितम् ।
रत्नतोरण गोपूरमाणिक्याच्छादनान्वितम् ॥
दिव्यघण्टायुक्तमुक्तामणिश्रेणिविराजितम् ।
कोटि सूर्य्यसमाभासं विमुक्तं षट्तरङ्गकैः ॥
तन्मध्ये रत्नखचितं रत्नसिंहासनं महत् ।
तत्रस्थौ राधिकाकृष्णौ ध्यायेदखिलसिद्धिदौ ॥

श्रीराधिकानाथजी का ध्यान

ओं फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंस प्रियं
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्च्चिततनुं गो गोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे ॥

प्रणाम–नमो नलिननेत्राय वेणुवाद्यविनोदिने ।
राधाधरसुधापानशालिने वनमालिने ॥
पुनः ध्यान–सत्पुण्डरीकनयनं मेघाभं वैद्युताम्बरम् ।
द्विभुजं मौनमुद्राढ्यं वनमालिनमीश्वरम् ॥
गोपगोपी गवावीतं सुरद्रुमलताश्रयम् ।
दिव्यालंकरणोपेतं रक्तपंकजमध्यगम् ॥
कालिन्दीजलकल्लोलसंगिमारुतसेवितम् ।
चिन्तयंश्चेति तं कृष्णं मुक्तो भवति संसृतेः ॥
प्रणाम–नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥
विज्ञप्तिः–प्रणिपत्य भवन्तमर्थये पशुपालेन्द्रकुमार ! काकुभिः ।
व्रजयौवतमौलिमालिकाकरुणापात्रमिमं जनं कुरु ।

श्रीराधिकाजी का ध्यान

ध्यान–अमलकमलकान्तिं नीलवस्त्रां सुकेशीं
शशधरसमवक्त्रां खञ्जनाक्षीं मनोज्ञां ।
स्तनयुगगत मुक्तादामदीप्तां किशोरीं
व्रजपति सुतकान्तां राधिकामाश्रयेऽहम् ॥
प्रणाम–नवीनां हेमगौरांगीं पूर्णानन्दवतीं सतीम् ।
वृषभानुसुतां देवीं वन्दे राधां जगत् प्रसूं ॥
राधां रासेश्वरीं रम्यां स्वर्णकुण्डलभूषिताम् ।
वृषभानुसुतां देवीं तां नमामि हरिप्रियाम् ॥
महाभावस्वरूपा त्वं कृष्णप्रियावरीयसी ।
प्रेमभक्तिप्रदे देवि राधिके त्वां नमाम्यहम् ॥
रासोत्सवविलासिन्यै नमस्ते परमेश्वरि !
कृष्णप्राणाधिके राधे परमानन्दविग्रहे ! ॥

विज्ञापन-तवैवास्मि तवैवास्मि न जीवामि त्वया विना
इति विज्ञाय देवि ! त्वं नय मां चरणान्तिकम् ॥
राधे बृन्दावनाधिशे करुणामृतवाहिनि !
कृपया निजपादाब्जे दास्यं मह्यं प्रदीयताम् ॥

अथ

अष्टसखी तथा मञ्जरीगण, स्थान, रूप, सेवादि

प्रधानाष्टदलेष्वेवमष्टौ श्रीललितादयः ।
राधाकृष्णसुखामोदाः सेवोपायनपाणयः ।
सवृन्दा यत्नतो ध्येयास्तत्रादौ ललितोत्तरे ।
ऐशान्ये तु विशाखैन्द्रे चित्रेन्दुलेखिकाग्नेये ॥
याम्ये चम्पकवल्ली च नैर्ऋत्ये रङ्गदेविका ।
पश्चिमे तुङ्गविद्याथ सुदेवी वायवे तथा ॥

श्रीमञ्जरीगण स्मरण

अथाष्टोपदलेष्वेवमनङ्गमञ्जरी मुखाः ।
सयूथा यत्नतो ध्येयास्तत्रोत्तरदलद्वये ॥
अनङ्गमञ्जरी तस्या वामे मधुमती मता ।
पूर्व्वयो विमला वामे श्यामला दक्षिणे द्वयोः ।
पालिका मङ्गले वारुणयोर्धन्या च तारका ॥ १ ॥
अथ किञ्जल्कपार्श्वस्थाः सर्व्वदा सेवनोत्सुकाः ।
प्रियनर्मसखीर्ध्यायेत् कृष्णदक्षिणतः क्रमात् ।
लवंगमञ्जरीं रूपमञ्जरीं रसमञ्जरीं ।
गुणवत्युत्तरे नाम मञ्जर्य्यौ रसमञ्जरीं ।
लीलामञ्जरीकाञ्चैव विलासमञ्जरीं तथा ।
विलासमञ्जरीश्चान्यां मञ्जर्य्यौ केलिकुन्दयोः ॥
मदनाशोकमञ्जर्य्यौ मञ्जुलालीं सुधामुखीं ॥

पद्ममञ्जरिकामेताः षोडशप्रवरा मता ।
एतासां संगिनीभूत्वा श्री गुर्व्वाज्ञानुसारतः ।
राधामाधवयोः सेवां कुर्य्यान्नित्यं प्रयत्नतः ॥
ताम्बुले ललितादेवी कर्पूरादौ विशाखिका ।
चामरे चम्पकलता चित्रा वसनसेवने ॥
रागे तु तुङ्गदेवी सा सुदेवी जलसेवने ।
नानावाद्ये तुङ्गविद्या चेन्दुलेखा च नर्त्तने ॥
दर्पणे शशिरेखा च विमला पादसेवने ।
पाली कुसुमशय्यायां वेशे चानङ्गमञ्जरी ॥
श्यामला चन्दनादौ च गाने मधुमती तथा ॥
धन्या रत्नविभूषायां मङ्गला माल्यसेवने ।
इत्याद्याः कोटिशो गोप्यो नानासेवां प्रकुर्व्वते ॥

गोरोचनारुचिमनोहरकान्तिदेहां
मयूरपुच्छतुलितच्छविचारुचेलाम् ।
राधे तव प्रियसखीञ्च गुरुं सखीनां
ताम्बूलभर्मकललितां ललितां नमामि ॥

सौदामिनी निचय चारुरुचि प्रतीकां
ताराबली ललितकान्तिमनोज्ञचेलाम् ।
श्रीराधिके तव चरित्रगुणानुरूपां
सद्गन्धचन्दनरतां नमामि विशाखाम् ॥

काश्मीर कान्ति कमनीयकलेवराभां
सुस्निग्धकाचनिचयप्रभचारुचेलाम् ।
श्रीराधिके तव मनोरथ वस्त्रदाने
चित्रां विचित्रहृदयां सदयां प्रपद्ये ॥

नित्योत्सवां हि हरितालसमुज्वलाभां
सद्दाड़िमीकुसुमकान्तिमनोज्ञचेलाम् ।

वन्दे मुदा रुचिविनिर्जितचन्द्रलेखां
श्रीराधिके तव सखीमहमिन्दुरेखाम् ॥
सद्रत्नचामरकरां वरचम्पकाभां
चासाख्यपत्ररुचिर च्छविचारुचेलाम् ।
सर्वान् गुणान् तुलयितुं दधतीं विशाखां
राधेऽथ चम्पकलतां भवतीं प्रपद्ये ॥
सत्पद्म केशर मनोहर कान्तिदेहां
प्रोद्यज्जपाकुसुमदीधिति चारुचेलाम् ।
प्रायेण चम्पकलताधिगुणां सुशीलां
राधे भजे प्रियसखीं तव रङ्गदेवीम् ॥
सच्चन्द्र चन्दनमनोरम कुंकुमाभ्यां
पाण्डुच्छवि प्रचुरकान्ति लसद् कूलाम् ।
सर्वत्र कोविदतया महितां समज्ञां
राधे भजे प्रियसखीं तव तुङ्गविद्याम् ॥
प्रोत्तप्त शुद्धकनकच्छविचारुदेहां
प्रोद्यत् प्रवालनिचयप्रभचारुचेलाम् ।
सर्वानुजीवन गुणोज्वलभक्तिदक्षां
श्रीराधिके तव सखीं कलये सुदेवीम् ॥
वसन्तकालोद्भवकेतकीतति प्रभाविडम्बयुद्रुद्दकान्तिडम्बरां
विनिन्दितेन्दीवरभास्वराम्बरामनङ्गपूर्णम्यु प्रणमामि मञ्जरी
चपलाद्युतिनिन्दिकान्तिकां शुभतारावलिशोभिताम्बराम् ।
व्रजराजसुतप्रमोदिनीं प्रभजे ताञ्च लवंगमञ्जरीम् ॥
गोरोचनानिन्दिनिजांगकान्तिं मायूरपिच्छाभसुचीनवस्त्राम् ।
श्रीराधिकापादसरोजदासीं रूपाख्यकां मञ्जरिकां भजेऽहम्
हंसपत्ररुचिरेण वाससा संयुतां विकचचम्पकद्युतिम् ।
चारुरूप गुण सम्पदान्वितां सर्वदापि रसमञ्जरीं भजे ॥

जवानिभदुकूलाढ्यां तडिदालितनुच्छविम् ।
कृष्णामोदकृतपेक्षां भजेऽहं गुणमञ्जरीम् ॥
बन्धूकवर्णं वसनं वसानां तड़ित्प्रभादग्धतनुच्छविञ्च ।
श्रीराधिकाया निकटे वसन्तीं भजे सुरूपां रतिमञ्जरीं ताम्
विशुद्धचामीकरसुन्दराभां तारावलीचारुमनोज्ञचेलाम् ।
श्रीराधिकाया निकटे वसन्तीं भद्राख्यकां मञ्जरिकां भजेऽहम्
विशुद्धहेमाब्जकलेवराभां सुवस्त्ररत्नादिविभूषितांगीम् ।
श्रीराधिकाया निकटे वसन्तीं लीलाख्यकां मञ्जरिकां भजेऽहं
स्वर्णकेतकीविनिन्दिकायकां निन्दितभ्रमरकान्तिकाम्बराम् ।
कृष्ण पादकमलोपसेविनीमर्च्चयामि सुविलासमञ्जरीम् ॥
प्रतप्त हेमांगरुचि मनोज्ञां शोणाम्बरां चारु सुभूषणाढ्याम् ।
श्रीराधिकापादसरोजदासीमन्यां तव मञ्जरिकां भजामि ॥

सखीमञ्जरीगण का प्रणाम वन्दनादि

कारुण्यकल्पलतिके ललिते नमस्ते
राधासमानगुणचातुरिके विशाखे !।
त्वां नौमि चम्पकलतेऽच्युतचित्तचौरे !
वन्दे विचित्रचरित्रे सखि चित्रलेखे ! ॥
श्री रङ्गदेवि दयिते ! प्रणयाङ्गरंगे
तुभ्यं नमोऽस्तु सुखदे दयिते सुदेवि !
विद्याविनोदसदनेऽपि च तुङ्गविद्ये
पूर्णेन्दुखण्डनखरे सुमुखीन्दुलेखे ! ॥
राधानुजे मम नमोऽस्तु अनङ्गदेवि !
तुभ्यं नमो मधुमति प्रियतामरन्दे !
सौहार्द सौख्यविमले विमले नमस्ते
श्रीश्यामले परमसौहृदपात्रराधे ॥

हे पालिके प्रणयपालिनि मे नमस्ते
श्री मङ्गले परम मङ्गलसीमरूपे !
धन्ये व्रजेन्द्रतनयप्रियता सु सम्पन्
नौमीशचन्द्ररुचिरे ननु तारके त्वाम् ॥
ताम्बुलार्पणपाद मर्द्दन पयोदानाभिसारादिभिः
वृन्दारण्यमहेश्वरीं प्रियतया यास्तोषयन्ति प्रियाः ।
प्राणप्रेष्ठसखीकुलादपि किलासंकोचिताभूमिकाः
केलीभूमिषु रूपमञ्जरीमुखास्ता दासिकाः संश्रये ॥

सेवकगण–

मणिमयवरमण्डनोज्वलांगान्
पुरट जवामधुलिट्पटीरभासः ।
निजवपुरनुरूपदिव्यवस्त्रान्
व्रजपतिनन्दनकिंकरान्नमामि ॥

वयस्यगण–

वलानुज सदृग्वयो गुणविलासवेषश्रियः
प्रियंकरणवल्लकीदल विषाणवेण्वंकिताः ।
महेन्द्रमणिहाटक स्फटिकपद्मरागत्विषः
सदा प्रणयशालिनः सहचरा हरेः पान्तु नः ॥

श्रीवलदेवस्य–

गण्डान्तः स्फुरदेककुण्डलमलिच्छन्नावतंसोत्पलं
कस्तूरीकृतचित्रकं पृथु हृदि भ्राजिष्णुगुञ्जास्रजम् ।
तं वीरं शरदम्बुदद्युतिभरं संवीत कालाम्बरं
गम्भीरस्वनितं प्रलम्बभुजमालम्वे प्रलम्बद्विषम् ॥

यशोदायाः–

क्षौमं वासः पृथुकटितटे बिभ्रति सूत्रनद्धं
पुत्रस्नेह स्नुतकुचयुगं जातकम्पश्च सुभ्रूः ।

रज्वाकर्षश्रमभुजचलत्कंकणौ कुण्डले च
स्विन्नं वक्त्रं कबरविगलन्मालती निर्ममन्थ ॥

श्रीव्रजाधीशस्य–

तिलतण्डुलितैः कचैः स्फुरन्तं
नवभाण्डीरपलाशश्वरुचेलम् ।
अति तुन्दिलमिन्दुकान्तिभाजं
व्रजराजं वरकूर्चमर्चयामि ॥

श्रीरोहिणीदेव्याः–

पुत्रादुच्चैरपि हलधरात् सिञ्चति स्नेहपूरै
र्गोविन्दं याद्भुतरसवतीप्रक्रियासु प्रवीणा ।
सख्य श्रीभिर्व्रजपुरमहाराजराज्ञीं नयैस्तद्
गोपेन्द्रं या सुखयति भजे रोहिणीमीश्वरीं ताम् ॥

श्रीवृषभानोः–

खर्वश्मश्रुमुदारमुज्वलकुलं गौरं समानं स्फुरत्
पञ्चाशत्तमवर्ष वन्दितवयः कान्तिं प्रवीणं व्रजे ।
गोष्ठेशस्य सखायमुन्नततर श्रीदामतोऽपि प्रिय
श्रीराधं वृषभानुमुद्भटयशोव्रातं सदा तं भजे ॥

श्रीकीर्त्तिदायाः ।–

अनुदिनमिह मात्रा राधिकाभव्यवार्त्ताः
कलयितुमतियत्नात् प्रेष्यते धात्रिकायाः ।
दुहितृयुगलमुच्चैः प्रेमपूरप्रपञ्चै
र्विकलमति यथाऽसौ कीर्त्तिदा साऽवतान्नः ॥

श्रीपौर्णमास्याः ।–

श्रीपौर्णमास्याश्चरणारविन्दं
वन्दे सदा भक्तिवितानहेतुम् ।

श्री कृष्णलीलाब्धितरङ्गमग्नं
यस्या मनः सर्वनिषेवितायाः ॥

श्रीवृन्दावनस्य-
आनन्दवृन्द परितुन्दिलमिन्दिराया
आनन्दवृन्द परिनन्दितनन्दपुत्रम् ।
गोविन्द सुन्दरवधू परिनन्दित तद्
वृन्दावनं मधुरमूर्त्तमहं नमामि ॥

श्रीयमुनायाः-
चिदानन्दभानोः सदानन्दसूनोः
परप्रेमपात्री द्रवब्रह्मगात्री ।
अघानां लवित्री जगत्क्षेमधात्री
पवित्री क्रियान्नो वपु मित्रपुत्री ॥

श्रीगोवर्द्धनस्य-
गोवर्द्धनो जयति शैलकुलाधिराजो
यो गोपिकाभिरुदितो हरिदासवर्य्यः ।
कृष्णेन शक्रमखभङ्गकृतार्च्चितो यः
सप्ताहमस्य करपद्मतलेऽप्यवात्सीत् ॥

श्रीवृन्दायाः ।-
तवारण्ये देवि ! ध्रुवमिह मुरारि विहरते
सदा प्रेयस्येति श्रुतिरपि गिरौति स्मृतिरपि ।
इति ज्ञात्वा वृन्दे चरणमभिवन्दे तव कृपां
कुरुष्व क्षिप्रं मे फलतु नितरां तर्षविटपी ॥

❀ कीर्त्तन प्रकरण ❀

※ अथ नित्यकीर्त्तन के पद ※

भैरव

मंगल आरति गौर किशोर । मंगल नित्यानन्द जोरहिं जोर ॥
मंगल श्री अद्वैत भकतहिं संगे । मंगल गाओत प्रेम तरंगे ॥
मंगल बाजत खोल करताल । मंगल हरिदास नाचत भाल ॥
मंगल धूप दीप लइया स्वरूप । मंगल आरति करे अपरूप ॥
मगल गदाधर हेरि पहुँ हास । मंगल गाओत दीन कृष्णदास ॥

भैरव

मंगल आरति युगल किशोर । जय जय करतहिं सखीगण भोर ॥
रतन प्रदीप करे टलमल थोर । निरखत मुख विधु श्याम सुगोर ॥
ललिता विशाखा सखी प्रेमे आगोर । करत निरमंछन दोंहे दुहुं भोर ॥
वृन्दावन कुञ्जहिं भुवन उजोर । मूरति मनोहर युगल किशोर ॥
गाओत शुक पिक नाचत मयूर । चाँद उपेखि मुख निरखे चकोर ॥
बाजत विविध यन्त्र घन घोर । श्यामानन्द आनन्दे बाजाय जयतोर ॥

भैरवी

सोङ्र नव गौरचन्द्र नागर बनयारी ।
नदीया इन्दु करुणासिन्धु भकत बत्सलकारी ॥
वदन चन्द्र अधर सुरंग नयने गलत प्रेम तरंग
चन्द्र कोटि, भानु कोटि, मुख शोभा निछयारी ।
कुसुम शोभित चाँचर चिकुर ललाटे तिलक नासिका उजोर
दशने मोतिम, अमिया हास, दामिनी बनयारी ॥
मकर कुण्डल झलके गण्ड मणि कौस्तुभ दीप्त कण्ठ
अरुण वसन करुण वचन, शोभा अति भारी ॥
माल्य चन्दन चर्च्चित अंग लाजे लज्जित कोटि अनंग
चन्दन वलया, रतन नुपुर, यज्ञसूत्रधारी ॥

छत्र धरत धरणी धरेन्द्र गाओत यश भकत वृन्द
कमला सेवित, पादपद्म, बलि जाऊँ बलिहारि
कहत दीन कृष्णदास गौर चरण करत आश
पतित पावन निताइ चाँद प्रेमदान कारी।

भैरवी

जय राधे श्री राधे जय जय राधे गोविन्द राधे ।
ठाकुर हामारि, नन्दकि लाला ठाकुराणी श्रीमति राधे ॥
एक पालङ में दुहुं जन बैठे, दुहुं मुख सुन्दर साजे।
रातुल चरणे, मणिमय नूपुर, रुणझुनु रुणझुनु बाजे॥
श्याम गले वन माला विराजे, राइ गले मोती साजे।
श्याम शिरे, मयूरपुच्छ, राइ शिरे सीथि साजे॥
श्याम परेछे पीतबास, राइ नीलाम्बरी साजे।
भुवन मोहन सने, भुवन मोहिनी, एकसने विराजे॥
श्री वृन्दाबन में कुसुम कानने,भ्रमरा हरि गुण गाओये।
श्रीवृन्दावन में निकट यमुना, मुरली तान सुनाओये॥
सुचारु वयाने, वंकिम नयाने हेर हेर, चांहनि साजे।
चांचर-चिकुर, मयूरक कण्ठित, कुञ्चित केश विराजे॥
शारी शुक गान करे, तमालेरइ डाले ।
तपन तनया, मोहन मुरली, शुनि उजान वहि चले॥
मयूर मयूरी नाचे, कोकिलेर ध्वनि ।
दास मनोहर, करत निवेदन, दया कर श्रीराधे॥

मध्याह्नकीर्त्तन

जय जय नित्यानन्दाद्वैत गौरांग ।
निताइ गौरांग निताइ गौरांग, जय जय नित्य०
जय जय यशोदा नन्दन शचीसुत गौरचन्द्र ।
जय जय रोहिणी नन्दन बलराम नित्यानन्द ।

जय जय महाविष्णुर अवतार श्री अद्वैत चन्द्र ।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गौर भक्त वृन्द ।
जय जय स्वरूप रूप सनातन राय रामानन्द ।
जय जय खण्डवासी नरहरि मुरारि मुकुन्द ।
जय जय पञ्चपुत्र संगे जय जय राय भवानन्द।
जय काशीमिश्र सार्वभौम जय प्रतापरुद्र ।

जय कानाइखुटिया शिखिमाहिती गोपीनाथाचार्य्य।
जय तिन पुत्र संगे जय जय सेन सिवानन्द ।
जय काशीवासी तपनमिश्र जय प्रकाशानन्द ।
जय छोट वड हरिदास दास गोविन्द ।
जय द्वादश गोपाल आदि चौषठि महांत।
जय गिरि-पुरी-भारती आदि पुरी माधवेन्द्र।
जय छय चक्रवर्त्ती अष्ट कविराज चन्द्र।
जय वासुदेव घोष आदि वसु रामानन्द।
जय वसुधा जान्हवा प्राण गंगा वीरचन्द्र।
जय श्री अद्वैत सीतात्मज श्री अच्युतानन्द।
जय कालिदास झडु ठाकुर जय उद्धारण दत्त।
जय पुण्डरीक विद्यानिधि वक्रेश्वर पंडित।
जय राघव पण्डित गदाधरदास भागवताचार्य्य।
जय अभिराम गौरीदास नन्दन आचार्य्य।
जय परमेश्वरदास पुरी गोसाञि जय जगदानंद।
जय जगाइ माधाइ चापाल गोपाल जय देवानंद।
जय भूगर्भ श्रीलोकनाथ जय श्यामानन्द ।
जय श्रीनिवास नरोत्तम प्राण रामचन्द्र।
जय उड़िया गौड़ीया आदि गौर भक्तवृन्द।
(तोमरा) सबे मिलि दया कर आमि अति मन्द ।

कपट कुटिनाटि घुचाये भजाओ श्रीकृष्णचैतन्य ।
निशि दिशि हियाय जागाओ श्रीगुरु गौरांग ।
श्री संकीर्तन रंगे देखाओ श्रीनिताइ गौरांग ।
(येन)व्याकुल प्राणे गाइते पारि हा निताइ गौरांग ।
(गाइ) येन हा निताइ गौरांग ॥
जय जय राधे कृष्ण गोविन्द । राधे गोविन्द राधे गोविन्द ।
जय जय श्याम सुन्दर मदनमोहन वृन्दावनचन्द्र ।
जय जय राधारमण रासविहारी श्रीगोकुलानन्द ।
जय जय राधाकांत राधाविनोद श्रीराधागोविंद ।
जय जय रासेश्वरी विनोदिनी भानुकुल चन्द्र ।
जय जय ललिता विशाखा आदि यत सखी वृन्द ।
जय जय श्रीरूपमञ्जरी आदि मञ्जरी अनंग ।
जय जय पौर्णमासी कुन्दलता आर वीरावृन्द ।
कृपा करि देह युगल चरणारविन्द ॥
जय नन्दनन्दन गोपीजन वल्लभ, राधानायक नागर श्याम।
सो शचीनन्दन नदीया पुरन्दर, सुरमुनिगण मन मोहन धाम ।
जय निजकान्ता कान्ति कलेवर, जय निज प्रेयसी भाव विनोद।
जय व्रजसहचरी लोचन मंगल, जय नदीया वधु नयन आमोद ॥
जय जय श्रीदाम, सुदाम सुबलार्जुन, प्रेम प्रवर्द्धन नवघन रूप।
जय रामादि सुन्दर प्रिय सहचर, जय जय मोहन गौर अनूप ॥
जय अतिवल, बलराम प्रियानुज, जय जय नित्यानन्द आनन्द ।
जय जय सज्जन गण भय भञ्जन, गोविन्ददास आश अनुवन्ध ॥

श्रीगौरांग देवजू की सन्ध्याआरती ।

भालि गोरा चाँदेर आरती वनि ।
बाजे संकीर्तने सुमधुर ध्वनि ॥
शंख बाजे घण्टा बाजे बाजे करताल ।

मधुर मृदंग बाजे शुनिते रसाल ॥
विविध कुसुम फुले बनि वन माला।
कत कोटि चन्द्र जिनि वदन उजला ॥
ब्रह्मा आदि देव जाँको कर जोड़ करे ।
सहस्र वदने फणी शिरे छत्र धरे ॥
शिव शुक नारद व्यास विचारे ।
नाहि परात्पर भाव विभोरे ॥
श्रीनिवास हरिदास मंगल गाओये ।
नरहरि गदाधर चामर दुलाओये ॥
वीरवल्लभदास श्री गौर चरणे आश ।
जग भरि रहल महिमा प्रकाश ॥

श्रीराधाराणी की आरती ।

जय जय राधेजी को शरण तोहारि ।
ऐछन आरति याउ बलिहारि ॥
पाट पटाम्बर ओढे नील-शाडी ।
सींथक सिन्दूर याउ बलिहारि ॥
वेश बनायल प्रिय सहचरी ॥
रतन सिंहासने वैठल गौरी ॥
रतने जडित मणि माणिक मोती ।
झलमल आभरण प्रति अंग ज्योति ॥
चौदिके सखीगण देइ करताली ।
आरती करतहिं ललिता पियारी ॥
नव नव व्रजबधू मंगल गाओये ।
प्रिय नर्म्म सखीगण चामर दुलाओये ॥
राधा पद पंकज भकतहिं आसा ।
दास मनोहर करत भरोसा ॥

श्रीमदन गोपाल देव की आरती।

हरत सकल सन्ताप जनम को
मिटत तलप यम कालकि ।
आरति किये जय श्री मदन गोपाल की ॥
गो घृत-रचित: कर्पूरक वाति
झलकत काञ्चन थालकि ।
चन्द्रकोटि कोटि भानु कोटि छवि,
मुख शोभा नन्दलाल कि ॥
चरण कमल पर नूपुर राजे,
उरे दोले वैजयन्तीमाल कि ।
मयूर मुकुट पीताम्बर सोहे,
बाजत वेणु रसाल कि ॥
सुन्दर लोल कपोलन किये छवि,
निरखत मदनगोपाल कि ।
सुर-नर मुनिगण करतहिं आरति,
भगतवत्सल प्रतिपाल कि ॥
बाजे घण्टा ताल मृदङ्ग झांझरि,
अञ्जलि कुसुम गुलाल कि ।
हुं हुं वलि वलि रघुनाथदास गोस्वामि
मोहन गोकुल लालकि ॥
आरति किये जय श्रीमदन गोपालकि ।
मदन गोपाल जय जय यशोदा दुलालकि ॥
यशोदा दुलाल जय जय नन्द दुलालकि ।
नन्द दुलाल जय जय गिरिधारी लालकि ॥
गिरिधारी लाल जय जय राधारमण लालकि ।
राधारमण लाल जय जय राधाविनोद लालकि ।

राधाविनोद लाल जय जय राधाकान्त लालकि ।
राधाकान्त लाल जय जय गोविन्द गोपालकि ।
गोविन्द गोपाल जय जय गौर गोपाल कि ।
गौर गोपाल जय जय शचीर दुलाल कि ।
शचीर दुलाल जय जय निताइ दयाल कि ।
निताइ दयाल जय जय अद्वैत दयाल कि ।
भज सीता अद्वैत दयाल कि ।
आरति किये जय श्रीमदन गोपाल कि ॥

तुलसी देवी की आरती।

नमो नमः तुलसि महारानि वृन्दे महारानि नमो नमः ॥ ध्रु०
नमो रे नमो रे मैया नमो नारायणि ॥
याँको दरशे परशे अघ नाशइ
महिमा वेद पुराणे वाखानि।
याँको पत्र मञ्जरी कोमल
श्रीपति चरण कमले लपटानि ॥
(राधापति चरण कमले लपटानि)
धन्य तुलसि पूरण तप किये
शालग्राम की महा पाटराणी ।
धूप दीप नैवेद्य आरति
फुलना किये वरखा वरखानि ॥
छापान्न भोग छत्रिश व्यञ्जन
बिना तुलसी प्रभु एक ना मानि।
शिव सनकादि आऊर ब्रह्मादिक
ढुंढत फिरत महामुनि ज्ञानी।
चन्द्र सखी मैया तेरा यश गाओये
भकति दान दिये महारानि ॥

नमो नमः तुलसि कृष्ण प्रेयसी।

राधा कृष्ण सेवा पाव एइ अभिलाषी॥

जे तोमार शरण लय तार वांछा पूर्ण हय

कृपाकरि कर तारे वृन्दावन वासी।

एइ निवेदन धर सखीर अनुगा कर

सेवा अधिकार दिये कर निज दासी॥

(मोर) मने एइ अभिलाष विलास कुञ्जे दिओ वास

नयने हेरिब सदा युगल-रूप राशि।

दीन कृष्णदासे कय एइ येन मोर हय

श्रीराधा गोविन्द प्रेमानन्दे सदा भासि॥

* पञ्चतत्वका भजन *

श्रीमन्नवद्वीप किशोरचन्द्र ! हा नाथ विश्वम्भर नागरेन्द्र !।
हा श्री शचीनन्दन चित्तचौर ! प्रसीद हे विष्णुप्रियेश गौर॥
श्रीमन्नित्यानन्द अवधौत चन्द्र ! हा नाथ हाडाइ पण्डित पुत्र !।
वसुधा जान्हवा प्राण दयार्द्रचित्त ! पद्मावतीसुत मयि प्रसीद॥
सीतापति श्री अद्वैत चन्द्र ! हा नाथ शान्तिपुर लोकबन्धो !।
श्री गौरांगप्रेम करुणैकपात्र ! श्री अच्युततात ! मयि प्रसीद॥
रत्नावतीनन्दन ! प्रेमपात्र ! हा नाथ माधवाचार्य्यस्य पुत्र !।
श्री गौरांग प्रेम-रस-विलास ! हा गदाधर ! कुरु तैंव्रिदासं॥
श्रीमन्नामादि लीलार्द्र चित्त ! श्री अद्वैत प्रेम करुणैक पात्र !।
हा श्रीगौरांग भक्ताग्रगण्य ! श्रीवासपण्डित ! भव मे प्रसन्नः॥
श्रीकृष्णगोपाल हरे मुकुन्द ! गोविन्द हे नन्दकिशोर कृष्ण !।
हा श्री यशोदातनय ! प्रसीद श्रीबल्लवीजीवन राधिकेश॥
श्री राधा कृष्णप्रिया व्रजेश्वरी गान्धर्व्विका श्री वृषभानु कुमारी।
हा श्री कीर्त्तिदा तनया प्रसीद रासेश्वरी गोरी विशाखा आली॥

जयदेवी

श्रित कमला कुचमण्डल धृत कुण्डल कलित ललित वनमाल।

जय जय देव हरे॥ ध्रु०॥

जय जय राधे कृष्ण गोविन्द गोपाला, जय यशोदा दुलाला,

भज भज नन्दलाला जय जय देव हरे॥

दिन मणि मंडल मण्डन भव खण्डन

मुनिजन मानस हंस। जय जय देव हरे।

कालिय विषधर गञ्जन जन रञ्जन

यदु कुल नलिन दिनेश। जय जय देव हरे।

मधु मुर नरक विनाशन गरुड़ासन

सुरकुल केलि निदान। जय जय देव हरे।

अमल कमल दल लोचन भव मोचन

त्रिभुवन भवन-निधान। जय जय देव हरे॥

जनक सुता कृत भूषण जित दूषण

समर शमित दशकण्ठ। जय जय देव हरे॥

अभिनव जलधर सुन्दर धृत मन्दर

श्री मुख चन्द्र चकोर। जय जय देव हरे॥

तव चरणे प्रणता वयमिति भावय

कुरु कुशलं प्रणतेषु। जय जय देव हरे॥

श्री जय देव कवे रिदं कुरुते मुदं

मंगल मुज्ज्वल गीतिं। जय जय देव हरे॥

* नाममाला *

जय जय राधा माधव राधा माधव राधे।

जय-देवेर प्राणधन हे॥

जय जय राधा मदन गोपाल राधा मदन गोपाल राधे॥

सीतानाथेर प्राणधन हे॥

जय जय राधा गोविन्द राधा गोविन्द राधे।
रूप गोस्वामीर प्राणधन हे ॥
जय जय राधा मदन मोहन राधा मदन मोहन राधे।
सनातनेर प्राणधन हे ॥
जय जय राधा गोपीनाथ राधा गोपीनाथ राधे।
मधु पण्डितेर प्राणधन हे ॥
जय जय राधा दामोदर राधा दामोदर राधे।
जीव गोस्वामीर प्राणधन हे ॥
जय जय राधा रमण राधा रमण राधे।
गोपाल भट्टेर प्राणधन हे ॥
जय जय राधा विनोद राधा विनोद राधे।
लोकनाथेर प्राणधन हे ॥
जय जय राधा गिरिधारी राधा गिरिधारी राधे।
दास गोस्वामीर प्राणधन हे ॥
जय जय राधा श्यामसुन्दर राधाश्यामसुन्दर राधे।
श्यामानन्देर प्राणधन हे ॥
जय जय राधा बङ्कबिहारी राधा बङ्कबिहारी राधे।
हरिदास स्वामीर प्राणधन हे ॥
जय जय राधा राधाकांत राधा राधाकांत राधे।
वक्रेश्वरेर प्राणधन हे ॥

* नामपूर्ण *

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
यादवाय माधवाय केशवाय नम ॥
गोपाल गोविन्द राम श्री मधुसूदन।
गिरिधारि गोपीनाथ मदन मोहन ॥

श्री चैतन्य नित्यानन्द अद्वैत सीता।
हरि गुरु वैष्णव भागवत गीता ॥
श्री रूप सनातन भट्ट रघुनाथ।
श्री जीव गोपाल भट्ट दास रघुनाथ ॥
एइ छय गोसाँइर करि चरण वन्दन।
याहा हैते विघ्न नाश अभीष्ट पूरण ॥
एइ छय गोसांइ जबे व्रजे कैला वास।
राधाकृष्ण नित्यलीला करिलेन प्रकाश ॥
एइ छय गोसांइ जाँर ताँर मुइ दास।
ताँ सवार पदरेणु मोर पञ्च ग्रास ॥
तांदेर चरण सेवी भक्त सने वास।
जनमे जनमे हय एइ अभिलाष ॥
ठाकुरेर ठाकुर आमार वैष्णव गोसांइ।
कलि भव तराइते आर केह नाइ ॥
मनेर आनन्दे वल हरि भज वृन्दावन।
श्री गोविन्द गोपीनाथ मदन मोहन ॥
मनेर आनन्दे बलहरि भज वृन्दावन।
राधाकुण्ड श्यामकुण्ड गिरि गोवर्द्धन ॥
मनेर आनन्दे बलहरि भज वृन्दावन।
श्रीगुरुवैष्णव-पदे मजाइया मन ॥
श्रीगुरु वैष्णव पाद पद्म करि आश।
नाम संकीर्त्तन कहे नरोत्तम दास ॥
वोल हरिवोल वोल हरिवोल।
प्रेमदाता निताइ वले-गौर हरिवोल ॥

* विहागड़ा *

जय जय गुरु गोसाँइ श्री चरण सार।

जाहार कृपाय घुचे ए भव संसार ॥
अन्ध पट घुचिल जाँर करुणा अञ्जने ।
अज्ञान तिमिर नाश कैल येइ जने ॥
एहेन गुरुर वाक्य हृदये धरिया ।
अनायासे जाय भव संसार तरिया ॥
जय जय श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द जय गौरभक्त वृन्द ॥
जय जय गदाधर जय हे श्रीवास ।
जय स्वरूप रामानन्द जय हरिदास ॥
जय रूप सनातन भट्ट रघुनाथ ।
श्री जीव गोपाल भट्ट दास रघुनाथ ॥
एइ छय गोसाँइर करि चरण वन्दन ।
जाहा हैते विघ्ननाश अभीष्ट पूरण ॥
एइ छय गोसाइ जाँर तार मुइ दास ।
तां सबार पदरेणु मोर पञ्चग्रास ॥
मुकुन्द श्री नरहरि श्री रघुनन्दन ।
खण्डवासी चिरञ्जीव आर सुलोचन ॥
भूगर्भ श्री लोकनाथ जय श्रीनिवास ।
नरोत्तम रामचन्द्र गोविन्द दास ॥
जय जय श्यामानन्द जय रसिकानन्द ।
निधुवने सेवाकरे परम आनन्द ॥
जय गौर भक्तवृन्द गौर जार प्राण ।
कृपा करि देह मोरे प्रेमभक्ति दान ॥
दन्ते तृण धरि मुइ करि निवेदन ।
कृपा करि कर मोर अपराध मार्जन ॥
राधा कृष्ण गोविन्द यमुना वृन्दावन ।

राधाकुण्ड श्यामकुण्ड गिरि गोवर्द्धन ॥
जय जय राधे कृष्ण श्रीराधे गोविन्द ।
ललिता विशाखा-आदि यत सखीवृन्द ॥
श्री रूप मञ्जरी आदि मञ्जरी अनंग ।
कृपा करि देह युगल चरणारविन्द ॥

इति कीर्त्तन प्रकरणं

———o———

※ मन्त्र—प्रकरण ※

तुलसीपत्रचयन विधिः

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया ।
केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने ! ॥
त्वदंगसम्भवैः पत्रैः पूजयामि यथा हरिं ।
तथा कुरु पवित्रांगि ! कलौ मलविनाशिनि ॥

तुलसी प्रार्थना मन्त्र ।

चयनोद्भवदुःखं ते यद्देवि हृदि वर्त्तते ।
तत्क्षमस्व जगन्मातस्तुलसि त्वां नमाम्यहम् ॥

तुलसी स्नान मन्त्र ।

गोविन्दवल्लभां देवीं जगच्चैतन्यकारिणीम् ।
स्नापयामि जगद्धात्रीं विष्णुभक्तिप्रदायिनीम् ॥

तुलसीपरिक्रमा मन्त्र ।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरशतानि वै ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणः पदे पदे ॥

तुलसीप्रणाम मन्त्र ।

वृन्दायै तुलसीदेव्यै प्रियायै केशवस्य च ।
कृष्णभक्तिप्रदे देवि ! सत्यवत्यै नमो नमः ॥

सर्व्वाङ्ग से तुलसी सेवा ।

स्पर्व्वाङ्ग से तुलसी सेवा । (heading)

या दृष्टा निखिलाघसंघशमनी स्पृष्टा वपुः पावनी
रोगाणामभिवन्दिता निरसनी सिक्तान्तक त्रासिनी ।
प्रत्यासत्तिविधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपिता
न्यस्ता तच्चरणे विमुक्तिफलदा तस्यै तुलस्यै नमः ॥

श्रीगुरुचरणामृतधारणमन्त्र ।

त्रितापहरणं पुण्यं संसारव्याधिभेषजम् ।
हरिभक्तिप्रदं नित्यं श्रीगुरोश्चरणोदकम् ॥

श्रीभगवच्चरणामृतधारण मन्त्र ।

अकालमृत्युहरणं सर्व्वव्याधि-विनाशनम् ।
विष्णुपादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम् ॥

श्रीवैष्णवचरणामृत धारण मन्त्र ।

हरिभक्तिप्रद पुण्यं सर्व्वोपद्रवनाशनम् ।
भक्त-पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम् ॥

जपमाला धारण मन्त्र ।

अविघ्नं कुरु माले ! त्वं हरिनाम-जपेषु च ।
श्रीराधाकृष्णयोर्दास्यं देहि माले ! तु प्रार्थये ॥
नाम चिन्तामणि रूपं नामैव परमागतिः ।
नाम्नः परतरं नास्ति तस्मान्नाम उपास्महे ॥

श्री नाम जप समर्पण मन्त्र ।

नाम यज्ञो महायज्ञः कलौ कल्मषनाशनः ।
कृष्णचैतन्य—प्रीत्यर्थे नामयज्ञ समर्पणम् ॥

जपमाला स्थापन मंत्र ।

पतित पावनं नाम निस्तारय नराधमम् ।
राधाकृष्णस्वरूपाय चैतन्याय नमो नमः ॥
त्वं माले ! सर्वदेवानां सर्व्वसिद्धिप्रदा मता ।
तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोऽस्तु ते ॥

द्वादशतिलक विधिः ।

"केशवाय नमः" ललाटे ॥ "नारायणाय नमः" उदरे ॥
"माधवाय नमः" वक्षःस्थले ॥ "गोविन्दाय नमः" कंठ कूपे ॥
"विष्णवे नमः" दक्षिण कुक्षौ ॥ "मधुसूदनाय नमः" दक्षिण-
बाहौ ॥ "त्रिविक्रमाय नमः" दक्षिणस्कन्धे ॥ "वामनाय नमः"
वामपार्श्वे ॥ "श्रीधराय नमः" वामबाहौ ॥ "हृषीकेशाय नमः"
वामकन्धरे ॥ "पद्मनाभाय नमः" पृष्ठे ॥ "दामोदराय नमः"
कट्यां ॥ न्यासं कुर्यात् ॥

इस प्रकार मंत्र पाठ कर उस उस अङ्ग में न्यास करें
पीछे हाथ धोकर "ओं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं एं ऐं ओं औं
वासुदेवाय नमः" इस मंत्र का पाठ कर मस्तक में न्यास करें
और पीछे मस्तक में किरीट मन्त्र का न्यास करें । मंत्र यथा—
ओं श्री किरीट केयूर हार मकर कुण्डल चक्र शंख गदा पद्म-
हस्त पीताम्बरधर श्री वत्सांकितवक्षःस्थल श्रीभूमि सहित
स्वात्मज्योतिर्दीप्तिकराय सहस्रादित्यतेजसे नमो नमः ॥

वैष्णवाचमन ।

"केशवाय नमः" "नारायणाय नमः" "माधवाय नमः"
इन मन्त्रों से तीन बार जल का पान करें । अंगुलियों को इषत्
वक्र करके डाहिन हाथ से किंचित जल रख उसका पान विधि
है । अनन्तर "गोविन्दाय नमः" इति मंत्र से दक्षिण पाणि और
"विष्णवे नमः" मन्त्र से वाम पाणि को धोवें । "मधुसूदनाय
नमः" और "त्रिविक्रमाय नमः" मन्त्र से हस्त का मार्जन करें ।
अनन्तर—

"वामनाय नमः" उपरोष्ठ में "श्रीधराय नमः" अधरोष्ठ
में "हृषीकेशाय नमः" पाणि द्वय में "पद्मनाभाय नमः" दोनों
पांव में "दामोदराय नमः" मस्तक में "वासुदेवाय नमः" मुख

नासिका में "प्रद्युम्नाय नमः"
में "संकर्षणाय नमः" दाहिन नासिका में, "अनिरुद्धाय नमः" दाहिन नेत्र में, "पुरुषोत्त-
वामनासिका में, "अधोक्षजाय नमः" दाहिन कान में,
माय नमः" वामनेत्र में, "अच्युताय नमः" नाभि में,
"नृसिंहाय नमः" बांये कान में, "उपेन्द्राय नमः" मस्तक में, हृदये
"जनार्दनाय नमः" हृदय में, "कृष्णाय नमः" बाँये भुजा में न्यास
नमः" दाहिन भुजा में, रोगादि से अशक्त होने पर केवल दाहिन कान
(स्पर्श) करें। को छुवें।

❋ अथ पूजा प्रकरण ❋

वहिः पूजा

"अनुज्ञां देहि भगवन्वहिर्यागे मम प्रभो !" इस मन्त्र से श्रीकृष्ण को प्रार्थना कर पूजा के स्थान श्रीशालिग्राम श्री मूर्त्ति प्रभृत्ति की पूजा करें। पहिले पीठ की पूजा करें। यथा-चंदनादि लिप्त ताम्रादि पीठ में कर्णिका के साथ षोडश केशर वृत्त त्रय के साथ अष्टदल कमल तथा बाहिर चारों दिशा में चारों द्वार युक्त मण्डल लिख कर उस मण्डल को अर्घ्य जल से सींचन कर वहाँ पीठ पूजा का साधन करें।

भगवान के बांए की तरफ वायुकोण से इशान कोण पर्य्यन्त दिशाओं में क्रम से श्री गुरुभ्यो नमः। श्रीपरमगुरुभ्यो नमः। श्रीपरमेष्ठिगुरुभ्यो नमः। श्री परात्परगुरुभ्यो नमः। श्री गुरुपादुकाभ्यो नमः। पूर्वसिद्धेभ्यो नारदादिभ्यो नमः। अन्येभ्यो सिद्धवैष्णवेभ्यो नमः। भगवान् के दाहिन में श्रीदुर्गायै नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीसरस्वत्यै नमः। पीठ के मध्य में-

श्रीं आधारशक्तये नमः। प्रकृतये नमः। कूर्म्माय नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। श्रीमथुरायै नमः। श्रीवृन्दावनाय नमः। श्रीकुञ्जलतामण्डपायै नमः। श्रीनीपवृक्षाय नमः। अनंतर

अग्नि कोण में धर्म्माय नमः। नैऋत में ज्ञानाय नमः। वायव्य में "वैराग्याय नमः" ईशान में ऐश्वर्य्याय नमः। पूर्व में अ-धर्म्माय नमः। दक्षिणमें अज्ञानाय नमः। पश्चिम में "अवैराग्याय नमः"। उत्तर में "अनैश्वर्य्याय नमः" पाठ करके न्यास करें। फिर पीठ के मध्य में "अनन्ताय नमः" "पद्माय नमः" "अं अर्क-मण्डलाय नमः" "उं सोममण्डलाय नमः" "मं वन्हिमण्डलाय नमः" "सं सत्वाय नमः" "रं रजसे नमः" "तं तमसे नमः" "आं आत्मने नमः" "अं अन्तरात्मने नमः" "पं परमात्मने नमः" "ह्रीं ज्ञानात्मने नमः" तथा कमल के पूरब दल में "विमलायै नमः" अग्निदल में "उत्कर्षिण्यै नमः" दक्षिण दल में "ज्ञानायै नमः" नैऋतदल में "क्रियायै नमः" पश्चिमदल में "योगायै नमः" वायुदल में "प्रह्वयै नमः" उत्तरदल में "सत्यायै नमः" ईशानदल में "ईशानाय नमः" कर्णिका में 'अनुग्रहायै नमः' मध्य में "ओं नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वत्रसंयोगयोगपद्मपीठात्मने नमः" इति मन्त्रों से इन्हों की पूजा करे।

अनन्तर मूलमन्त्र से पीठ में शालग्रामादिक मूर्ति रख कर पुष्पाञ्जली ले अपने इष्टदेव का चिंतवन कर तीन वार पुष्पांजली समर्पण करें। इष्टदेव और मूर्तिमें अभेद भाव रक्खें। शालग्राम और स्थिर प्रतिमा में आवाहन, विसर्जन का अनु-चित है। उसे बाद देकर आसनादि उपचारों से यथा विधि पूजा करें।

अथ आसन

सुवर्णादि आसन पुष्पाञ्जलि के साथ ग्रहण पूर्वक—

सर्वान्तर्यामिने देव सर्वबीजमयाय ते।
आत्मस्थाय परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहं॥

इस मन्त्र और मूलमन्त्र का उच्चारण कर "इदमासनं श्री-कृष्णाय निवेदयामि" यह कह कर समर्पण करें पीछे "श्रीकृष्ण इदमासनमत्रास्यतां सुखं" इस मन्त्र से प्रार्थना करें।

अथ स्वागत

यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः सर्व्वार्थसिद्धये।
तस्य ते परमेशान सुस्वागतमिदं वपुः॥

इस मन्त्र और मूलमन्त्र का उच्चारण पूर्वक "श्रीकृष्ण सह परिवारेण स्वागतं करोषि" यह स्वागत मन्त्र पाठ से स्वागत प्रश्न करें।

अथ पाद्य

श्यामार्क, दूर्वा, कमलादि युक्त पवित्र जल केवल जल वा ताम्रादि पात्र में रख कर—

यद्भक्तिलेशसम्पर्कात परमानंदसंप्लवम्।
तस्य ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

इस मन्त्र और मूलमन्त्र का उच्चारण पूर्वक–एतत्पाद्यं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः यह पाद्य मुद्रया पादों में अर्पण करें॥

अथ अर्घ्य

अनन्तर तिल, सरसों, पुष्प, सुगन्धद्रव्य, दूब, कुश, यव आदि युक्त जल केवल जल को वा शंखादिक पात्र में रखकर–

तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणं।
तापत्रयविमोक्षाय तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥

इति मन्त्र तथा मूलमन्त्र का उच्चारण कर "इदमर्घ्यं श्री कृष्णाय निवेदयामि स्वाहा" इस मन्त्र से अर्घ्य मुद्रा द्वारा शिर पर समर्पण करें।

अथ आचमन

अब इलाईची, लौंग आदि सुगन्ध द्रव्य से युक्त जल किसी पात्र में रखकर–

देवानामपि देवाय देवानां देवतात्मने।
आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥

इति मन्त्र और मूल मन्त्र का उच्चारण कर "इदमाचमनीयं श्रीकृष्णाय स्वधा" इस मन्त्र से आचमन मुद्रा द्वारा दाहिन हाथ में अर्पण करें।

अथ मधुपर्क्क

अनन्तर घृत, मधु, दही प्रभृति से युक्त मधुपर्क्क कांस्यादि पात्र में रखकर—

सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुधात्मकम्।
मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि प्रसीद मे॥

इति मन्त्र और मूल मन्त्र का उच्चारण कर "इदं मधुपर्कं श्रीकृष्णाय निवेदयामि स्वाहा" इस मन्त्र से उस मुद्रा द्वारा श्रीमुख में समर्पण करें।

अथ पुनराचमनम्

अनन्तर शुद्ध जल पात्र में रखकर–

उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः।
शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम्॥

इति मन्त्र और मूलमन्त्र का उच्चारण कर "इदं पुनराचमनीयं श्रीकृष्णाय स्वधा" इस मंत्र से उस मुद्रा द्वारा श्रीमुख में अर्पण करें।

अथ स्नपन

अनन्तर–"हे भगवन्स्नानभूमिमलं कुरु" इस प्रकार विज्ञप्ति कर "पादुके निवेदयामि नमः" इस मन्त्र द्वारा दोनों पादुका

समर्पण कर शालग्रामशिलादिक ताम्रादि पात्र में वसा कर फिर चन्दन, कर्पूर, पुष्प, तुलसी प्रभृति से सुवासित जल को शङ्ख में भरकर—

परमानन्दबोधाब्धिनिमग्नानिजमूर्तये ।
सांगोपांगमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश ते ॥

इति मन्त्र और मूलमन्त्र का उच्चारण पूर्वक "जय ध्वनि मन्त्रमातः स्वाहा" इस मन्त्र से गन्धादि द्रव्यों द्वारा अर्चित घंटा को वाम हाथ से वजा कर "भगवन् स्नानीयं निवेदयामि स्वाहा" इस मन्त्र द्वारा स्नान करावें। अनन्तर सुगन्धि तैलादिकों से श्रीकृष्ण का अङ्ग प्रत्यंग धीरे धीरे सुवासित कर फिर आसन में बैठावे।

अथ वसन।

अब परिधेय वस्त्र लेकर—

मायाचित्र पटाच्छन्न निजगूढोरुतेजसे ।
निरावरण विज्ञानवासस्ते कल्पयाम्यहं ॥

इति मन्त्र और मूलमन्त्र का उच्चारण पूर्वक "इदं परिधेयं वासः श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः" इस मन्त्र से समर्पण करें।

अनन्तर उत्तरीय वस्त्र लेकर—

समाश्रित्य महामाया जगत्संमोहनी सदा।
तस्मै ते परमेशाय कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥

इति मन्त्र और मूलमन्त्र का उच्चारण पूर्वक "इदमुत्तरीयं वासः श्री कृष्णाय निवेदयामि नमः" इस मन्त्र से अर्पण करें।

यज्ञसूत्र

अनन्तर जनेऊ लेकर—

यस्य शक्तित्रयेनेदं संप्रोतमखिलं जगत् ।
यज्ञसूत्राय तस्मै ते यज्ञसूत्रं प्रकल्पये ॥

इति मंत्र और मूल मंत्र का उच्चारण पूर्वक "इदं यज्ञोपवीतं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः" इस मंत्र से अर्पण करें। अनन्तर फिर पाद्य देकर ललाट में ऊर्द्धपुण्ड् तिलक की रचना करें।

अथ भूषण

अब सुवर्ण-रूप्यादिमय भूषण समूह लेकर—

स्वभावसुन्दरांगस्य शक्त्या नानाश्रयाय ते ।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यहमर्चितं ॥

इति मन्त्र और मूल मन्त्र का उच्चारण पूर्वक "इमानि भूषणानि श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः" इति मन्त्र से निवेदन करें।

गन्ध

अब चन्दन, अगुरु, कर्पूरादि मिश्रित गन्ध लेकर—

परमानन्दसौरभ्यपूरापूर्णदिगन्तर ।
गृहाण परमं गंधं कृपया परमेश्वर ! ॥

इति मंत्र और मूल मंत्र का उच्चारण द्वारा "इदं गन्धं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः" इस मंत्र से सर्व्वांग का लेपन करें।

अथ पुष्प

अनन्तर पुष्पों को लेकर—

तुरीयगुणसम्पन्नं नानागुणमनोहरं ।
आनन्दसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम् ॥

इति मन्त्र और मूलमंत्र का उच्चारण कर "इमानि पुष्पाणि श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः" इस मन्त्र से समर्पण करें। फिर

मूल मंत्र से तुलसी पत्र का भी समर्पण करें। अब यहाँ अङ्ग पूजा आवरणपूजा की विधि भी है। विशेष हरिभक्तिविलास तथा अर्चाविधि प्रभृति ग्रंथ देखलें।

अथ धूप

तैजसादि पात्र में अग्नि रख कर उसमें धूप फेंक "एष धूपो नमः" इस मंत्र से जल द्वारा उत्सर्ग कर—

वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यतां॥

इति मंत्र और मूलमंत्र का पाठ कर "इमं धूपं श्रीकृष्णाय निवेदयामि" इस मन्त्र का फिर पाठ करें। अथ बाँए हाथ से गन्ध, कुसुमादि द्वारा अर्चित घण्ठा को "स्वाहा अस्त्राय फट्" इस मंत्र से बजाकर भूमि से देवता का नाभि पर्य्यन्त धूप पात्र फिरावे।

अथ दीपन

गोघृत, असमर्थ होने पर तैलादि द्वारा सुगन्धि तैजस द्रव्य से दीप को जला कर "एष दीपः नमः,' इस मन्त्र से जल द्वारा उत्सर्ग कर।

सुप्रकाशो महातेजाः सर्वतस्तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यतां॥

इस मंत्र तथा मूलमंत्र का पाठ कर "इमं दीपं श्रीकृष्णाय समर्पयामि" इस मंत्र उच्चारण कर पहिले की तरह बाँए हाथ से घण्टा को बजाकर श्री विग्रह का चरण कमल से नेत्र कमल पर्य्यन्त आरत्रिक तरह घुँमाते हुए अर्पण करें।

अथ नैवेद्य अर्पण विधिः

देवता के आगे स्थान संस्कार कर तैजसादि पात्र में नैवेद्य धर कर "अस्त्राय फट्" मन्त्र से जप्त जल द्वारा सींचन

कर चक्र मुद्रा से रक्षण कर "यं" इस वायु वीज द्वारा द्वादश वार जप्त जल से निवेदन कर उसका दोष शोषण पूर्वक अपना दाहिन करतल में "रं" इस अग्निवीज का जप कर वाम करतल उसका पीठ पर लगा कर उससे उठी हुई अग्नि द्वारा शुष्क दोष को जलाकर वाम करतल में "वं" इस अमृत वीज का चिन्तवन कर उसका पीठ पर दाहिन करतल को मिलाकर उस से उत्थित अमृत धारा से नैवेद्य का सींचन कर फिर मूल मंत्र जप्त जल से भीजा कर उसे अमृतमय का चिंतन करें। फिर उसका स्पर्श कर आठ वार मूलमन्त्र का जप द्वारा अमृत रूप कराकर नैवेद्य और श्रीकृष्ण को गन्ध, पुष्पों से पूजा कर उस पात्र को बाँये हाथ से स्पर्श कर दाहिन हाथ में गन्ध, पुष्पों से युक्त जल लेकर स्वाहान्त मूल मन्त्र का उच्चारण पूर्वक "श्रीकृष्णाय इदं नैवेद्यं कल्पयामि" इस मंत्र का पाठ कर देवतीर्थ से भूमि पर विसर्जन करें। अनन्तर उस नैवेद्य को पात्र के साथ तुलसी युक्त कर हाथों से उठाकर "निवेदयामि भवते जुषाणेदं हवि र्हरे" इस मन्त्र से भगवान को अर्पण करें। अथ "अमृतोऽपि स्तरणमसि स्वाहा" इस मन्त्र से जल गण्डूष भगवान को देकर बाँये हाथ से ग्रासमुद्रा और दाहिन हाथ से पञ्च मुद्रा देखावें। "ओं प्राणाय स्वाहा, ओं अपानाय स्वाहा, ओं व्यानाय स्वाहा, ओं उदानाय स्वाहा, ओं समानाय स्वाहा, इन मंत्रों का तथा "ठं नमः पराय परमात्मनेऽनिरुद्धाय नैवेद्यं कल्पयामि" इति नैवेद्य मन्त्र का पाठ कर निवेदन मुद्रा को देखावें। अनन्तर घण्टानाद पूर्वक परदा से बाहिर होकर—

"शालीभक्तं सुभक्तं शिशिरकरसितं पायसं पूपसूपं।
लेह्यं पेयं सुचूष्यं सितममृतफलं घारिकाद्यं सुखाद्यं॥
आज्यं प्राज्यं समिज्यं नयनरुचिकरं वाजिकैलामरीच।
स्वादीयः शाकराजीप रिकरममृताहारजोषं जुषस्व॥

इत्यादिक श्लोकों का पाठ करें। अनन्तर भोजन समाप्ति पर्यन्त ध्यान कर फिर परदा को हटा कर "अमृतापिधानमसि स्वाहा" इस मन्त्र से पुनर्वार जल गण्डूष प्रदान कर "इदमाचमनीयं श्रीकृष्णाय निवेदयामि" इति मन्त्र से आचमनार्थ जलादिक अर्पण करें। अनन्तर मुखवास, ताम्बूलादि अर्पण करें। अब महाप्रसाद, नैवेद्यादिक श्री राधिकादि कांतागणों को निवेदन कर शंख, झालरादि वादन पूर्वक महा-नीराजन (आरत्रिक) करें। फिर तीन वार पुष्पांजलि प्रदान कर बिचित्र मधुर स्तोत्रों से प्रभु की स्तुति करें अथ कर्म्मादि अर्पण कर प्रभु को शयन करावें अनन्तर वैष्णवगण के साथ प्रभु अधराभृत (महाप्रसाद) का आस्वादन कर विश्रामादि करें॥

* इति पूजा प्रकरणं *

अथ भक्ति के चौषठ अङ्ग॥

विविध अंग साधन भगति ताकौ वहु:विस्तार।
कहिये कछु संक्षेप करि साधनांग ये सार॥
गुरु—पादाश्रय प्रथम पुनि मंत्र-सुदीक्षा ताहि।
गुरु चरननि कौ सेयवौ मुख्य अंग ये आहि॥
सुद्ध भक्ति कौ सीखिवौ और पूछिवौ ताहि।
साधु मार्ग कै अनुगमन करिबैं निहचैं आहि॥
भोग त्याग हरि प्रीत हित हरि तीरथ मधि वास।
उदर मात्र जु परिग्रहै एकादसि उपवास॥
धात्री अरु अश्वत्थ पुनि धेनु विप्र हैं जोय।
और वैष्णव जननि कौ पूजन करिवौ सोय॥
हरि सेवा हरि नाम के अपराधादिक जोय।

करैं दूरही तें सुबुधि तिनकौ वरजन सोय॥
सङ्ग अवैष्णव कौ नहीं करै शिष्य वहु जान।
ग्रन्थ कला अभ्यास वहु तजिवौ तिहि व्याख्यान॥
सोकादिक के होत वस हानि लाभ सब होय।
अन्यदेव अरु शास्त्र की निन्दा करै न सोय॥
हरि हरिजन निंदा विषै बात न सुनिये आहि।
जीव मात्र जे मन वचन नहि दुख दैवौ ताहि॥
श्रवण कीरतन है स्मरण पूजन वंदन ताहि।
परिचर्य्या सख दास्य पुनि आत्म निवेदन आहि॥
नृत्य गीति विज्ञप्ति तिहि आगें दण्ड प्रणाम।
अभ्युत्थान अनुव्रजन अरु गमन तीर्थ तिहिं धाम॥
परिक्रमा स्तवपाठ पुनि जप संकीर्त्तन नाद।
धूप माल्य के गंध तिहि भोजन महाप्रसाद॥
आरति उत्सव और श्री विग्रह दरसन जोय।
ध्यान तदीय जन सेवन निज प्रिय अर्पण सोय।
तुलसी वैष्णव मधुपुरी अरु भागवत तदीय।
इन चारनि कौ सेयवौ हरि कै अभिमत हीय॥
अखिल चेष्टा सु कृष्ण हित कृपावलोकन ताहि।
जन्मदिनादि महोत्सव जु हरिजन गण लै आहि॥
सरणापत्ति जु सर्वथा कीर्त्तनादि व्रत जान।
चौषठि अंग जु भक्ति कै सोई परम प्रधान॥
नाम कीरतन साधुसंग श्रवण भागवत तास।
श्रद्धा करि सेवन जु श्री मूरति मथुरावास॥
सव साधन मधि श्रेष्ठ हैं एई पाँचौ अङ्ग।
उपजावे हरिप्रेम इन पाँचन कौ कछु संग॥
सुवल श्याम विरचित चैतन्यचरितामृते

✻ अथ चिन्हप्रकरण ✻

श्रीश्रीनित्यानन्दप्रभुचरणचिन्हानि ।

ध्वज-पवि-यव-जम्बून्यम्बुजं शंखचक्रे
हल-विशिख-चतुष्कं वेदिचापार्द्धचन्द्रान् ।
दधदनुपदशाखा-श्रेष्ठमेवैकनिष्ठात्
स्मर सहृदय ! नित्यानन्द-दक्षे पदाब्जे ॥ १ ॥
मुषल-गगन—छत्राब्जाङ्कुशं वेदि शक्ती
झष-कलस-चतुष्कं गोष्पदं पुष्पवल्लीम् ।
दधदनुपदशाखा—श्रेष्ठमेवैकनिष्ठात्
स्मर सहृदय ! नित्यानन्दसव्ये पदाब्जे ॥ २ ॥

हे सहृदय ! श्रीनित्यानन्दप्रभु के द्वादशचिन्हों से युक्त दक्षिण चरण का स्मरण कर। ध्वज, वज्र, यव, जम्बु, कमल, शंख, चक्र, हल, वाणचतुष्टय, वेदी, धनु, अर्द्धचन्द्र यह द्वादश चिन्ह हैं।

मूषल, आकाश, छत्र, कमल, अङ्कुश, वेदी, शक्ति, मीन, चार कलश, गोपद, पुष्पमाला, लता हैं। इन द्वादश चिन्हों से युक्त बाँए चरण का भी स्मरण कर।

श्री श्री गौराङ्गमहाप्रभुचरणचिन्हानि

छत्रं शक्ति-यवाङ्कुशं पवि-चतुर्जम्बूफलं कुण्डलं
वेदी-दण्ड-गदा-रथाम्बुजं-चतुः स्वस्तिश्च कोणाष्टकं ।
शुद्धं पर्वतमूर्द्ध्वरेखाममलोऽङ्गुष्ठात् कनिष्ठावधे
बिभ्रद्दक्षिणपादपद्ममलं शच्यात्मजश्रीहरेः ॥ १ ॥
शंखाकाश-कमण्डलुं ध्वज-लता-पुष्प—स्रगर्द्धेन्दुकं
चक्रं निज्यधनुस्त्रिकोण-वलया-पुष्पं चतुष्कुम्भकं
मीनं गोष्पद-कूर्म्ममासुहृदयांगुष्ठात् कनिष्ठावधे
बिभ्रत्सव्यपदाम्बुजं भगवतो विश्वम्भरस्य स्मर ॥ २ ॥

रे मन ! शचीनन्दन श्री गौरहरि के—छत्र, शक्ति यव, अंकुश, वज्र, चार जामन (फल), कुण्डल, वेदी, दण्ड, गदा, रथ, चारि कमल, स्वस्तिक, अष्टकोण, विशुद्धपर्वत, विमल-उर्द्ध्वरेखा इन षोडश चिन्हों से शोभित दक्षिण चरण कमल का स्मरण कर ॥ १ ॥

रे मन ! भगवान् विश्वम्भर के—शंख, आकाश, कमण्डल, ध्वजा, लता, पुष्पमाला, अर्द्धचन्द्र, चक्र, ज्यारहित धनु, त्रिकोण, वलया, पुष्प, चारिकुम्भ, मीन, गोष्पद, कूर्म्म, इन षोडश चिन्हों से शोभित बाँए चरण कमल का स्मरण कर॥ धारणविधि चक्रवर्त्ती द्वारा विरचित "रूपचिन्तामणि" देखिये।

यथा-अंगुष्ट मूल देश में यव, उसके नीचे छत्र. अंगुष्ठ तर्जनी सन्धि स्थल में उर्द्ध्वरेखा, तर्जनीतल में दण्ड, मध्यमातल में कमल, उसके नीचे पर्वत, उस के नीचे रथ, रथ के दक्षिण पार्श्व में गदा, बाँए तरफ शक्ति, कनिष्टातल में अंकुश, उसके नीचे वज्र, उसके नीचे वेदी, उसके नीचे कुण्डल हैं। इन सब चिन्हों के नीचे चारि स्वस्तिक चिन्ह हैं। सन्धि स्थल में अष्ट-कोण युक्त चारि जम्बुफल हैं। यह दक्षिण चरण में है। बाँए चरण में यथा-अंगुष्ठ मूल में शंख, उसके नीचे पवि, मध्यमा के तल भाग में आकाश, दोनों के नीचे धनु, गुण से रहित चाप, मणिमूल में वलया, कनिष्टा के तल में कमण्डल, उसके नीचे गोष्पद, पताका, ध्वजा, उसके नीचे चारिकुम्भ, उनके बीच में अर्द्धचन्द्र, उसके नीचे कूर्म्म, उसके नीचे मीन, उसके दक्षिण तथा कूर्म के समान भाग में घटों के नीचे पुष्पमाला है।

राधाकृष्णचरणचिन्हानि ।

चन्द्रार्द्धं कलसं त्रिकोणधनुषी खंगोष्पदं प्रोष्ठिकां
शङ्खं सव्यपदेऽथ दक्षिणपदे कोणाष्टकं स्वस्तिकं ।

कंच छत्रयवांकुशं ध्वज-पवी जम्बूर्द्ध्वरेखाम्बुजं
विभ्राणं हरिमूनविं ति-महालक्ष्म्यार्च्चितांघ्रि भजे ॥ १ ॥
छत्रारिध्वजवल्लिपुष्पवलयान् पद्मोर्द्ध्वरेखाङ्कुशा
नर्द्धेन्दुश्च यवश्च वाम्मनु या शक्ति गदां स्यन्दनं
वेदी—कुण्डल-मत्स्य-पर्व्वत-दरं धत्तेऽन्वसव्यं पदं
तां राधां चिरमूनविंशति-महालक्ष्म्यार्च्चितांघ्रि भजे ॥ २ ॥

उन्नीस चिन्ह से शोभित, महालक्ष्मी अर्च्चित श्रीकृष्ण के दोनों चरणका भजन करता हूं बांए चरण में-अर्द्धचन्द्र, कलस, त्रिकोण, धनुष. आकाश, गोष्पद. मीन; शंख हैं दक्षिण चरण में—अष्टकोण, स्वस्तिक, चक्र, छत्र, यव, अंकुश, ध्वज, वज्र. जम्बुफल. उर्द्ध्वरेखा कमल हैं।

उन्नीस चिन्ह से शोभित, महालक्ष्मी-अर्च्चित श्रीराधिका के दोनों चरण का भजन करता हूं। बाँए चरण में—छत्र, अरि, ध्वजा, वल्ली, पुष्प, वलया, कमल, उर्द्धरेखा, अङ्कुश, अर्द्धचन्द्र, यव हैं। दक्षिण चरण में—शक्ति, गदा, रथ, वेदी, कुण्डल, मत्स्य, पर्व्वत दर हैं।

धारण विधिः—श्रीहरि के दक्षिण चरण में-अंगुष्ठमूल में यव, अरि, छत्र, तर्जनी सन्धि भाग में पदार्द्ध व्यापी उर्द्ध रेखा, मध्यमा के नीचे कमल, उसके नीचे पताका के साथ ध्वजा, कनिष्ठा के तल में अंकुश, वज्र, इन सबके नीचे जम्बूफल चतुष्टय युक्त स्वस्तिक चतुष्टय, बीज में अष्टकोण हैं। बाँये चरण में—मध्यमा के नीचे आकाश, अंगुष्ट के मूल भाग में दर; उन दोनों के नीचे ज्या रहित धनुष, अनन्तर गोष्पद, उसके नीचे त्रिकोण, चतुष्कुम्भ, अर्द्धचन्द्र, मीन हैं।

श्री राधिका के बाँए चरण में—अंगुष्ठतल में यव, अरि

तर्जनी सन्धि भाग में पदार्द्धव्यापी कुञ्चित उर्द्धरेखा, मध्यमा-तल में कमल, ध्वज, पुष्प, लता, कनिष्ठिका के नीचे अंकुश, चक्र के मूल में वलया, आतपत्र, पार्ष्णि में अर्द्धचन्द्र है।

दक्षि चरमें—स्तत्र

पार्ष्णिदेश में झस, ऊपर में रथ, पर्व्वत, उसके पास शक्ति और गदा, अंगुष्ठमूल में शंख, कनिष्टिका के नीचे वेदी, उसके नीचे कुण्डल हैं।

* इति चिह्न प्रकरण *

* शिक्षाष्टकं *

चेतो दर्पणमार्ज्जनं भवमहा-दावाग्नि-निर्व्वापनं
श्रेयः कैरवचन्द्रिका—वितरणं विद्यावधू जीवनम्
आनन्दाम्बुधिवर्द्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसंकीर्त्तनम् ॥ १ ॥

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति,
[illegible]ता [illegible] नियमित स्मरणे न कालः।
एतादृशि तव कृपा भगवन्ममापि,
दुर्द्दैवमिदृशमिहाजनि नानुरागः ॥ २ ॥

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्त्तनीयः सदा हरिः ॥ ३ ॥

न धनं न जनं न सुन्दरीं कबितां वा जगदीश कामये।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद्भक्तिरहैतुकी त्वयि ॥ ४ ॥

अयि नन्दतनूज किङ्करं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ।
कृपया तव पादपङ्कजस्थित—धूलि—सदृशं विचिन्तय ॥ ५ ॥

नयनं गलदश्रुधारया वदनं गद्गदरुद्धया गिरा ।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नामग्रहणे भविष्यति ॥ ६ ॥

युगायितं निमिषेण चक्षुषा प्रावृषायितम् ।
शून्यायितं जगत् सर्व्वं गोविन्द—विरहेण मे ॥ ७ ॥

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु,
मामदर्शनान्मर्म्महतां करोतु वा ।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो,
मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः ॥ ८ ॥

॥ इति श्री गौरचन्द्र मुखपद्मविनिर्गतशिक्षाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

जो मानस दर्पण की मलिनता को दूर करता है तथा जो संसार रूप दावाग्नि का निवारक है जो मङ्गल मार्ग रूप श्वेत पद्म की शुभ्रज्योत्सा रूप तथा पराविद्या रूप वधू का प्राणात्मा स्वरूप है, जिसके श्रवण से आनन्द सागर की वृद्धि होती है तथा जिसके पद पद में परिपूर्ण अमृत का आस्वादन होता है उस सकल आत्मा स्निग्धकारी श्रीकृष्ण नाम संकीर्त्तन की सर्वोपरि जय हो ॥ १ ॥

हे भगवन् ! आपकी इस प्रकार की करुणा है कि आपने आपके नाम समूह में अपनी समस्त शक्ति अर्पण कर दीनी है, और वह नाम सकल के स्मरणादि करने के विषय में कोई देश, काल, नियम नहीं रखा है। परन्तु मेरा ऐसा दुर्दैव है कि उन नामों में अनुराग नहीं हो रहा है ॥ २ ॥

अब जिस प्रकार नाम ग्रहण करने से प्रेम प्राप्ति होता है उसे कहते हैं—तृण से भी नीच, (नम्रता) वृक्ष से भी

सहनकारी होकर निरभिमान से दूसरे को मान देते हुए सदा हरिकीर्त्तन करें ॥ ३ ॥

अब श्रीमन्महाप्रभु आपने को भक्तावेश में कहते हैं— हे जगदीश ! मैं धन, जन, सुन्दरी, कविता की कामना नहीं करता हूँ किन्तु आप से यह प्रार्थना करता हूँ कि जन्म जन्म तुह्मारे में मेरी अहैतुकी भक्ति हो ॥ ४ ॥

हे नन्दनन्दन ! विषम भवसागर में निमग्न मुझे आपना पादपद्म स्थित रजः कणिका न्याय दास्य रूप से ग्रहण कीजिये। यह प्रभु की दैन्योक्ति है ॥ ५ ॥

हे प्रभो ! कब तुम्हारे नाम ग्रहण करने में मेरी ऐसी दशा होगी। विगलित अश्रुधाराओं से नयन युगल भर जायगा तथा गद्गद् वाणी से वदन रुक जाएगा और पुलकावली से सकल शरीर खचित हो जाएगा। यह भी दैन्योक्ति है ॥ ६ ॥

अब प्रभु विरह भाव से कहते हैं:—

श्री गोविन्द के विरह में मेरे लिये निमेषकाल युग की तरह हो रहा है, नयनों से वर्षाकालीन वारिधारा सदृश निरन्तर अश्रुधारा बह रही है और समस्त जगत् शून्यमय हो रहा है ॥ ७ ॥

अब श्रीमन्महाप्रभु किशोरी भावाविष्ट में अपने को कहते हैं। हे सखि ! वे हरि मुझे आलिङ्गन प्रदान कर चरणरत किंकरी करें व अत्यन्त दुःख देकर पीश डारें किम्बा अदर्शन से मर्म्माहत करें अथवा लम्पट होकर जहाँ तहाँ विलास करें किन्तु वे मेरेही एकमात्र प्राणनाथ ही हैं अपर कोई नहीं हैं।

इति शिक्षाष्टक का अनुवाद।

(अनुवादक—कृष्णदास)

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द ।
हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द ॥
भज–निताइ गौर राधे श्याम ।
जप–हरे कृष्ण हरे राम ॥

* दो शब्द *

जय गौर ! श्री गुरुवैष्णवजनों की कृपाकणिका–सौभाग्य से मैं "नित्यक्रियापद्धति" नामक ग्रन्थ रत्न का संगृहीत कर गौड़ीय वैष्णवों के समक्ष उपस्थित कर सका। आशा है गौड़ीय वैष्णव गण इस ग्रन्थ के आश्रय से अपनी दैनन्दिनी भजन पूजादिक करते हुए हमें चिरबाधित करेंगे। आगरा निवासी गौरनिष्ठ श्रीमान् राधागोविन्दजी के परम आग्रह से तथा उनके आर्थिक सहाय से ही यह ग्रन्थ प्रकाशित करने में हम समर्थ हुए। परिशेष में हमारी सूचना यह है कि–गुरुवन्दना के शेष में श्री सनातनदासजी के स्थान पर भूल से श्रीसनातनगोस्वामी जी लिख गया है। पाठकगण भूल सुधार कर इसे पढें। द्वितीय-भाग में अष्टकाल स्मरण पद्धति समूह संगृहीत कर प्रकाशित करने की आशा है ॥ इति ॥

वैष्णवदासानुदास
कृष्णदास ।

विलापकुसुमांजली

दो०—रूप मञ्जरी सखी तुम परम सती विख्यात ।
वसि यहि पुर परपुरुष मुख तुमहिं न कबहुँ सुहात ॥
पति अनतिथि में कत अहो ! विम्ब अधर छत जात ।
शुक शावक निज चंचुसों कियो कहूँ आघात ॥१॥

दो०—हे थल कमलिनि तुम सहज गर्विता यहि वन भ्राजौ ।
पुष्प गुच्छ मिस हास्य मनोहर प्रफुलित साजौ ॥
विविध लता सौरभ तजि प्यारो कृष्ण भ्रमरहू ।
डोलत है जिह हेतु खोजतौ तव पथ इतहू ॥२॥

चौ०—नन्दराज ब्रजराज राज में । बसी विविध गोपी समाज में ।
तुम ही हौ रति मंजरि आली । प्रचुर पुण्य पुंजनि की शाली ॥
अति प्यारी जो कनक किंकिणी । रति-विलास-भर गिरी संगिनी ॥
खोजन जाहु जु गिरि कन्दरा । आयसु स्वामिनि पाय आतुरा ॥३॥
प्रिय यदुनन्दन जो प्रभु मोरे । श्री यदुनँदन प्रभाव अथोरे ॥
अतुल कृपामृत सों जिन सींचौ । गुरुवर पाहि शरण मैं नीचौ ॥
दुस्तर गृह बड़ अंधकूप सों । पार-रहित क्लेशन समूह सौं ॥
जिनि काढ़्यौ करि कृपा लेजु सों । बिनु प्रयास अविलम्ब हेजु सों ॥४॥
परम सुतन्त्र जु सहज सुभाऐं । परम दयासागर अति भाऐं ॥
कमल विनिन्दित चरण प्रान्त में । लियौ राखि जिन मुहि इकान्त में ॥

सो०—सौंप्यौ मम हितु जानि श्री स्वरूप दामोदरहिं ।
अमित रूपगुण खानि जै जै सो चैतन्य प्रभु ॥५॥

चौ०—बड़े जतन रस भक्ति विरागा । भरि प्यायौ मो अंध अभागा ॥
पर-दुख-दुखी जु कृपा-निकेतन । आश्रय करहुँ सु प्रभू सनातन ॥६॥
उत्कट विरह सदा अति भारी । दहति हिये कोउ दासि तिहारी ॥
स्वामिनि इहँ क्षण प्रणय गाढ़ सों । क्रन्दहुँ पद आकुल विलाप सों ॥७॥
देवि ! दुःख कुल सागर माँही । दुःखित हौं अति दुर्गति ताही ॥
लेहु कृपा दृढ़ नौका निज सों । पद कमलालय अद्भुत विधि सों ॥८॥

तव अन-अवलोकन। मैं जन कीन्हौं मृत बहु दंशन॥
कृष्णसर्प तव अन-अवलोकन। मैं जन कीन्हौं मृत बहु दंशन॥
चरण कमल जो लगी महावर। देवि! जियाबहु दै औषधि वर॥९॥

छन्द-चौपइया

तव चरण कमल की दासी। भरि विरह दवागिनि रासी॥
अति झुरसि परी तनु बेली। टुक सुधा दीठि लखु हेली॥
हे देवि जिवाबहु ताही। थिर थिती होय व्रज माँही॥१०॥
दो०—किधौं स्वप्न में हूँ सुमुखि तव पद-पद्म-पराग।
राग-गन्ध-भूषण अहो धरिहौं मैं शिर-भाग॥
शोभापरमिति खानि जो सिर निज ऊपर राखि।
नाम सार्थक करहि गौ "उत्तमाँग" अस भाषि॥११॥
तव नूपुर की रुन-झुन-लहरी। अमरित-रस-सागर सम गहरी॥
मम बधिरत्व दूरि कब करि है। हा कल्याणि! विकल चित भरि है॥
सोभाछन्द—जब शशधर अभिसारन। नेत्र भृंग की कोरन॥
समय विलोकति जाहीं। दिशि विदिशन बन माहीं॥
नील कमल के कोषन। छिटकावत चहुँ ओरन॥
कब चितवहु हे देवी। यहि दासि चरण तव सेवी॥१३॥
दो०—रूपवती इक मंजरी करि सनेह मो पाहिं।
नैन सिखावन जब दई या वृन्दाभुवि माहिं॥
हे वृन्दावन-ईश्वरी तव तें मो अभिलाष॥
भरि इच्छा देखत रहौं तव पद पद्म जु लाष॥१४॥
रोला—सरस भृंग उल्लसित मंजु कंजनि की पांती।
सुठि सोभित जा चारु वारि मधि अनुपम भाँती॥
वहै मधुर जल सघर भरयौ तुमरौ सर जोई।
मम नैंननि तट सुमुखि अघट प्रगट्यौ जब सोई॥
हे फूले-दल-कमल-लोचनी तव ही मन में।
भई अमित अभिलाष लाष तुव दासा तन में॥१५॥
तुव पद पंकज विमल दास्य विन हे सुकुमारी।
कबहुँ न जाचों आन जान निहचै वलिहारी॥

सख्य भावनहिं चाव ताहि हों नवों नवों नित।
दासा तन रस होहु सेउँ रस सत्य वदत इत॥१६॥
हे नख विदलित हरदगर्भ दुति कृपा लापसों।
सुठि सुहाग की ललित महावर बलित छाप सों॥
करि अंकित मम भुजनिकों जु हितसों विन छेवा।
कब देहो निज चरन कमल की अति प्रिय सेवा॥१७॥
श्रीधर छन्द—दै जलधारा मधुर अपारा सुवर सुवासित जो।
है गुनसाली धोय प्रनाली अति हरषित चित सों॥
चिकुर निकर में निज युग कर में भरि हित अनगण जू।
कबहुँ न लाजों चित दै माजौं है साँचौ पन जू॥
लै वर धूपै गंध अनूपै अवर वाह्य घर जो।
कब नित प्रति ही वासित अति ही करहुँ प्रेम भर सो॥१८॥
सोभा छन्द—प्रात समें हे राधे। भामिन गुननि अगाधे॥
वरकपूर जुत माटी। लाऊँ करि परिपाटी॥
अवर सुवासित पानी। लाऊँ हे सुख दानी॥
आन सदन के मांही। तुव पद युग हरषाही॥
दै जलधारा जानौ। करि प्रच्छालन मानौ॥
कब निज कर में पाछें। करि हों मार्जन आछें॥१९॥
चरन कमल जब ध्वैकै। कृत दांतुन हूँ द्वै कै॥
स्नान हेतु सचु पैहौ। आन सदन में जै हौ॥
तब अति ही हित छैकैं। तैल सुवासित लैं कैं॥
तुव अंगनि में पाछें। हरषि लगाऊँ आछें॥
पुनि उवटनि सुख रासी। कब करि है यह दासी॥२०॥
हे जित-विधु-मुख-पद्मा। हे स्वामिनि रस-सद्मा॥
गंध कुसुम जुत जानौ। कलित कपूर हु मानौ॥
मधुर सुवासित पानी। भरि भरि घट सुखदानी॥
देति रहै अलि कोऊ। प्रणय ललित अति सोऊ॥
तुव अभिषेक जु भारी। कब करिहों बलिहारी॥२१॥

बलि तुव अंग सु जोहै। मृदुल मनोहर सोहै॥
पट सुचीन सों आछें। अमित जतन भरि पाछें॥
बीर नीर तन जोई। हरें हरें जब सोई॥
दूर करो बलिहारी। तव तुव सोभा भारी॥
मीन दृगंचल जानौ। अमित दसों दिसि मानौ॥
लखि लखि अति ललचावों। लाल नील पट लावों॥
लहंगा लाल सु भारी। कटि तट में सुखकारी॥
नील निचोलै जानौ। नख सिख लों उनमानों॥
हरषि पुलकि बलि जाऊं। कब इह विधि पहराऊं॥२२॥
बलिहारी बलिहारी। हे ब्रजेन्द्र-सुत प्यारी॥
धोय चरन युग आछें। पुन क्रम ही सों पाछें॥
ग्रथित नर्मदा जानौ। सुच्छम सुभग बखानौ॥
अनुपम माला लैकै। सरस प्रणय रस छैकै॥
तुव कच कुलकों रूरो। कब रचि हों बलि जूरो॥२३॥
मृगमद सों निरधारा। तिलक जु चंद्रा-कारा॥
भरि भरि मोद जु आछें। रचि ललाट महि पाछें॥
लै केसर बलिहारी। प्रति अंगनि में भारी॥
अरचि चरचि कें जानौ। पुन मृगमद सों मानौ॥
कुच युग चित्रित पाछें। कब करि हों बलि आछें॥२४॥

उपदोहा—रतन सलाका कलित ललित सिंदूर रेख जो।
मम कल्पित तुव मांग माहिं मंगल विशेष सो॥
हा हा स्वामिनि सुपुनि अहो दुति दामिन अद्भुत।
कब करि है भरि झलक अलक कुलकों सोभाजुत॥२५॥
चिलक जुक्त वर तिलक चहूँ दिसि अनुपम भांती।
अरुन रंगवर गंध की जु वेंदिन की पांती॥
कृष्ण-चित्त [वर मत्त-करी औषध सुनि जोई।
कब ह्वैहै मम धीर करनि कल्पित पुनि सोई॥२६॥
हे स्वामिनि! ब्रजराज-सुवन मद वलित चित्त जो।

राजत है अति प्रवल वली करि राज मत्त सो॥
तिंह बंधन हित श्रवन युगल तुव विमल लसैं अस।
रति पति की परकास जु लखियत सुदृढ़ पांतिजस॥
वहै श्रवन युग कों जु मोद भरि भरि अति ढरि हों।
दै अवतंस प्रसंस सु कब भूषण युत करिहों॥२७॥

चौ०—तुव कुच आछादन हित भारी। मम अरपित जो अंगिया कारी॥
सोन कंचुकी है उनमानौ। पै स्वामिनि यह सत्य जु मानौ॥
कृष्ण कमल दल मेंन मुरारी। लखि सुचि कुच युगकों बलिहारी॥
प्राननि हूँ तें जु अधिकतर। जानि मानि पिय निज निधि युगवर॥
आपहि ह्वै कंचुकी जु निरमल। निश्चय गोपन करत लपटि गल॥२८

उपदोहा—तुव उरवर हे कनक गौरि हे परम सुहावन।
अमित अलस जु त नंद सुवन सजा मन भावन॥
लै नाना मनि रचित चारु मुक्तनि की माला।
मंजुल विमल रसाल सुखद हद विसद विसाला॥
उमगि उमगि भरि सरस रंग रस हे रस रासी।
कब करि है वह स्वच्छ बच्छ सोभित यह दासी॥२९॥
मंजुल मणिकुल खचित नीलदुति रचित जु चूरी।
तुव हरि-प्यारे करनि में जु स्वामिन अति सूरी॥
अरु अंगुरिनि में हरषि अंग मुदरिन की पांती।
हे इन्दीवर-सदृश लोचनी अनुपम भांती॥
कबहुँ कि सजिहों समें पाय हरषाय भागबल।
करिहों भूषण सुमुखि सरस निरदूषण तरभल॥३०॥

चौ०—तुव पद पंकज कों चित दै कै। करि अर्चन मनि नूपुर लै कै॥
तिंह अंगुरिन कुल लसहि विमल दल। अरचि अरचि तिनहूँकों पुनभल
बलि कटितर जो वर सुखकारी। प्रेम पीठ कंसारी भारी॥
ताहि तुरित किंकिन लै पाछें। कब अरचों हित सहित जु आछें॥३१
तुव भुज युग हैं सदृस मृणाली। मंजुल मृदुल अतुल गुन साली।
मुरजित मति हंसिनी सुजोई। लखि लखि धीरज धरै न कोई॥

असु तुव भुजनि में जु जुग अंगद । अनगन मनिगण खचित रचित हद
अमित प्रमद भर नमित होय पुनि । कव अरपन करि हों स्वामिनि सुनि
जो तव कंठ सुनौ वलि जाहीं । स्वामिनि सुखद रास रस मांहीं ॥
कृष्णचंद भुज सरस परस भर । पायो है अति ही सौभगवर ॥
ललित कंठ भूषण लै मांनहुँ । कनक कलित निर्दूषण जानहुँ ॥
वहै कंठ कों उत्कठिंत मन । कव पूजै सुभगा पुन यह जन ॥३३॥
सीमंतक मणि मंगलकारी । निकर दिवाकर सम दुति धारी ॥
है जु कौस्तुभ कौ सुमित्र वर । प्रलम्बारि जाकों भरि हित भर ॥
संख-चूड़ बध तें सत्रुराही । दीनी मधुमंगल कर मांही ॥
सुमुखि ताहि तुव हार मांहि सुनि । कव करिहों धनि नायक मनि पुनि
कृशोदरी तुव कटि अति छीना । मत टूटै मैं ह्वै भय भीना ॥
कंचन कलित ललित लै डोरी । युगल बंधायतु हे नव गोरी ॥
सोचति कव तिंह ढिग अनुसरि हों । चकित ससंकित बंधन करि हों
जो नासा तुव गहिवर ओभा । जीती सुसम कुसुम तिल सोभा ॥
सो पुनिकनक गुनित वर मोती । लखियतु जाकी अनुपम जोती ॥
जिमि मकरंद बंद सत्रु पावत । मधुरिपु मधुप हि छोभ करावत ॥
मम करतें स्वामिनि बलिहारी । कव लै है सुख दैहै भारी ॥३६॥

छप्पै—अनुपम अंगद सहत सहित हे कंचन वरनी ।
दुख हरनी नवरत्न माल अति मंगल करनी ॥
पद गुच्छकी स्वच्छ लसनि जिंह लखियतु अद्‌भुत ।
भरि भरि अति चित चाय ताहि ह्वै परम प्रणय जुत ॥
तुव निदेस वल पाय कें यहै चहत चित मोर ।
कब पहरांउ सुजांउ वलि वामभुजा महि तोर ॥३७॥

चौ०—तुव श्रवननि ऊपर सुखदाई । मम अरपित जो चारु सलाई ।
हे चल नैंनी यदपि मुरारी । हे छोभक अगनित व्रजनारी ॥
सो तिनहूँ कों तदपि वारसत । भ्रमन करावहु चारु चक्रवत ।३८

सो०—चिबुक चारु वलि जांहि, हरि सुख मन्दिर सुन्दरी ।
कब रचिहों तिंह मांहि, मृगमद सों वेंदी सरस ॥३९॥

वलि कव रंगि हों तुव दसन असु ।
रंगो०—अरुनरंग सों रंग भरि वलि कव रंगि हों तुव दसन असु ।
पद्मराग गुन कलित सुठि स्वामिनि मुक्ताफल सुजस ॥४०

छ०—कथ कपूर की कलित ललाई ललित सधर मैं ।
मम कर रंजित सुधा मधुर तुव विंव अधर मैं ।
कृष्ण कीर गत धीर ह्वै जु भरि भाय आय पुनि ।
कव डसि है ललचाय औचका हरष काय सुनि ॥४१॥

जिंह अँचल चँचल होत छिन अति जकरि बँधै करि-राज हरि ।
तुव जित मृग चख मसि दै सुमुखि कब पूजै यह जनभाय भरि ॥४२
हे भामिनि तुव मान भंग सुभ समय रंग भरि
नेही नव गोविंद नंद-सुत अति उमंग ढरि ।
जिंह रेखनि सों रसिक रंगीलौ हे रस गोभा ।
ह्वै रंजित सिर अधिक लहै अति परमा सोभा ।
वहै महावर सरस रस तुव चरननि तल सुनहुँभल ।
मम कर अरपित होय पुनि कब छबि लैहै अति अमल ॥४३

चौ०—कला-कोविदा हेम-मरालिनि । दुति दामिनि भामिनि गजगामिनि
अति अनुपम तुव हे रसगोभा । नमित खरनि की अमित जु सोभा ॥
कोटि काम कुलहू तें भारी । कला उदधि मुररिपु छवि धारी ॥
तिनके सरस रास सुखदायक । जेहें परम सहायक लायक ॥
वहे खरनि में मल्लीमाला । कूजित पूजित मधुकर जाला ॥
हरषि निरखि अति ह्वै पुलकित तन । कव अरपै वलि यह दासीजन ।४४
दिनकर मनि चौंतरी मांहिं ढरि । अलिनि संग अति प्रेम रंग भरि ॥
जव तुम सूरहिं अरघ देन हित । ह्वै जु रहोगी अति उत्कण्ठित ॥
अरघ सोंज तव अति सुखरासी । तुरितहि कब दैहै यह दासी ॥४५॥
निज कृत पाक सरस सुखदाई । बहु विधि वर पकवान मिठाई ॥
लहि निदेस जसुमति निरधारा । हरषित तन भरि जतन अपारा ॥
निज अलिगन के हाथनि में सब । मम सटसाहू के कर में कब ॥
तुरतहि अति सत्रु पैहौ दैहौ । मधु रिपुहित हितसहित पतैहौ ॥४६॥
हे स्वामिनि श्रीरानि निरखि अति । अन्न सहित तव मोहि निरखि अति
निज ललाट कों प्रीति अघट भरि । मम ललाट तट में प्रकटहि धरि ॥

हित सों जिमि जननी बलिहारी। कुसल बात हरषात तिहारी ॥
कब बूझैं मो सों अति धन्या। जानि मानि तुम में जु अनन्या ॥४७॥

सोभा छन्द—हे स्वामिनि सुकुमारी। है अभिलाषा भारी ॥
भुक्त शेष हरि जोई। दत्त धनिष्ठा सोई ॥
भरि भरि मान सुमानौ। हुलसि हुलसि हिय जानौ ॥
तुव आगें बलि जाउँ। कवलाऊँ सचु पाउँ ॥४८॥

उपदो०—खान पान बहु भाँति भामिनी सरस सुधा सम।
हरिप्रसाद पुनि मिलित ललित रस वलित जु अनुपम ॥
ललितादिक निज अलिन संग रस रंग जु भरि हौ।
मम कृत जतन अपार सुमुखि कब भोजन करि हौ ॥४९॥
पाटल अबर कपूर पूर वासित अति निर्मल।
अरपि प्रथम रस खानि पान हित सरस मधुर जल ॥
कब दैहों पुनि समें समुझि तुव अति सुख दायक।
हित सौं सींकरु नीर वीर तुव अचवन लायक ॥५०॥

सोभाछन्द—हे स्वामिनि सुखदानी। अबर सुनौ मम बानी ॥
धूप अनूप सुजानौ। गंध अमंद बखानौ ॥
अबर विजन हूँ सोई। उँह छिन लायक जोई ॥
भरि-भरि जतन अपारा। अति हित चित निरधारा ॥
असन समें बलि जाहीं। कब दैहों सचु पाहीं ॥५१॥

उपदो०—वर कपूर रस पूर भूरि जुत सरस सुपारी।
वीरी अति रस खानि वीर पाननि की भारी ॥
हे स्वामिनि सुख सदन बदन सरसिज मांही तब।
हरषि पुलकि प्रति अंग रंग भरि हौं दैहों कब ॥ ॥५२॥

चौ०—ललिता लै आरती मोद भर। करि है तुव न्यौछाबर अतितर ॥
मंगल गान कुसुम लै धन्या। करि हैं न्यौछावर अलि अन्या ॥
कच अरु अन गन प्राननि रासी। बलि स्वामिनि तासों तुव दासी ॥

उपदो०—ललितादिक वर अलिन संग ह्वै अति उमंग वस।
प्रकट करत पुन अघट स्वामिनी सरस हासरस॥

मम कर कल्पित सुभग केलि सुटि सेज सु अद्भुत।
कब करि हौ रस भोय सोय स्वामिनि भूषण जुत ॥५४॥

* चौपाई *

जा दिन तुव पद युग सुख रासी। पुलकि पलोटै बलि यह दासी ॥
रूप मंजरी अबर सुयुग कर। सुभग हृदय-सद्म बलि हित भर ॥
सो दिन पुनि इन दुहुँनि केजु प्रति। कब ह्वै है सोभायमान अति ॥५५॥

उपदोहा—हे स्वामिनि तुव भुगत सेस पुनि चरनोदक भल।
अरु मुख सरसिज गलित सुधा सम ललित मधुर जल ॥
अमित भक्ति भर नमित हितू जन सहित सहित पुनि।
कब लैंहिहों बलि प्रचुर भाग बल हे स्वामिनि सुनि ॥५६॥

* चौपाई *

असन करत में हे स्वामिनि सुनि। तुमहीं मम सु लगन जानि पुनि ॥
विमल कमल मुख तें जु नेह वस। कब दैहौ अति सरस सुधारस ॥५७
अब सुनि सोई कहों सु जोई। कृष्णचंद्र हित करन रसोई ॥
पुलकि अंग रस रंग भरति में। नंद गाँव कों गवन करति में ॥
हिय अनंद भर अति डग मग डग। कब ढरिहौ मम नैंननि के मग ॥५८
दच्छिन में तुव अति सुख काजै। ललिता ललित गुननि छवि छाजै ॥
बांई ओर बिसाखा जानौ। अरु अलिकुल चहुँ ओर बखानौ ॥
पाछैं मत टूटै कटि छीनी। हों जु चलों गहि अति भय भीनी ॥
रूप मंजरी परम अनूपा। तुव आग पुनि हे रस रूपा ॥
सावधान अति ह्वै पग पग में। कब तुव कों लैं चलें जु मग में ॥५९
हे स्वामिनि नंदीसुर जोई। तिंह उपमा कों नाहिन कोई ॥
चायनि सों जामें सुख सारा। गायनि के सुनियत हुंकारा ॥
कोलाहल गोपनि जहँ भारी। भाट भवैयनि सों छवि धारी ॥
यद्यपि गोवर्द्धन गिरिराजा। है व्रजजन पूजित सुख साजा ॥
पै नंदीसुर हरि प्रियता बल। राजत ताहू तें गुरु तर भल ॥६०
ब्रज महेन्द्र वर मन्दिर सोहै। छवि वरनें जग में कवि कोहै ॥
वह मन्दिर मंहि पुलकि अंग में। जब ढरि हौ निज अलिन संग में ॥

निरखि धनिष्ठा हरषि दूरतें। धाय चाप निज भाग भूरतें ॥
मम सोंहीं तुम कों बलि जांहीं। तुरित हि कब लैहै घर मांहीं ॥६१॥

सोभा०—हे स्वामिनि रसरूपा। कुशला परम अनूपा।
अमल कमल पद ध्वै कें। अति हरषित चित ह्वै कें ॥
पाक सदन के मांही। ढरि अति हिय सचु पाहीं ॥
जसुमति आदि बखानौ। तिंह चरननि में जानौ ॥
प्रनति रासि करि आछें। करत रसोई पाछें ॥
मोहि सुकव हरषाहीं। सुख सागर के माहीं ॥
वलिहारी वलिहारी। करिहौ मगन सुभारी ॥६२॥

चौ०—खान पान रसखांनि सुधासम। क्रमहीं सों हे स्वामिनि अनुपम।
भरि भरि अति मन मान जु भारी। नमित मुखी ह्वै हे सुकुमारी ॥
कृष्णचंद आनंद कंद हित। हित सों ह्वै अतितर हरषित चित ॥
सुपुनि रोहिनी के कर मांही। देत रहौ जब हों वलि जांही ॥
तब तुमकों मैं हे रस सदना। कब लखि हौं ह्वै विकसित वदना ॥६३
जो तुव मुख सरसिज सुकुमारी। नव गोविंद नवल छवि धारी ॥
असन समें गुरु सभा मांहि सुनि। ह्वै अतितर मद उत्कण्ठित पुनि ॥
नीठि नीठि करि नमित डीठ गति। निरखि विसेखें हिय अनंद अति
हे मधुरा तुव वह मुख अद्भुत। कवि करि है वलि मोहि मोद जुत ॥६४
नंद नंद गोविंद मुरारी। गोरच्छन में दीक्षित भारी ॥
हे स्वामिनि वे अति हरषित मन। भवनहुं तें जब गवन करहिं वन ॥
व्याकुल मति जननी कृत हितभर। लाल्यमान अतितर नगधर वर ॥
तव तुम गोल कपोलनि उज्ज्वल। मंद मधुर मुसकनि प्रगटत भल ॥
ह्वै हौ जो तिंह देखन हारी। सो तुव कव लखि हों वलिहारी ॥६५
कोटिमातु हू तें सुखदानी। नेहवती अति यसुमति रानी ॥
मम सोंही स्वामिनि निरधारा। कौतुक सोंदे सोंऊ अपारा ॥
जब तुमकों अति हरष अंग में। निज प्रिय गण के संग रंग में ॥
वलि जांहीं स्वामिनि वलि जांहीं। भरिहित चित भोजन सुकराहीं ॥
तब तुमकों लखि पुलकित तनमें। कव लहि हों हों मोद जु मन में ॥६६

छप्पै—चुम्बन सीस निसंक अवर भरि अंक जु लैवौ।
लाख लाख अभिलाष भरत भरि नेह चितैवौ ॥
खंजन नैंनी सरस तुमें जब जसुमति अतितर।
नवल वधू ज्यौं लाड़ लड़ावै अमित मोद भर ॥
तब स्वामिनि वलि निरखि भल वदन सदन छवि तोर।
प्रगट करों कब अघट सुख यह चाहत चित मोर ॥६७॥

उपदोहा—सधर प्रणय भर हे रस रूपा रूपमंजरी।
तुव भुज अरपित ललित मृदुल जिंह वांह वल्लरी ॥
विपुल विलोचन चारु सरस जिंह अंचल चंचल।
अघट प्रगट पुनि काम तरंग सु अंग अंग भल ॥
उंह गजगामिन कों जु हरषि कब ढरि तिंह पाछें।
हरि भूषित सुभ केलि कुञ्ज महि लैहों आछें ॥६८॥

चौ०—अहो प्राण सखि रूप मंजरी। सो ईस्वरि मम परम रस भरी ॥
वलि तुव सहित सु प्रेम पुञ्ज में। निज सरवर तट मंजु कुञ्ज में ॥
कुसुम कलित भूषण गण लैकै। भूषित करत पियहिं चित दैकै ॥
हा हा हरि हरि कब ह्वै हैं पुनि। मम नैननि तट अघट प्रगट सुनि ॥
स्वच्छ विचच्छन के मुख तें पुनि। मधुरिपु सुभ अभिसार समें सुनि ॥
हे सुभगा सूच्छम दुकूल लै। फूलनिंहीं के कर्नफूल दै ॥
अरु हारादिक हू सु रसाला। सुभग सुखद तर विसद विसाला ॥
हरषि तुमें कव हे स्वामिनि मम। करि हों भूषन भूषित अनुपम ॥
नव पुहुपनि की वंदन माला। कूजित पूजित मधुकर जाला ॥
केसर कलित अवर सुख कारी। मदन चित्र सुख सदन जु भारी ॥
सुठि सोभित जिंह द्वारा में सुनि। उह मदनानंदद घर में पुनि ॥
कुसुम सुसुम मल्ली कुल लै कै। तुरितहि हे स्वामिनि चित दैकै ॥
उमगि उमगि मन मोद जु सचि हों। भरि भरि हेज सेज कब रचि हौं
रूप मंजरी चारु करार्चित हरि पद पल्लव।
हरिभुज अरपित सरस रंग तुव उत्तमंग जब ॥
हरें हरें तव हरषि हरषि हे हाटक वरनी।
पुलकि पलोटों चरण कमल तुब कव सुभकरनी ॥७२॥

चौ०—गिरि गोवर्द्धन निकट मुरारी। रसिकन के सिरमौर जु भारी ॥
रूप अवर जोवन गरवीलौ। छली दान-छल छैल छबीलौ ॥
जब तुम कों एकें मग रोकें। तब स्वामिन हौं हरषित होकें ॥
कब लखि हौं तुम कों रस एंना। सतर भौंह सो गरवितनें ना ॥७३
तुव तन सरस गंध हे वीर। वलित चलै जब ललित समीर ॥
चंद्रावलि कर कृत उनमानि। मल्ली केलि सेज रसदानि ॥
छल सों छाड़ि सुताहि सुजान। करि तुमकों पुनि अति सनमान ॥
आय मिलें जब तुव सरतीर। मत्त भ्रमर सों ह्वै गति धीर ॥
तब लखि लखि हों वह छवि पूर। प्रकट करों कब अघट गरूर ॥७४
जो तुव सर मधुरावलि जाँही। सधर मधुर अनुपय जग माँही।
सुठि सोभित जहं अमल कमल कुल। सीतल मृदुल सुवासित मंजुल
कूजित अरु पच्छी कुल जामें। हित सों अलिनि सहित पुन तामें ॥
प्राणनाथ कें संग प्रेमवस। कब लखि हो तुव सरस केलिरस ॥७५॥

छन्द—राधासर के तीर जामें भ्रमर वसैं।
मंजुल कुंज कुटीर जामें कुसुम लसैं।
हरसि हरी तिंह माँह हे वृषभान सुता ॥
वरनि वरन के फूल सोभा कहि न वनें।
लै कै ह्वै अनुकूल प्रीतम प्रेम सनें।
कब तुम कों सचु पाँहिं हे वृषभान सुता ॥
करिहें सुभग सिंगार नेह जु अघट भरत।
मम सुख समुद अपार ताहि जु प्रगट करत।
वलि जाही वलि जाँहि हे वृषभान सुता ॥७६॥

चौ०—नवविकसित अति कुसुमसुसमभल। मोर पुच्छअरु मँजुगुँजफल
भरि कौतुक हरि के कर कोऊ। देत रहैं विकसित चित सोऊ ॥
स्वामिनि हू तव अँग-अँग भारी। फूलि रहें जिमि सुठि फुलवारी ॥
सुचि रुचि सों तिंह चिकुर निकर सब। कंपित हरिकृत रचित होय जब
वह मंजुल कचकुल अति अनुपम। कब देहैं सुख द्रगनि कों जु मम ॥७७
मदनकेलि में ह्वै मतवारी। अमल कमल लैहे सुकुमारी ॥

जब हि विहारी कों वलिहारी। हरिहि करौ परिहार जु भारी ॥
सो लखि कब ह्वै है सुखरासी। मंद हास वदना यह दासी ॥७८
उपदोहा—तुव भुज प्रिय के शयन में जु जब छाय रहैं छवि।
प्रिय भुज सों तुव नमित अंस परसंस रहैं फवि ॥
गावत पुन तिंह संग अनंग जु गीत मधुर गति ॥
कब देहो वलि जांहि सुभगमुखि मोहि मोद अति ॥७९॥

चौ०—खेलत पासे जीत सुमित सौं। मुसि मुरली परिहास रीति सों।
चहि जु चलावौ मो माँहूँ जब। ताहि दुराऊँ वलि जाऊँकब
मदन सुखद घर मांहि हेज में। कलित मालती केलि सेज में
गोल अमोल कपोलहि में पुनि। प्रगट करत अति मृदु मुसकनि सुनि
मधुर गोठ प्रिय के जु सँग में। करत रहौ जब सरस रँग में ॥
पुलकि तुमें तब हे सुखरासी। कब करिहै सुविजन यह दासी ॥८१
हे नब विकसित सरसिज वदना। सरस रसीली हे रस सदना ॥
सुभलीला अभिसार तें जु पुनि। गमन करत हे गजगामिनि सुनि ॥
अमित श्रमित ह्वै हे सुकुमारी। ह्वै निलजा सलजा वलिहारी ॥
अमल कमल पद संवाहन हित। यह निज दासी कों भरि हित चित
गहि गहि नाम सुभरि भरि चायनि। कब प्रेरन करिहौ सुखदायनि
दिनकर अर्चन समें भयौ तब। गई धेवती राधे कित अब ॥
कुपितासी मुखरा भाषति इम। कब देहै सुख मोहि सुधा जिम ॥॥८३

दो०—स्मित कपूर रस पूर जुत सुधा वदन तुव जोय।
श्रवण नैंन में चैंन हित कब सेवों वलि सोय ॥८४॥

चौ०—हे रसरूपा रस उमंग में। रस कुटिला निज अलिनि संग में ॥
फूलि फूलि प्रति गनि मांही। वीनत फूल कवहुँ सचु पाही ॥
पिय के सँग जिय के सुखकारी। कपट झगर झगरत सुकुमारी ॥
कबहुँ रिसभरी ह्वै रसवदना। मम मोदहि हे सरसिज वदना ॥
बढी वेरलों कब अति भारी। सुभग व्रता करि हौ बलिहारी ॥८५
दुःसह काकु वचन अनगन में। सरस प्रियतया मन मोहन में ॥
प्रार्थ्यमान ह्वै कें अतिभारी। मानभंग हित तुव वलिहारी ॥८६

हे आतुर यह जन सुखरासी । प्रीति रीति सों पूरन मासी ॥
नृत्यरु गीत पुनीत जु भारी । अहो मंगला मंगलकारी ॥
वीनादिक जंत्रनि कृत जानौ । महा महोच्छौ सौ उनमानौ ॥
अवर अघट घट हे सुखदानी । भरि भरि सुच्छ सुवासित पानी ॥
पूरनमासी पगि हित पैमें । वृन्दावन अधिपत्य विषै में ॥
तुव अभिषेक करें धीरा जब । सो तेखों लेखों जु भाग कब ॥८७॥
श्रीदामा भइया भरि चायनि । हे सु नेह जुत अजुत जु गायनि ॥
दै कृपना जटिल हि सुखकारी । करि संतोष ताहि अति भारी ॥
राखी पून्यौ में भरि चायनि । निज मंदिर में हे सुखदायनि ॥
जब लैहै तुम कों सचु पाहीं । तुम हूँ तब स्वामिनि बलि जाहीं ॥
हरष सोग कृत दृग जलधारा । तामें भीजि रहौ निरधारा ॥
लै तुम कों तब हे सुखदानी । श्री बृषभानुरु कीरति रानी ॥
भरि वत्सल रस कब अति अनुपम । लाड़ लड़ावें देखतिमें मम ॥८८॥
सोभा छन्द—अनगन अलिगन सोंही । ह्वै अति ही जु लजोंहीं ॥
लै मोकों सचु पांही । गिरि गहवर के मांही ॥
कब सिखवौ तजि खेदै । गानरु तिंह सुर भेदै ॥८९॥
ललितासों सुकमारी । ह्वै सु जाचिता भारी ॥
अनगन निज गन मांही । लाजनि सों बलि जांही ॥
नमित मुखी अति ह्वै कें । जलज-मुखी चित दै कें ॥
सरस काव्य कुल जोई । मोहि मया भरि सोई ॥
कब स्वामिनि बलिहारी । पाठ करै हौ भारी ॥९०॥
सोरठा—निज सर तीर कुटीर पूजित भ्रमरनि भीर जहं ।
कब सिखवौ वलि वीर मोहि मया भरि कच्छपी ॥९१॥
चौ०—प्यारे के संग करत विहार । टूटै प्यारी प्यारौ हार ॥
लै ताकों गुहिवे के काज । निज अलिगन सों भरि अति लाज ॥
मोहि मया भरि परम सुदेस । संज्ञा ही में सरस निदेस ॥
कब दैहौ अति ही सचु पांहि । वलि जांहीं स्वामिनि वलि जांहि ॥९२
खान पान चहुँ ओर निरखि कै । समें समझि भरि नेह हरषि कै ॥

कब उगार स्वामिनि अति सुख में । निज मुख तें दैहौ मम मुख में ॥९३
प्यारे के संग वारी वारी । मदन युद्ध में ह्वै मतवारी ॥
भूलि रहौ जो किंकिनि जाला । दयित मधुर तर परम रसाला ॥
आन समें सुधि ठान जु आछें । सैंननि में तिंह हेत जु पाछें ॥
कब मोकों तुरित हि सचु पांहीं । लै प्रेरन करि हौ वलि जांही ॥९४
निपट तनक हूँ तें जु तनक पुनि । कोऊ एक चूक की जु भनक सुनि ॥
हे धीरा स्वामिनि वलिहारी । दैहौ दंड प्रचंड जु भारी ॥
सो सुनि ललिता अति रिस भरि है । लै मो कों तुव ढिग अनुसरि है ॥
हे स्वामिनि तुम यह जनकों तब । सदय हृदय लखि हौ जु नेंकु कब ॥
उपदोहा—हे स्वामिनि हौं हों जु तिहारी हों जु तिहारी ।
तुव विन निहचै मीच हमारी हे सुकमारी ॥
कंचन वरनी यहै जानि चित हे दुख हरनी ।
लेउँ चरन ढिंग मोहि मया भरि मंगल करनी ॥९६॥
दो०—निज सर चलि-चख पिय सहित तुव आस्य दहद सोय ।
यहै ठौर मम वास अरु इह थल ही स्थिति जोय ॥९७
चौ०—अहो सरोवर मम ईसा जो । नित प्रति तुम हीं में भरि हित सो
रसिक मीत रस सदन संग में । विलसत हुलसत मदनरंग में ॥
जौ तुम तिनके हे वर सुखकर । हौ अति प्रिय हूतें पुन प्रियतर
तौ मम साजी वातें हितकरि । दिखवौ अद्भुजु सद्य मया भरि ॥९८
अहो विसाखा मम स्वामिनि पुनि । छिन न तजै तुव संग रंग सुनि ।
सम वय धर्म मर्मतें जु हद्द । हौ तुम तिंह परिहास आस पद ।
यहै हेत सुमुखी हित ह्वैकै । मम ईसा कों नेंकु दिखैकै ॥
विरह हता मैं हों हत भागनि । राख हु प्राननि मोर सुहावनि ॥९९
अहो नाथ हे गोकुल चंदा । हे प्रसन्न मुख कमल अमंदा ॥९१
हे अति सधर मधुर मुसकनि जुत । हे करुणा रस भीज्यौ अद्भुत ॥
जहं तुव सहित सहित वलिहारी । विरहति मम स्वामिनि सुकुमारी
तहं मोहूकों तुरित हि हरषित । हित सों लेवहु हित सेवाहित ॥१००
तुव पद नखर सिखर रस गोभा । लखियतु तामें अनुपम सोभा ॥

जिहकन हित लछमी ब्रतधारै । लहि न सकै पुनि रचि पचि हारै ॥
हे स्वामिनि भामिनि नव गोरी । जौ न प्रकास हु मम चख जोरी ॥
तौ वकहा तिन प्राणनि सों मम । जे दुख दाई दाव अनल सम ॥१०१
सुधा समुद सम आसा भारी । ताहीं सौं स्वामिनि वलिहारी ॥
नीठ नीठ दिन अगनित बीते । भए न आज हु लों चित चीते ॥
अब स्वामिनि निहचै जु पतीजै । जौ न कृपा करिहौ सुनि लीजै ॥
तौ वकहा जीवातु मंद में । कहा व्रजरु व्रजराजनंद में ॥१०२
कृपामयी हे मंगल करनी । मो दुखिया प्रति हे दुख हरनी ॥
जौ न कृपा करिहौ अति अनुपम । तौ बकहा अति प्रलपन में मम ॥
पैं तुव कुंड घने दिन निर्मल । भये जु मोकृत सेव्यमान भल ॥
येउ कहा हित सों नहिं ढरिहैं । करुणामयि करुना नहिं करिहैं ॥१०३
अहो प्रणय शीला सुकुमारी । हित सेवा प्रापत हित भारी ॥
अघट विघट दुख दाव अनल भर । दह्यमान जियरा हों अतितर ॥
अतितर अमित रुदन सों भारी । करुणाभयि स्वामिन वलिहारी ॥
श्री विलाप कुसुमांजली जु अब । हृदै धारि पद पंकज में तव ॥
मैं अर्पन कीनी स्वामिन जौ । तुव प्रसन्नता नेंकु करहु जो ॥१०४
दो०—अमरकुंज रसपुंज मधि भानुसुता के कूल ।
नव राधा गोविंद जहँ जुग जुग जीवन मूल ॥६६॥
सीतापति पद कमल महि मन मधुपहि सरसाय ॥
श्री रघुनाथहि नाय सिर दास गुसांई भाय ॥६७॥
श्री विलाप कुसुमांजली सुर-वानी परकास ।
नर वानी में ताहि पुनि सचि वृंदावनदास ॥६६॥
मति अनुरूप विचारि कै रच्यौ सुग्रंथ अनूप ।
चूक्यौ होय सुधारियै कवि कोविद रस भूप ॥१००॥
संवत सत दस आठ अरु वरष चतुर्दश जानि ।
पूस सरस सित पंचमी पूरन ग्रंथ वखानि ॥१०१
॥ इति श्री बिलापकुसुमांजली भाषा समाप्ता ॥

———

मुद्रक—बा० राजनरायण अग्रवाल, बी० ए०, मॉडर्न प्रेस, आगरा ।

प्रेमभक्ति चंद्रिका भाषा

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥
श्रीचैतन्यमनोभीष्टं स्थापितं येन भूतले ।
स्वयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम् ॥२॥

दो०—भावराधिका माधुरी आस्वादन सुखकाज ।
जयति कृष्णचैतन्य जय कलि प्रगटे ब्रजराज ॥३॥
कलि प्रगटायो कृष्ण जिनि सीतापति मम ईश ।
जयति जयति अद्वैत प्रभु दें पदरज मम सीस ॥४॥
भूमि प्रेम ब्रजभूमि महि जिनकौ निलय अनूप ।
रूप सनातन वरनि हों जानि सनातन रूप ॥७॥

सोरठा—दास नरोतम जानि सुखद नाम अभिराम शुभ ।
जग जिहिं ठाकुर ठानि बहुरि महाशय भनत भल ॥६॥

सोभा०—तिन करुणालय भारी । दीन जननि हितकारी ।
लखि लखि जीयनि जाला । कलिमल मलिन विशाला ॥

विषई कुटिल अभागी । ऊलट बट अनुरागी ।
तिहिं मधि जे पुनि आछै । ढरे कर्म के पाछें ॥८॥
तिनहूतें जे आगे । ज्ञान माँहि ते पागे ।
विषई कर्मठ ज्ञानी । नाहिन हरि पद ध्यानी ॥६॥
निज निज मत लै ठाने । परम तत्व नहिं जाने ।
तिन के हित हित कारी । निज चित मया विचारी १०
बहुरि विचारि सु ऐसें । सब कौ खेम सु जैसें ।
पंडित जे सु प्रवीना । मूरख वितपति हीना ॥११॥
अस रचना रचि कीजै । सब कैं सुगम पतीजै ।
यहैं धारि तिहि पाछैं । श्रुति पुराण मथि आछैं ॥१२॥
कर्म धर्म बृत भेवा । ज्ञान ध्यान अनदेवा ॥
तजि दीने निरधारा । कीने हरि पद सारा ॥१३॥
हरि पद प्रीति सुजोई । वर पुरुषारथ सोई ।
ताहि गाउँ बरबानी । सुघर मधुर सुखदानी ॥१४॥
तामें भरि अभिलाषा । लै गाई करि भाषा ।
प्रेमचन्द्रिका नामा । भयो ग्रंथ अभिरामा ॥१५॥
मनहुँ प्रेम रस जोई । मूरतिवंत जु सोई ।
ग्रंथ रूप सरसांही । प्रगट भयो घर मांही ॥१६॥
सुनत नाम पुन जोई । तुरित रहें नहिं कोई ।
तनक भनक में जानौ । छके प्रेम नर मानौ ॥१७॥

सुघर मधुर जे गाये । प्रेम कौ जु झर लाये ।
जे लै उच्च उचारे । आप तरे जग तारे ॥१८॥
कंठ पाठ जे राखे । तिहि पद सुर अभिलाखे ।
ते निरभै जग मांही । कालऊतें डर नाहीं ॥१६॥
धनीं अपन पै जानै । सुरपति रंक बखाने ।
आन धर्म बृत आने । तृण समान अनुमाने ॥२०॥
भुकति नरक सम देखी । मोच्छ तुच्छ करि लेखी ।
हरि हिय देखे आछैं । हरि विचरे तिहि पाछैं ॥२१॥
उत्तम मध्यम जोई । अधम रह्यौ नहिं कोई ।
भये त्रिविध नर नारी । प्रेम भक्ति अधिकारी ॥२२॥
प्रेम चन्द्रिका भारी । ग्रंथ जु मंगल कारी ।
महिम अमित निरधारा । क्यों हूँ बार न पारा ॥२३॥
जग जन के मनभायो । उदधि अंतलों छायो ।
सुनि वृन्दावन बासी । हरिवल्लभ सुख रासी ॥२४
बढ़ीं अमित अभिलाषा । ऐपै सुगमन भाषा ।
तब निदेश सुखकारी । निजभाषा हित भारी ॥२५॥
मोहि मया भरि आछैं । करि बोले तिहि पाछैं ।
लसैं अर्थ जिमि यों हूं । पलटै वानीं क्यों हूँ ॥२६॥
अस रचना जब कीजै । हमरे सुगम पतीजै ।
सुनि निदेस रुचिकारी । बढ्यौ मोद मम भारी ॥२७॥

दोहा—हरि उमंग हिय रंग भरि धरि निदेस पुनि सीस ।
बहुरि सुमिरि पद बिमल अति सीतापति निजईस ॥
प्रेम-भक्ति-रस-चन्द्रिका सुखद नाम रस धाम ।
ताहि सुप्रेम प्रकाशनी रचत ग्रंथ अभिराम ॥२६॥

—:❀:—

अथ ग्रन्थारम्भः ॥

सो०—गुरु पद पंकज जोहि कोमल बिमल सुवास अति ।
भक्ति सद्म सुठि सोहि बर आदर बरनहुं प्रथम ॥३०॥
जिंहि प्रसाद दृढ़ पोत अहो भ्रात अवदात मति ।
चढ़ि तरियै भव सोत हरि पद हौंहि उदोत पुनि ॥३१॥

गुरुवर मुख सरसिज मधुवानी । मादिक मधुर सरस सुखदानी ॥
मति मधुपहि नित तहँ दृढ़वासा । भूलि करहु जिन जिय अनआसा ।
गुरुपद पल्लव परम सुहावन । पावन रीति नीति मन भावन ॥
ता में रति अति गति अभिरामा । जिहिं प्रसाद पूज मनकामा ॥

दो०—जनम जनम निज ईस मम जिन दीने दृग दोइ ।
अघट ज्ञान घट महि प्रगट कीनौ करुणा भोइ ॥
प्रेम भक्ति परकास जहं नसैं अविद्या रास ।
जासु सुजस निस दिन रटहिं श्रुति पुरान इतिहास ॥

गुरुवर करुणा सिंधु अगाधा । दीन बंधु पूरक मन साधा ।
लोकनाथ लोकनि निरधारा । इम राजत जिम प्राण अधारा ॥
हा हा प्रभुवर मयासु कीजै । निज पद पल्लव छाया दीजै ।
वदत तिलोकी नभ सुख कंदा । प्रगट होय तुव अस जस चंदा ॥

पद पराग हरिजन निज भूषण । सजहु तजहु अनगन तनदूषन ॥
नित विचरहु तिन ही के पाछैं । जाते नव नव अनुभव आछैं ॥
मार्जन भजन होंय मन रंजन । सज्जन के संगति भव भंजन ॥
तव अज्ञान अविद्या लाजै । सूर निरखि जिमि कायर भाजै ॥
रूप सनातन जै सुभकारी । प्रेम भक्ति रस भूपति भारी ॥
जुगल विमल सुचिमयवपुअनुपम । अमल रुचिर रुचकरुणालयसम
जिहिं प्रसाद अति हरषित तनमन । भूले भव बाधा जन अनगन
दीन दुखी पतितन के काजै । प्रगट अघट सुरद्रुम जिम राजै ॥
दसधा रीति पुनीति सुहावनि। निज निज ग्रंथनि में मनभावनि॥
बरनें भरि हित चित पुन सोऊ । अति रसाल विशाल मतिदोऊ॥

भनक सुनत ही तनक जिहि लहै मोद निरधार ।
जुगल विमल उज्वल सुरस लसै सरस आधार ॥

जुगल प्रेम अति स्वच्छ सु ऐसें । लच्छवान कलधौत सु जैसें ॥
धनि असधन जे हिय हरषाही । कीनैं प्रगट अघट धर मांहीं ॥
ज जै जै श्री रूप सनातन । लै पोखहु तोषहूँ जु यह धन ॥
यहै रतन भरि जतन अपारा । निज उर महि धरि हों करिहारा

विदित भागवत मरम सु जोई । नवधा भक्ति धर्म्म सुठि सोई ।
बिन छेवा नित सेवा करिहों । यहै नेम नित खेम सुमिरिहौं ॥
आन देव ढिग कबहुँ न ढ़रि हौं । अपनी टेव तें जु नहिं टरिहों ॥
कही जु बात भ्रात मन दीज । वर कारण यह तत्त्व पतीज ॥

संत रु ग्रन्थ गदित गुरुदेवा । जानि मानि हिय महि सम भेवा ॥
प्रेम वारि मांही मन खोलैं । करत रहौं दिन रैंनि कलोलैं ॥
भक्तिहीन जे ज्ञानी करमठ । मन क्रम लै तजि हों सु जांनि सठ
सुनउ नरोत्तम नित हित काजै । यहै तत्व हिय माँहिं सु गाज ॥

तजि अभिलाषा आन अरु ज्ञान कर्म पुनि जोइ ।
मन बच काय सुभाय भरि हरि भजि हौं रसभोइ ॥
तजि देवा देई भजन संत—सँगति हरि रूप ।
शक्ति करी सुठि भक्ति यह कारन परम अनूप ॥

विदित महत जन मारग जोई । सुगम सुलभ निहकंटक सोई ॥
करि विचार पूरव-पर ढरिहौं । तिहि मगतें पग अनत न धरिहौं ॥
तजि अवगुन सजि भजि सुठि सीला । साधन गुनगाहन हरिलीला
नित प्रति प्रीति रीति भर जैसैं । मन बच क्रम करिहौं लै तैसें ॥

असत संग बहुरिहु अनगीता । सठ करमठ ज्ञानी दुरि नीता ॥
लाख जतन करि दूरि हि राखै । जौ सतसंग रंग अभिलाखै ॥
सत संगत ही में अनुरागै । दशधा भक्ति सुधारस पागै ।
गावत लीला मधुर सुहावन । सुवस वसौ व्रजपुर मन भावन ॥

जोगी जंगम करमठ ज्ञानी । अन्यदेव पूजक अरु ध्यानी ।
अनरथ मूर कूर दुख दाई । दूर करहु छवि पूर सदाई ॥
कम धर्म दुख सोग अपारा । आन जोग पुन जे निरधारा ॥
जानि मानि दुखकारी भारी । तजउँ भजहुँ नित गिरवर धारी ॥

तीरथ व्रत मांही श्रम जोई । मन अटकन भटकन श्रम सोई ॥
नव गोविंद चंद अभिरामा । सकल सिद्ध जुग पद सुखधामा ।
सजि सजि दृढ़ विश्वास सु आछैं । तजि तजि मदमत्सर तिहि पाछैं॥
सुनिसुनि नितप्रति निज हित वाणा । भजन अनन्य करहु सुखदानी

हरषि हरपि करि संगत हरिजन । निरखिनिरखि पुन हरवल्लभतन॥
श्रवनरु कीरंतन सुभकारी । तहां रुचिर रुचि श्रद्धा भारी ॥
अरचन अरु सुमरन पुन ध्याना । नवधा भक्ति जोग सुठि ज्ञाना ॥
धरि धीरज निरधार जु धारन । यहै भक्ति है परम सु कारन ॥

निज इन्द्रिय गण में हरि सेवा । तजि अरचन अन देई देवा ॥
यहै अनन्य भक्ति रसवानी । जानत बड़भागी सुख दानी ॥

उपालम्भ गन धीर दंभ रोस परकास जहं ।
निरखि बढ़ै हिय पीर हरपि तजहु किन सुमतिवर ॥
हैं इन्द्रिय जिहि भेव अस रिपु गन वपु महि सुनहु ।
गहि गहि निज निज टेव सवल परसपर नित लसें ॥

सुनि न सुने ये कान सु एसैं । जानि प्रान अनजान सु जैसैं ।
बार बार सिख दीनी मैं हूँ । करि न सकैं दृढ़ निहचै क्यों हू ॥
लोभ मोह पुन क्रोधरु कामा । दंभ सहित मद मत्सर नामा ॥
धाय चाय अपनाय जु लै हौं । ठौर ठौर पुनि ठौर जु दैहौं ॥

निरखि निरखि नित हिय हरषांही । जीति मीति रिपुगण बपुमांही॥
सुमरि सुमरि हरि पद जुग जोई । तजि अयास भजि हूँ पुनसोई।।
अरपि कर्म हरि सेवा महि सुनि । क्रोध भक्त जन दोषी महिपुनि
लोभहि ठौर और अन नांही । सत संगति हरि गाथा मांही ॥

इष्ट लहन विन छिन पल जोई । मोहि मोह थल भायो सोई ॥
मद हरि गुण गन गान सु मांही । लै धरिहौं जित तित हरषांही॥
नांतर सुवस बसै जौ कामा । अति समरथ अरु अनरथ धामा ॥
यहै प्रेत दुख देत जु ऐसैं । भक्ति सुगम पग कंटक जैसैं ॥७०॥
काम क्रोध ह्वै सकें न कोई । बाधक वे जन साधक जोई ॥
दुर्लभ हरिवल्लभ संगति रस । जौ पै सरस मिलै जु भागवश ।
हहा क्रोध भरि कहा न करई । को कोविद तिहि मग पग धरई ॥
तजहु ताहि नित प्रति पुन आछैं । लोभरु मोह कौं जु तिहि पाछैं
करिराखहुँ षटरिपुजु तुच्छअति। निजमनके सुअधीन स्वच्छमति ॥
नव गोविंद चंद जिय जी कैं । सुमिरि सुमिरि पद पल्लव नीकैं ॥

आपहि आप पाप रिपु गन तब । सुनिसुनि नव गोधिंदप्रवरस्त्र॥
तजि हैं ए भजि हैं पुन ऐसैं । केहरि डर करिनिकर सु जैसैं ॥
नसै बिपद गन अमित अपारा । लस जु सुख संपद निरधारा
करहु मीति करि प्रीति जु धारन । प्रेम भक्ति सुठि परम सुकारन ॥
असत क्रियासु छांडि अन छलबल । तजि अनरीतिरु नीति मंदभल
सुमति सुनहु पुन जे अनदेवा । भूलि करहु जिन रति मति सेवा
निज निज थल ही में मैं जानी । प्रीति रीति की खैंचातानी ॥
कबहु न पूजे तन मन साधा । चलत भक्ति मग पग-पग बाधा ॥
अपन भजन मग सुभग सुहावन । उमगि उमगि चलिहौं मनभावन
इष्ट देव चरननि सुचिकारी । लीलागान में जु रुचि भारी ॥

नैष्ठिक भजन सु तंता । अहो भ्रात रसबंता ।
तोहि कह्यौ जु इकंता । साखि जहाँ हनुवंता ॥

गगन बसैं जे सगन देवगन । बहुरि पितरगण लसैं जु अनगन
भरि उमंग सुख रंग हि साँचें । साधु साधु भाषत पुन नाच ॥
जुगल उपास कहैं जन जेई । प्रेम उदधि मधि मगन जु तेई ।
यहै तिलोकी सुनहु मित्रवर । ल वारहु तिहि चरन कमल पर ॥

प्रथक अयास जोग पुन जोई । है दुख मैं विष भोग जु सोई ।
हरि सेवन जु सुधारस नीकैं । सुवस बसहु ब्रज महि नित पीकैं
हरि गुन कथन बहुरि हरि नामा । सत्यजु सत्य सुखद रसधामा
ब्रज जन संग रंग रस पाग्यौ । विचरहुँ सोहन गोंहन लाग्यौ ॥
हरि सेवा महि सुचि रुचि कारी । लाख लाख अभिलाखजुभारी
है निरभै जिय करि दृढ़ आशा । गहि मन में पन दृढ़ बिश्वासा
बदत नरोत्तम इमि मनबच क्रम । ढर्यौ नाथ मैं भरि जुअसतभ्रम
अब जु हाहा खात किरोरनि । तारहुँ प्रभुबर निजदृग कोरनि ॥

तुमही करूणासिंधु अरु अधम बंधु प्रभु मोर ।
करहु नाथ इहि ओर कहुँ दीन जानि दृग कोर ॥
काम गाह के मुख परयौ भौरैंई भहराय ।
करहुँ त्रांन अब प्राणपति क्यौं हूँ आयजु धाय ॥८७॥

सकल जनम भरि हे गिरधारी । भयो जु मैं अपराधी भारी ।
निपट जु रीति अनीति सु लीनी । कपट रहित नहिं सेवा कीनी
जदपि हौं जु अज्ञान रु दुरमति । तदपि प्राणपति तुमहीं में गति
मोहि तजउ जिन मो सम नाहीं । दीन अधम तम यह जग मांही
पतितनि पावन नाम सुहावन । रटत स्याम तुव जन मन भावन
अब निहचै यह जानत मैं हूँ । तजे नाथ गति नाहिन क्यों हूँ ॥
हों अपराधी जदपि अगाधा । तदपि नाथ तुव पद मन साधा ।
सत्य सत्य है सती सु जैसैं । प्रेमवती पति के पद तैसैं ॥
अहो नाथ तुम परम देववर । तजहु मोहि जिन हौं निज अनुचर
चाइनि सौं धरि पाइनि सीसा । कहत सुनहु मम प्राननि ईसा ॥
जौ अपराधी हौं जु अपारा । तदपि नाथ तुमही निरधारा ।
दै सेवा बिन छेवा प्रभुवर । करि राखहु पद पंकज मधुकर ॥
भयो काम बस चित दिन रैंना । सुनत न नितप्रति निज हितबैंना
असत मनोरथ छुटें न क्यों हूँ । रचि पचि हारि रह्यौ प्रभु मैं हूँ ॥
तुम तैं जिमि सरद्रम निरधारा । मोहिकरहु प्रभु अंगीकारा ।
जग में हौ अघटरु अविनासी । प्रगट होइ तुव करुणारासी ।
देखहु हरि तिय लोक सुमांही । मोसौं अगति पतित अरु नाहीं ।
धरहु नाम अभिराम सुभारी । दास नरोत्तम पावन कारी ॥
रटहि नाम तुव जग जन जैसैं । पतितनि सुगति स्याम घनएसैं
सुदृढ़ आस परकास जु भारी । करहु दास निज गिरवरधारी ॥
दुखित नरोत्तम जग महि भारी । करहु सुखी प्रभुवर सुखकारी ।

घूंमि रु झूमि रहौं तन मन में। तुमरो भजन रु कीरंतन में ॥
ता में विघन न होय सु जैसैं। नित प्रति धरकत गात जु ऐसैं।
भरि भरि दृग भाषत अरु सोई। छिन छिन अरु पलपलपुनजोई
आन कलेश लेस अनगाथा। नाहिन जहँ तंह जैहों नाथा ॥
नित प्रति चित महिनिज हित काजैं। तुम्हरे पद सुमरन सुठिराजैं
अविरत अरु अबिकल पुन नीकैं। जे तुम्हरे गुनगन जियजीकैं।
नित प्रति संत सभा मधि रूरौ। गान करत दिन करिहौं पूरौ ॥
आन दान व्रत आन सु जोई। तनु समान अनुमान न होई।
सेवा आनरु देवा दूजा। भोरैं उ नहीं करिहौं पूजा ॥
हा हा हरि हरि भाषत भाषत। नाम सुधा कन चाखत चाखत।
नित विचरहु अति हरषित तन में। दूजीबात न होय जु मन में
जीवन मरन में जु एक गति। नव राधा गोविंद प्राणपति।
जुगल प्रीति सुख सरस सुधासर। ता में मगन रहौं निसवासर ॥
जुगल उपासक जे निरधारा। हैं मेरें ते निज उर हारा।
असवानी रसदानी जोई। वसहु लसहु हिय मांहि जु सोई ॥
जुगल चरण सेवा अति निरमल। जुगलविमल पदप्रच्छालनभल
जुगल विमल हिय प्रीति सु जोई। है निजु प्राणप्रतीतिजु सोई ॥
जुगल स्वच्छवर रूप सु ऐसैं। लच्छयकाम रति भूपति जैसैं।
लीला ललित सधारस अनुपम। भयो चहत मन बेला वल सम
हा हा जुगल किशोर किशोरी। जग जन मन भावनि शुभ जोरी
तुव पद में विनती बहु भांतनि। हौं जु करहु गहि गहि तृनदांतनि
स्याम धाम व्रजराज कुंवरवर। कुंवरि बहुरि वृषभान नामकर
जदपि नाम जुग सरस सुहावन। राधा नाम सु अति मनभावन
मरकत मुकर रुचिर स्यामघन। सौंन केतकी सुमरि कुंवरितन।
सोभा सरस सदन छवि भारी। कोटिमदन मद भंजन कारी ॥
नव नागर वर कुंज बिहारी। नटन कला चतुरा सुकुमारी।

तांन मान सुर मधुर सुहावन। जुगल विमल गुण जुगमनभावन
सोभा सदन बदन छवि भारी। पीत-नील दुति सुचि रुचिकारी
हाव भाव चित चाव अपारा। भूषण निरदूषण निरधारा ॥
नील रु पीत बसन तन सोहन। गोरी भोरी स्याम सु मोहन।
जुगल चाव हिय भावन-जोई। सोभित तन लोभित मन दोई ॥
रतन जटित भूषण मन मोहै। सदृश अंग प्रति अंगनि सोहै।
सोभा सिंधु अगाध अपारा। चकित नरोत्तम लखि निरधारा ॥
गान करहु गुन अनगन निशदिन। प्रेममगन हरसितमन छिन २
यह अभिलाषा है हियमहिअति। सुनहु कहूँ दै कांन प्राणपति

रग भजन मग जोई। हैं निज संमत सोई ॥
सोव कहत निरधारा। लोक वेद मधि सारा ॥११६॥
अलि अनुगा सुभगा सु है लहि ब्रज महि सिधिकाय।
वहै भाय अरु चाय में निज जियरा सचुपाय ॥११७

श्री राधिका की जु सहचरी। अनगन राजति हैं रसभरी।
मुखियनि कौं कहि हौं अभिरामा। ललिता बहुरि विसाखानामा
चित्रा चंपलता जु ललित गुन। देवी रंग रु सुदेविका पुन ॥
तुंग इन्दु लेखा तिहि पाछैं। अष्ट सखी मैं लखी जु आछैं।
नित प्रति संग रंग अनुरागैं। हरिलीला जु सुरस रस पागैं ॥
नर्म अली रंगरली सु जेई। सुन हु मीत करि प्रीति जु तेई ॥
रूप मंजरी परम अनूपा। बहुरि मंजरी रति रस रूपा ॥
श्री लवंग मञ्जरी जु नामा। मंजुलालि पुन सुनि अभिरामा।
सरस जु रसमंजरी संग करि। श्री कस्तूरी आदि रंग ढरि ॥
भरि कौतुक हरि कौं जु पतीजै। सेवहि सुवस प्रेम रस भीजै ॥
हु अनुगा इनकी विन छेवा। लै हौं जांचि सु दसधा सेवा।

भूमि २ अरु झकि २ लाजनि। समझिहौं जुद्दगकोरहि काजनि॥
जगमग रूप अनूप गुन पगैं। भरि सुहाग अनुराग रगमगैं॥
अलिन मांहि चलि करि हौं बासा। तब ही पूजैं तन मन आसा

श्रीवृन्दावन माहि समैं समुझि सजि अलिन मधि॥
बैठाऊं हरषाहि जोरी सुभग सुहावनी॥१२५

कामोल्लाला छंदः—

सुनि कब करि हैं इहिं और कहू द्रग कोर जु करि सनमान अलि।
अब लै २ चौंर सुढारि हौं मुख दै द बीरी पांन चलि॥१२६॥
जुग अमल कमल पद टहल भल नित पल २ अविकल सुमिरकैं।
भरि भाग सुहाग अनुराग बस ढिग रहि हौं कुंवरि अरु कुंवरकैं।
है साधन महि जो भावना तन सिद्धि मांहि सो पाइयै।
भरि भाय चाय चितलाय इम मग राग उपाय जु गाइये॥
जिहि काचै साधन भनत भल भरि प्रेम पकैं करि प्रेम गनि।
यह भक्ति सुलछन को जु अब सुठि तत्व सार निरधार भनि॥
तन सिद्धि रिद्धि सो पाइयै धन साधन में जो चाहियै।
करि पक्व अपक्व सुकहत जिहि सोइहि थल भल अवगाहियै॥
इम बदत नरोतम दास पुनकहू मिलैं विमल मम भाग अस।
हरि ब्रज पुर में भरि हरष हिय नित सुवस बसौं अनुराग बस।

जब लिखि हैं लखि अलिनि में मोहि मया अति भोय।
तब पूजैं अभिलाष मम लाख लाख विधि जोय॥१३२॥

अमल जुगल पद कमल विराजैं। परमानंद कंद सुख साजैं॥
हैं मेरैं जिम जीवनि जी कैं। रति प्रेमा तहं होहूँ जु नीकैं॥
स्यामा स्याम नाम अभिरामा। है जु उपासक कौ रसधामा॥
नाइ सीस जुग चरननि मांहीं। उमगि उमगि रटि हौं हरषांही॥

जुगल ललित रस केलिसु जो है। मधुर २ हूँ तैं अति सोहै।
ताकौ पुन सुमिरण जु सदाई। मन श्रवण रु प्रानन सुखदाई॥
साधन साधि इहै अब जानहू। जानि मानि हिय आन न आनहू॥
यहै तत्व पुन है निरधारा। सकल सिद्धि माँहि सुठि सारा॥१३६॥
नव अंबुद सुन्दर दुति राजै। मधुर मधर हूँ तें जु विराजै॥
बैदग्धी वर अवधि सुहावन। जगमग सुभग बैस मन भावन॥
कोटि मैंन नैंननि सुखकारी। बनवारी पीतांबर धारी॥
जगर जगर मनि भूषन राजै। मोर मुकुट पुन सीस विराजै॥
मलयज अरु कुंमकुंम पुन मृगमद। अंग २ रचनाजु रचितहद॥
मन मोहन मूरति अतिरङ्ग। नट नागर वर ललित तृभंगी॥
नव पहुपनि की माल सुहांनी। मनमानी अति ही जु निमानी॥
राजत उर मांही सुठि सोभित। मत्त जहं मधुकर मा[illegible] लोभित॥
मृदु मुसिक्यान मधुर सुधासम। बैदग्धी लीला पुन अनुपम॥
नव गोविन्द नवल छविधारी। निरखि निरखि मोहत व्रजनारी॥
रतन जटित नूपुर पग सो हैं। तिहिं उपमा कौं जग महि को हैं।
मति अनुसार सुनहुँ सुखकंदा। राजहि नभ जिम जुग नवचंदा।
धुनि नूपुर जिम किलक मराला। हैं जु हंसिनी व्रजकुलवाला॥
सुनि २ कैं पुन पुन अकुलाही। रहिन सकैं निज निज घर माही॥
रति बाढ़ै अति ही चित मांही। लोक लाज कुल कानि नसाहीं।
आय मिलैं हरि कों हरषांही। सती लहैं जिम पति सचु पांही॥

सदा सत्य गोविंद वपु नित्य बहुरि तिहि दास।
वृन्दावन धर सधर अति जगमग जोति प्रकास॥१४५

सुठि सीतल सुस्वछ करकारी। लच्छ जु कलप वृच्छ गुन धारी।
द्रुमवल्ली राजत पुन ऐसैं। षटरितु मूरति वंत सु जैसैं॥
नव गोविन्द चंद अभिरामा। परमानन्द कन्द रसधामा॥
जुवति वृंद ढिग अति रस रूपा। सोभा मत्र्र विहार अनूपा॥

भरि उमंग अतिहास रङ्ग रस । ढ़रि कौतक सेवहिं सु प्रेमबस ॥
ललित विहार सरस सुठि सोहै । निरखि २ मुनि गन मन मोहै ॥
ब्रज जुवतिनिके करि निरधारा । चरण सरण जानहु सुठि सारा ॥
निसदिन दृढ़ निहचैं सरसायैं । रे मन भजन करहु हरषायैं ॥
तजि हु आन संवाद सुजोई । बहुरौं वाद बिबाद जु सोई ॥
जानिमानिविष सम जनिचाखहु । प्रेमसुधारसहियभरिराखहु ॥
पाप रु पुन्य की'जु है काया । जानि अनित्यकरहु जिनिमाया ॥
करि निहचैं मनक्रमअभिरामा । तजहुधंध जन धन अरुधामा ॥
मरि जैहौ कित सौ मन मांही । जानि बहै दुख की सुधि नाँही ॥
ऐसो ज्ञान कौ जु है टोटौ । नित प्रति कर्म करत पुन खोटौ ॥
जिमि नरपति कौ राज बखानै । नटन कला नटकी पुन जानै ॥
अस धनधाम समझि हिय मांही । देखतही देखत कछु नांही ॥
अस माया कर जो घर मांही । तिहि सम परम ईस अरु नांही ॥
जौ निज खेम मांहि अभिलाखैं । तासौं मन नित प्रति डर राखैं ॥

पाप करहु जिन सुमति वर है संताप सु मूर ॥
अधम कूर पापी जु नर ताहि करहु नित दूर ॥१५५

पुन्य धाम सुख जाहि गनिज्जै । भोरे ऊ नहिं नाम भनिज्जै ॥
बहुरि नीत करि प्रीति पतिजै । भुकति मुकति दोऊ तजिदीजै ॥
दसधा भक्ति जु सुरस सुधासर । तामें मगन रहौ निसि वासर ॥
इहिंबिन आन गान पुन जोई । खार समुद्र निरधार जु सोई ॥
लसैं मोद हिय मांहिजु निस दिन । नसैं तापसुनि अनगनछिन २
परम तत्व जिहिं मीत भनत भल । तिहिं उपाय गायौ लैनिरमल

आन परस पुन जोई । जिहिं विधि होइ न कोई ॥
तामें हे सुखदाई । हो हु सु चेत सदाई ॥१५६

सुखद नाम हरि राधा । गान करहु विन वाधा ॥
परम ध्यान पुनि सोई । आन प्रमान न कोई ॥
करमठ ज्ञानी जेई । झूठे भक्त जु तेई ॥
ता में हे बडभागी । हो हु न तूं अनुरागी ॥
शुद्ध भजन पुन जोई । परम पुनीत जु सोई ॥
ता में चित दै आछैं । सुनि निज हित तिहि पाछैं ॥
ब्रजजन चरित सु जोय सुठि अनुरागी होहु तहं ॥
परम तत्व धन सोय जानि भ्रात अवदात मति ॥
सुद्धभाय भरि जाचिहौं दसधा गाथा जोय ।
मंत्र नाम अभिराम जुग जानि अभेद जु सोय ॥
हेत करहु पुन नेत बिन अमल कमल पद मैं जु ॥
है हैं छेद सुखेद विन ग्रंथ पाप जे हैं जु ॥१६५

मोहन सोहन छंदहि गाव हूँ । हरि राधा चरननि बल जावऊं ॥
सुनि२ पुनि२ नाम संत मुख । नितप्रति चित लहि हैं जु परमसुख
जानरूप सम गात जु गोरी । नवल अमल छबि नवलकिशोरी ॥
दरसन हित नैननि अभिलाखैं । रुदन करत छिन छिन दुखचाखैं
नव अंबुद अति दुति सुख धामा । अंग २ सोहन अभिरामा ॥
बदन कोटि मद मदन सु नासै । रूप अनूप सु जग परकासै ॥
चहूँ ओर सेवहिजहँअलिगन । भरि भरि हियअभिलाषसुअनगन
सोभा सुख अति अमित अनंता । जानत हैं सो रसिकइकंता ॥
बदत नरोतम हरषित तन में । इम भावत अब मेरे मन में ॥
नित प्रति अस रस सरिता मांही । मगन रहौं छिन २ हरषांहीं ॥

नाहिन कहि हौं आँन पुन हरि राधा करि ध्यान ।
सुपने हूँ नहि चहतु अन दसधा विन सज्ञान ॥१७९

जुगल प्रेम अति स्वच्छ जु ऐसैं । लछवान वर हेम सु जैसैं ॥
तामें पुन हरि हों भरि आरति । प्रीति रीति रस नीति संभारति

कवित्त-जल बिन मीन दीन जलद बिन चातक औ जैसैं
हो मधु बिन मधुपलै ठानियैं । चंद बिन चकोर औ पति
बिन सती जैसी ज्यौं ही रंक चित्त पुन वित्त हितमानियैं ।
छिन छिन छीन अरु दीन दुख लीन तौऊ एक प्रीति
रीति नीति एक ही बखानियें । तैसी रति मति अरु टेब
भेव चाब भाव ऐसी गति प्रेमी की सुप्रेम बिन जानियें ॥

विषै विषम विष सम जगमांही । है कलेस सुख लेस जु नांहीं ॥
सुनहु धीर धरि धीरज धारहू । वहै जु सुख दुख करि निरधारहू ॥
हरिबल्लभ संगति नित ठान हूँ । हरि पद प्रीति सुरस रस मानहूँ ॥
प्रेमभक्ति पुन परम अनूपा । जानहु सत्य सनातन रूपा ॥
वीच वीच हैं नीचरु झूठे । करि दूषन हूँ रहैं जु रूठे ॥
कुमति क्रूर सद गुन नहि मानैं । गुनगन में औगुण लै ठानैं ॥
नव गोविन्द विमुख जन जोई । अस धन ताहि फुरै नहि कोई ॥
परम तत्व को मरम न जानैं । रीति अलोकिक लोकिक मानैं ॥
सठ दोषी रु जे सुज्ञान हत । लहैं न संतनि को जु सुद्धमत ॥
भरि अभिमान आन नहिं जानै । नहिन अपन पे कौं पहिचानै ॥
भक्तिहीन अभिमानी जेई । दीन दुखी जग मांहि जु तेई ॥
करहि भावना अमित सु जोई । निरअरथक जानहु सब सोई ॥
जानि जानि हरि परम सुईसा । मानि मानि धरि तिहि पद सीसा
तजि तजि आन अयास सु जोई । भजिभजि प्रेमआस प्रभु सोई ॥

एकही सु अजपुर पुर आगर । नव गोविंद रसिक वर नागर ॥
सदा करहु नहं मंगलकारी । लाख लाख अभिलाष जु भारी ॥
बदत नरोतम इम अकुलांही । अस हरिजन जे हैं जग मांही ॥
हा हा तिनकौ विरह अनलवल । वरिवरि जांहि प्राण मम पलपल
निज अभाग की अवधि सुनांहीं । भयो मगन मैं मिथ्या मांही ॥
दुख अनेक सुख नेक न तन में । जागि रह्यौ यह आगि जु मनमें ॥

दो०-वाक अवेद सुभेद जिहिं वृन्दावन सुखधाम ।
धनि धनि प्रेमानंद धनि प्रगट जहां अभिराम ॥
सत्य नित्य सुख पीन अरु जरा मृत्त दुख हीन ।
श्री वृषभान कुँमारि हरिं ललित केलि रसलीन ॥१८५॥

हरि राधावर प्रेम सु ऐसैं । लछवान सुठ हेम सु जैसैं ॥
जिहि तरंग है जु रस सागर । को समझै विन रसिकन आगर ॥
सरस दरस हित जुग मुख विधुवर । जिमि चकोर दृग प्रानपरसपर
ध्यांन धरहि जिहि नितरति रतिपति । मीतप्रीति सुखको दोऊअति
वायैं विलसति गुननि अगाधा । श्री वृषभान कुमारी राधा ॥
सब जुवतनि में अति सुकुमारी । कनक बनक केसरि दुतिधारी ॥
लाल बसन तन लसन सु जोई । हिय अनुराग रँग्यौ मनु सोई ॥
बहुरि नीलपट अति निरदूषन । जगर जगर जग मग तन भूषन ॥
जुगल रूप लीला रस जोई । अलिगन निज नेंननि भरि सोई ॥
जानि मांनि जिम जीवनि जीकें । हरषि हरषि पीवहि नित नीकें ॥
बेदरु विधिहि अबेद सुजिहि थल । रतन जटित सिंहासन पर भल
नितप्रति मन भावन सुभ जोरी । सेव हुँ नवल किसोर किसोरी ॥
अस दुल्लभ मानुष तन पायैं । क्यों न भजहुँ हरिपद हरषायैं ॥
नेक हुँ नेक विवेक जु नांही । अंध परत भव बंध सुमांही ॥१६२॥
आंन क्रिया सु कर्म जिन करहूँ । वेद धर्म मग पग जिन धरहूँ ॥

करहु भक्ति मन क्रम अरु वैनां। हरि पदपल्लव मैं दिन रैंनां ॥
जानत हैंहै विषै विषमगति। क्योंन भजहु नितहित चित ब्रजपति॥
नंद कुँवर जानहु निरधारा। नव गोविंद सरस सुख सारा ॥

भ्रात मुकति जिहिं कहत जग नांहिन सुभदा सोय।
जा में हरिपद बिमुख जन रहैं अपन पौ खोय ॥१९५॥

भ्रात मुकति पद जोई। तिहि मग ढरहु न कोई ॥
जा में है निरधारा। बहुरि बहुरि संसारा ॥
नहि न खेम कर कैं हूं। जानत निहचै मैं हूं ॥
भोगै नरक अपारा। फिरि फिरि जनम विकारा ॥
मीत नीति सुनि लिज्जै। निज तन में न पतिज्जै ॥
बुरी रीति किरतंता। दै है दंड अनंता ॥
भ्रात कर्म गति जोई। है दुख सागर सोई ॥
धारा प्रबल अपारा। क्यों हूँ वार न पारा ॥
सुनि सुनि कैं पुनि आछैं। निरखि निरखि तिहि पाछैं ॥
संत ग्रन्थ मत मांनौ। जुगल चरन रति ठांनौ ॥२००॥
कर्म धर्म पुन जो है। प्रबल हलाहल सो है ॥
सुधा सुधारस भोरैं। पांन करहि जे थोरैं ॥
नाना जोनि भटक्के। सोच अभच्छ गटक्के ॥
तिनकौ जनम सुजानौ। अचल अधोगति मानौ ॥२०२॥
हरि राधा चरननि नाहिन रति। आंन कौंजु भाषत करि निजपति
नीति छाड़ि विपरीति जु ठानै। प्रेमभक्ति की रीति न जानै ॥

क्यों ही भक्ति परम नहि जानै। भरमहि भरम ध्यान पुन ठानै ॥
अस नर खर जेहैं जग महि पुनि। तिनकौ जीवन व्यर्थ हैं जुसुनि॥
जानि ज्ञांन अज्ञानी भाखैं। कर्म धर्म हू दृढ़ तरि राखैं ॥
नाना मत महि ह्वै जु भ्रमित मति। नांहिन जानैं भक्तिकीजु गति
कबहु न सुनि हौं इनकी बातैं। जानत हौं परमारथ जात ॥
इहै तत्व निरधार जु मांनौ। प्रेमभक्ति जन जीवनि जांनौ ॥
गिरिधारी जग व्यापक भारी। अज त्रिपुरारी अज्ञाकारी ॥
मूरति मूरति वंत मधुर सुनि। लीला गाथा है सु ललित पुनि ॥
यहै तत्व जानत पुन जोई। परम सघर उत्तम नर सोई ॥
भरि उमंग तिनकौजु संग करि। मन वच क्रम रहिहौंजु रंगभरि
नव गोविन्द चंद नवनागर। रस सागर वर रसिकनि आगर
तृषावंत तिहि पद निज मन दै। भजि भरि चाइ भाइ ब्रज जनलै॥
रसिकनि की सतसंगति में ढ़रि। रहि हौं प्रीति रीति रंग भरि ॥
सजि अभिलाषरु तजि अन आसा। ब्रजपुरमें करि अचलनिवासा
हरषि हराषि अरु भरि भरि चाइनि। गुरुवर अरु हरिजनके पाइन
करि अरपन निजमन निरधारा। तिनही के जु गदित अनुसारा
मन वचक्रम अलिको मत संमत। ह्वै हौं पुन तिनिकौजु जूथ गत॥
प्रेम मगन अति हिय हरषांही। सदा बिहरि हौं ब्रजपुर मांही ॥
लीला ललित गान दिन रैंना। जुगल किशोर अमल सुख ऐंना ॥
जानि मानि निज जीवन जसैं। जाचहु भरि अभिलाष जु तैस ॥
जीवन मरन मंजु सुनि लीजै। इहि बिन चहत न आन पतीजै ॥
दीन नरोतम की इह बानी। सुनहु प्रबीन संत सुख दाना ॥

आन कथा नहि सुन हुं अरु भनहुँ न भोरैं आन।
जो करि हौ अवगान सब परमारथ ही मान ॥२१५॥
निसदिन जाचहूँ धीठ ह्वै ईठ कथन महि लोभ।
इहि विन छोभ सु आन जो मानहु अनरथ गोभ ॥२१६॥

ईसा तत्व महत्व सु जो है। ताहि भनैं पुनि अस कवि को है ॥
को जानैं सो अमित अनन्ता। तातें सुनहुँ जु सुमति इकन्ता ॥
व्रजपुर प्रेम सु सत्य सरूपा। अनुचर निकर सनातन रूपा ॥
तजि तजि आन मानि बड़भागी। भजिभजि मनक्रम ह्वै अनुरागी
नव गोविन्द गोकुल चंदा। सत्य सनातन तन सुख कंदा ॥
छवि ओपी गोपी रु गोपगन। परिकर निकर लसहि जहँ अनगन
नंदग्राम जिहि धाम सुहावन। गिरिधारी जु नाम मन भावन ॥
अलिनि संग हरषितसु अंगिकरि। ताहिसु भजहुं उमंग रंग भरि
दसधा भक्ति तत्व पुन जोई। तोहि सुभ्रात कह्यौ ल सोई ॥
करहु भजन गहि दृढ़ विसवासा। तजन करहु जे आन दुरासा
गुरु प्रसाद जब ही सुठि लहियै। यहै तत्व तब ही अव गहियै॥
दसधा भक्ति सुधारस रूपा। अलि अनुगति अति रहसि अनूपा
सफल भजन मग होय जु आछैं। जब बिचरै हरि जन के पाछैं ॥
सुमरन भजन करत अविरामा। हरि लीला गाथा अभिरामा ॥
प्रेमभक्ति रस सम अन नांही। प्रगट होय जब ही हिय मांही ॥
तिहिं फल अचल होयमन निरमल। नसै पीर हियधीर सुनहु भल
विष विष महद विपद सुजानहु। पुनसंसार अनित चित मांनहु ॥
तजि हु मीत एहै प्रतिकूला। नर तन भजन कौं जु सुठि मूला ॥
सदा भजहु अनुराग रगमगे। लीला गाथा प्रेम सगवगे ॥
इहि विन जान आन पुन जोई। है दुख मूर सूर हिय सोई ॥

पद पराग वृषभानुजा करि भूषण निज काय।
आयसु मिलि हैं भाय भरि बिन अयास हरिराय ॥
चरन सरन वृषभानुजा जे करि हैं निरधारि।
ते उदार आसै विसद तिहिं पद की बलिहारि ॥

जै जै राधा नाम जिहिं वृन्दावन सुभ धाम।
हरि सुख ललित विलास निधि अवधि लसति अभिराम ॥

अस राधा गुण श्रवननि मांही। भनक परी कहु तनकहू नांही ॥
सदा रह्यौ हियरा दुख भीनौ। अस निधितें विधि सुखजु कीनौ।
राधा भक्त संग सुचिकारी। है जिनकी तामें रुचि भारी ॥
प्रेम मगन तिहि लीला गाथा। गावहि पावहि हरि निज नाथा ॥
यातें विमुख अधम नर जोई। अति असुद्ध विरुद्ध हिय सोई ॥
कबहु न देखहु अस जन आनन। नाहिन सुनहु नामनिज कानन
भ्रात नाम हरि जब अव गहियै। बिन बाधा राधा पद लहियै ॥
राधा नाम रटत सचु पायैं। आय मिलहिं हरि हू हरषाय ॥
करि सछेप करी यहै बांनी। तजिहु जु पीर धीर सुख दांनी ॥
इहि बिन आंन गांन पुन जोई। जांनि मांनि दुख खांनि जु सोई॥
अहंकार अभिमान सदाई। हिंसक असतज्ञान दुखदाई ॥
जौपैं अभिलाखैंजु खेम निज। तजिहु भजहु गुरुवर पद सरसिज
देहरु गेह सहित सुतदारा। गुरुपद पंकज में निरधारा ॥
आतम अरपन करहुँ मित्रभल। मानि महत गुरुगदित जु निरमल

नित प्रति अतिहित चित सुमति भजहु कृष्णचैतन्य।
दसधा दानीं स्वच्छ इमि जिमि सुर वृछसु धन्य ॥
श्रीव्रजभूपति सुबन श्री राधा चित वित जोय।
अचरज रहसि सरस यह लसत गौर वपु सोय ॥२३८॥

कुंवरि भाय करि अंगीकारा। तन दुति निज भूषण निरधारा।
नव गोविन्द चंद गिरिधारी। प्रगट अघट नदिया अवतारी ॥
धारि मनोरथ त्र मन भावन। सची कूख वर उदधि सुहावन ॥

उदित सु मुदित गौरवर चंदा। परिकर निकर संग सुख कंदा ॥
प्रगटि कृष्ण चैतन्य गौरवर। लायो घर घर प्रेमकौजु झर ॥
मन भावन प्रभुवर बिन बाधा। पूरन कीनौ निज मन साधा ॥
राधा प्राणनाथ पुनि जोई। रुदन करत किंहि हेत जु सोई ॥
यहै अटपटी रीतिसु कबहि न। समझि सकै अन रसिक भक्तबिन
साधन पुन नवधा निधि जोई। गुपतहि साधिहौंजु सिधि सोई ॥
मन वच क्रम जाचहुँ निरधारा। अन्य त्याग करि दैन्य अपारा ॥
कब हु न हिय धारहुँ क्यौंहू अन। हरि कीरंतन करहुँ बिमलमन॥
भोरैं ऊं नाहिन अन साधा। ईष्ट लहन बिन है सब बाधा ॥
है सुवटपरा यह संसारा कालसु फाँसी में निरधारा ॥
लेत वटोही जिय दै त्रासा। करऊं पुकार क्यौं न हरि दासा ॥
करि हरिजन संगत सुखकारी। प्रेमकथा रसरंग सुभारी ॥
नित विचरहु तिनही के पाछैं। नसैं विपद् गण अनगन आछैं ॥
स्त्री पुरुषरु बालक जु ज्ञान हत। मरि मरि जांहि भ्रात ए सतसत
सुन ऊं प्रीति भरि नीति जु तंता। निज खेमहि चिंतहु एकंता ॥
नहिन विषै हत मो सौ दूजा। करी न क्यौंहूँ हरि पद पूजा ॥
यह निहचें अब कीनौ मैं हूँ। नहि न त्राण मम प्रानहि क्यौं हूँ ॥
रामचन्द्र कवि भूपति भारी। तिहि सत संगति मम सुखकारी ॥
तिनके संग रंग बिन अहनिसि। मानत हौं सूनौं जु दसौं दिसि ॥
बहुरि जनम जौ होय सु ऐसैं। तिहि सत संगति मिलैं सु जैसैं ॥
भ्रात वात यह आन ऊं मन में। तब हि नरोतम धन्यजु तन में ॥
अपनी भजन रीति सुठि जोई। परम सुनीति पुनीति अति सोई ॥
सो न कहौं जित तित सचु पायैं। अतिहितचित राखहूँजु दुरायैं
जिन रूठहू कोऊं बलि जांहों। धर हू दोष जिनि पुनि हिय माँहीं॥
अहो संत तुम हौ मम ईसा। लै नायौ तुम्हरे पद सीसा।
श्रीचैतन्य परम सुखदांनी। मोहि कहाई कही सुबानी ॥
कहा कही पुन हे रस कंदा। जानत नाहिन भल अरु मंदा ॥२५३

लोकनाथ निजनाथ पद जिहि हिय विसद विलास।
प्रेमभक्ति रस चन्द्रिका रची नरोतमदास ॥२५४॥
प्रेम रूप रस भूप श्री सुखद नरोतमदास।
प्रेमभक्ति सुठि चन्द्रिका कीनी लै परकास ॥
सो वृन्दाबन चन्द्र जिन दास विदित जग जोय।
सुमरि नरोतम पद कमल अतिहित चित रस भोय ॥
भ्रमर कुंज रस पुंज मधि भान सुता के कूल।
नव राधा गोविंद जहँ जुग जुग जीवनि मूल ॥२५७॥
प्रेम भक्ति रस चन्द्रिका सुखद ग्रंथ जो आहि।
अति उमंग हिय रंग भरि रसिकन के हित ताहि ॥२५८॥
कीनी प्रेम प्रकासनी रचि सचि मति अनुरूप।
लेव हुँ चूक सुधारिकै रस कोविद कवि भूप ॥
सोरठा—अधिक त्रयोदस जानि संवत सतदस आठ महि।
पूरण ग्रंथ सु मानि पूरा विदित सित पंचमी ॥२६०॥

इति श्री वृन्दावनदास जी कृत प्रेमभक्ति-
चद्रिका भाषा संम्पूर्ण।

अथ माध्वगौड़ेश्वर गुरु परम्परा

नारायण के विधि भये तिनके नारद जान ।
तिनके वेद व्यास जू राचे महा पुरान ॥
तिनके मध्वाचार्य्य जू भाष्यकार निरधार ।
भक्ति तत्व अति सुदृढ़ किय मायाबाद कुठार ॥
पद्मनाभ तिनके भये नरहरि तिनके दास ।
तिनके माधव जानिये तिनके क्षोभ प्रकास ॥
जय तीरथ तिनके भये बानी परम पवित्र ।
कहि टीका विजयध्वजीं श्रीभागौत बिचित्र ॥
ज्ञानसिंधु तिनके भये तासु महानिधि धन्य ।
तिनके विद्यानिधि भये गुरु गोपाल अनन्य ॥
तिनके भये राजेन्द्र जू तिनके भये जय धर्म ।
तिनके पुरुषोत्तम भये भजन बिना नहिं कर्म्म ॥
तिनके भये ब्रह्मण्य जु तिनके तीरथ व्यास ।
तिनके लक्ष्मीपति भये माधवेन्द्र बिस्वास ॥
तिनके ईश्वरचन्दजू नीकी विधि करि सेव ।
जग सिक्षा हित जगतगुरु जिनहि कियो गुरुदेव ॥
महाप्रभू चैतन्य कौ प्रथमहि नीमानंद ।
नाम प्रगट पाछें चली परनाली निरद्वन्द ॥
प्रथम चलनि याकी कहूँ ब्रह्म सम्प्रदानाम ।
मध्वाचार्य्य पर्य्यन्त सब संतन कह्यौ गुनग्राम ॥

संप्रदायबोधनी में श्रीमनोहरदास जी

वति रसैश्वर्य्यपूर्णे नन्दपुत्रे परां भक्तिं प्रेमलक्षणां प्रतिलभ्य आशु शीघ्रं हृद्रोगरूपं कामं प्राकृतविषयं अपहिनोति दूरीकरोति । श्रीकृष्णेऽलौकिककामस्य विधेयत्वात् भक्तिप्रतिवन्धकस्य कामस्य सद्भावे तदनुपपत्तेः, यद्वा कामं यथेच्छं हृद्रोगं मत्सरमपहिनोति भक्तौ निर्मत्सराणामधिकारश्रवणात्तदुक्तं "धर्मः प्रोज्झित - कैतवोऽत्र परमो निर्मत्सराणां सतामिति" यद्वा कृष्णे भक्तिं प्रतिलभ्य श्रीकृष्णप्राप्तिजनितं हृद्रोगं हृत्तापमाशु अपहिनोति । पुनश्च प्राप्तेऽपि हृद्रोगे भक्तिवासनया धीरो भवति ॥ ४० ॥

इति श्रीमन्नारदावतार – श्रीव्रजाचार्य – श्रीनारायणभट्टगोस्वामिविरचितायां रसिकाह्लादिनीटीकायां दशमस्कन्धे रासविलासनिमगनं नाम त्रयत्रिंशोऽध्यायः ॥३३॥ इति समाप्ता । उच्चग्रामे श्रीमद्रेवतीरमणमन्दिरे भाद्रमासे तृतीयायां लिखितम् ।

❀ समाप्तं जातम् ❀

यह लिखा है श्री श्री १०८ श्रीमहाराज ने नीचे और पढ़ो -

हस्ताक्षर श्रीभट्टगोस्वामी श्रीमन्नारायणभट्टकुलोद्भूत "धवलेश्वर शर्मा" ।

:-※-: इस "रास पंचाध्यायी" को नकल कीनी :-※-:

---

१. श्रीकृष्णातिवशीकारचक्रोर्जिष्णुशिरोमणेः ।
प्रेम्णो हास इवायं श्रीरासः श्रीरपि नाप यत् ॥
चक्रवर्त्तिपादाः ।

२. जयत्यतुलमाधुर्य्यवर्षिणी विश्वहर्षिणी ।
लक्ष्मीसन्तर्पिणी रासक्रीडा गोपीप्रकर्षिणी ॥
आनन्दवृन्दावनचम्पूटीकाकारः ।

३. ब्रह्मादि-जयसंरूढ-दर्प-कन्दर्पदर्पहा ।
जयति श्रीपतिर्गोपीरासमण्डलमण्डनः ॥
स्वामीपादाः ।

४. परिस्फुरतु सुन्दरं चरित्रमत्र लक्ष्मीपते-
स्तथा भुवननन्दिनस्तदवतारवृन्दस्य च ।
हरेरपि चमत्कृतिप्रकरवर्द्धनः किन्तु मे
बिभर्त्ति हृदि विस्मयं कमपि रासलीलारसः ॥
स्तवमालायां (रासक्रीडागीतावल्याम्) ।

५. सन्ति यद्यपि मे प्राज्या लीलास्तास्ता मनोहराः ।
नहि जाने स्मृते रासे मनो मे कीदृशं भवेत् ॥
वृहद्वामने ।

६. निमज्जति निमज्जति प्रणयकेलिसिन्धौ मनो
बिघूर्णति विघूर्णति प्रमदचक्रकीर्णं शिरः ।
अहो किमिदमावयोः सपदि रासनामाक्षर-
द्वयी जनुषि निरबने श्रवणविथीमारोहति ॥
ललितमाधवे ।

७. रासो हि तस्य भगवत्त्वविशेषगोप्यः
सर्वस्वसारपरिपाकमयो व्यनक्ति ।
उत्कृष्टता–मधुरिमा–परसीमनिष्ठां
लक्ष्म्या मनोरथशतैरपि यो दुरापः ॥
वृहद्भागवतामृते ।

[ख]८. वंशी-संजल्पितमनुरतं राधयान्तर्द्धिकेलिः
प्रादुर्भूयासनमधिपटं प्रश्नकूटोत्तरञ्च ।
नृत्योल्लासः पुनरपि रहो क्रीडनं वारिखेला
कृष्णारण्ये बिहरणमिति श्रीमती रासलीला ॥
वैष्णवतोषण्याम् ।

९. तां ज्योत्स्नीं तच्च वृन्दाबिपिनमपि च तत्कुञ्जवृन्दं तथा ताः
शर्य्या द्वे द्वे च ते ते हरिहरिणदृशौ ताश्च सप्रेमलीलाः ।
पश्यन् पश्यन्मनो मे सपदि विषयितामुज्भदत्रानुमुह्य-
त्पश्यत् द्राग् याति तत्ताद्विषयवलयतां हन्त पश्यानि केन ॥

१०. मुखं शशिमुखीगणप्रचुरमोहसंरोहणं
दृशोर्युगममूदृशां मृगदृशां दृशां घूर्णनम् ।
तनुः सुतनुमण्डली-धृति-बिखण्डिनो श्रीहरे-
स्तदाजनि यदा जनिं मृगयते स्म रासोत्सवः ॥

११. मुखं विधुविमोहनं नयनमञ्जदृग्लोभनं
रुचिर्घनरुचीहितप्रथमसङ्गरङ्गप्रदा ।
रमारमणरामणीयर्कविभूषिरामावले—
स्तदाजनि यदा जनिं मृगयते स्म रासोत्सवः ॥

१२. नेता येषु तु रासकेलिषु भवेत्कृष्णः स्वयं नायिकाः
श्रीजैत्रव्रजसुभ्रुवो रसरथास्तत्रैव निर्लञ्छनाः ।
तत्ताद्वर्णनमेव काव्यविबुधाः कार्त्स्न्येन कुर्य्युः परं
किन्तु श्रीशुकसम्मतः नयदिदं पूर्येत तैः सेवकैः ॥

१३. दीपः शारदभूरिपूरितशशी यत्रास्तिबृन्दावनं
रङ्गः श्रीव्रजनायिकाः स्वयमिमा यूयं कलाकोविदाः ।
तं चेमं समयं समेत्यमुदितः सोऽयं हरिः किं परं
कर्त्तास्मि क्षणमन्तरा तमपि किं रासं बिना भोः प्रियाः ॥
गोपालचम्पूग्रन्थे ।

संग्रहिता कृष्णदासः

———